सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 66, नई दिल्ली, शुक्रवार 16 मई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

आदत किसी भी चीज की अच्छी नहीं होती, अति होने पर हमेशा कष्टदायक होती है।

03 आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रशिक्षण आपातकालीन तैयारियों की बढ़ती...
06 अंकों को अंतिम लक्ष्य ना बनाएं
08 लक्ष्मी बस चालक संघ 5 सूत्रीय मांगों को लेकर करेगा हड़ताल

"परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" अपने द्वितीय वार्षिकी समारोह में आपको आमंत्रित करता है

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर .एन .आई . द्वारा मान्यता प्राप्त आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से निष्पक्ष समाचार प्रदान करते हुए अपने 2 साल पूरे करने में सक्षम रहा। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

---- सम्मान समारोह -----

दिनांक 17 मई 2025,
स्थान :- कंस्टीट्यूशन क्लब आफ इंडिया, रफी मार्ग, नई दिल्ली,
समय :- प्रात 10 बजे से शाम 7 बजे तक,
मुख्य अतिथि "श्री शंभू सिंह", आई .ए .एस . सचिव
शिपिंग भारत सरकार (सेवा निवृत्त) शिपिंग मंत्रालय
आमंत्रित विशेष अतिथि
1. श्री चंद्रमोहन आईएएस सेवा निवृत
2. श्री अमर पाल सिंह जॉइंट कमिश्नर, भारत सरकार
3. श्री आर के भटनागर, आईएएस सेवा निवृत
4. साइकिलिस्ट योगेंद्र सिंह, परामर्शदाता
5. श्री एम के गिरी, अधिकृत वरिष्ठ अधिवक्ता उच्चतम न्यायालय भारत
6. श्री अनिल छिक्कारा, उपायुक्त परिवहन सेवा निवृत, परामर्शदाता
7. श्री महाराज सिंह, मोटर वाहन नियम/अधिनियम परामर्शदाता
8. श्री अजय शाह, सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
9. पायलट अनिल शर्मा सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
10. श्री प्रशांत चोपड़ा सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
11. श्री राजीव शरद सड़क सुरक्षा परामर्शदाता

12. डॉ भरत सिंह, शिक्षाविद् (प्रिंस इंस्टीट्यूट आफ इन्नोवेटिव टेक्नोलॉजी ग्रेटर नोएडा गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश)
13. श्री हेतराम
14. श्री अशोक
15. श्री राहुल गुप्ता
16. श्री ए ई कौशिक
17. श्री अशोक सक्सेना
18. श्री अशोक नारंग
19. श्री बरुड ठाकुर अधिवक्ता उच्चतम न्यायालय भारत
20. श्री नरेन्द्र

के साथ भारत देश में जनहित एवम् कल्याणकारी कार्यों में योगदान प्रदान करने वाले कार्यकर्ताओं/ संस्थाओं / ट्रस्ट को सम्मान प्रदान किया जाएगा।

'परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" के द्वितीय वार्षिकी समारोह में मुख्य रूप से

1. सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने,
2. दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य बनाने,
3. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
4. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
5. "दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य कैसे बनाया जा सकता है?"

पर परामर्शदाताओं के विचार आप को प्राप्त होगे। इसके साथ इस समारोह में

1. वक्ताओं को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े श्रेष्ठ एंकर, वीडियोग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योतिषाचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

- संजय कुमार बाटला
संपादक

दिल्ली-मेरठ नमो भारत कॉरिडोर पर आया अपडेट

बारापुला फ्लाईओवर पर स्थापित हुआ 200 टन का स्टील स्पैन

संजय बाटला

एनसीआरटीसी ने दिल्ली-मेरठ नमो भारत कॉरिडोर के लिए सराय काले खां स्टेशन को जंगपुरा स्टेबलिंग यार्ड से जोड़ने हेतु बारापुला फ्लाईओवर पर 200 टन का स्टील स्पैन स्थापित किया। इस कार्य को प्रशासन और ट्रैफिक पुलिस के सहयोग से पूरा किया गया। यह कॉरिडोर जून 2025 तक चालू होने की उम्मीद है जिससे दिल्ली और मेरठ के बीच कनेक्टिविटी बेहतर होगी।

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) ने दिल्ली-मेरठ नमो भारत कॉरिडोर पर सराय काले खां स्टेशन को जंगपुरा स्टेबलिंग यार्ड से जोड़ने के लिए बनाए जा रहे वायडक्ट के लिए बारापुला फ्लाईओवर पर 200 टन वजनी चार गार्डर्स वाले स्टील स्पैन को स्थापित कर दिया गया है।

एनसीआरटीसी की टीम ने इस प्रक्रिया को प्रशासन, लोक निर्माण विभाग और ट्रैफिक पुलिस के सहयोग से पूर्ण किया, जिसके लिए एनसीआरटीसी द्वारा सावधानीपूर्वक योजना बनाई गई और उत्कृष्ट समन्वय के साथ इस कार्य को पूर्ण किया गया।

कुछ ही दूरी पर जंगपुरा स्टेबलिंग यार्ड बनाया जा रहा

नमो भारत कॉरिडोर पर चलने वाली ट्रेनों को खड़ा करने के लिए सराय काले खां स्टेशन से कुछ ही दूरी पर जंगपुरा स्टेबलिंग यार्ड बनाया जा रहा है। इसके लिए सराय काले खां स्टेशन से वायडक्ट का निर्माण किया जा रहा है। नमो भारत कॉरिडोर के एलिवेटेड सेक्शन में वायाडक्ट के निर्माण के लिए एनसीआरटीसी आमतौर पर औसतन 34 मीटर की दूरी पर पिलर निर्माण करता है।

पिलर्स को जोड़ने के लिए स्पेशल स्पैन का उपयोग

हालांकि, कुछ जटिल क्षेत्रों में जहां कॉरिडोर नदियों, पुलों, रेलवे क्रासिंग, मेट्रो कॉरिडोर, एक्सप्रेस-वे या ऐसे अन्य मौजूदा ढांचों को पार कर रहा है, वहां पिलर्स के बीच इस दूरी को बनाए रखना व्यावहारिक रूप से संभव नहीं होता, इसलिए ऐसी जगहों पर पिलर्स के बीच की दूरी को आवश्यकतानुसार बढ़ाया जाता है और ऐसे क्षेत्रों में वायडक्ट निर्माण हेतु पिलर्स को जोड़ने के लिए स्पेशल स्पैन का उपयोग किया जाता है।

इस लोकेशन पर भूतल पर एक नाला बह रहा है, जिसके समानांतर बारापुला फ्लाईओवर स्थित है। यहां नमो भारत कॉरिडोर नाले और बारापुला फ्लाइओवर दोनों को एक ही जगह पर पार कर रहा है। इसी को पार करने के लिए चार गार्डर वाला स्टील स्पैन बनाया गया है।

इन स्टील गार्डर्स की लंबाई 40 मीटर (प्रत्येक) है और वजन 50 टन (प्रत्येक) है। इन चार स्टील गार्डर्स को दो स्टेज लिफ्टिंग प्रक्रिया के जरिए उच्च क्षमता वाली तीन क्रेन की मदद से स्थापित किया गया।

जून 2025 तक पूरे दिल्ली-मेरठ कॉरिडोर को चालू करने का लक्ष्य

एनसीआरटीसी का लक्ष्य है कि जून 2025 तक पूरे दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ कॉरिडोर को आम जनता के लिए संचालित कर दिया जाए। वर्तमान में न्यू अशोक नगर से मेरठ साउथ नमो भारत स्टेशन के बीच 55 किमी के खंड में 11 स्टेशनों पर नमो भारत ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है। कॉरिडोर पर दिल्ली में सराय काले खां और न्यू अशोक नगर के बीच का 4.5 किलोमीटर का हिस्सा महत्वपूर्ण सेक्शन है, जिसे अगले चरण में परिचालित करने के लिए तैयार किया जा रहा है। गत 13 अप्रैल से इस हिस्से में ट्रायल रन किए जा रहे हैं।

1 नवंबर से प्रस्तावित दिल्ली में BS-IV डीजल ट्रकों (जो दिल्ली से बाहर रजिस्टर्ड हैं) की आवाजाही पर प्रतिबंध के विषय में विस्तार से चर्चा की

प्रिय साथियों,

आज डॉ. हरीश सभरवाल, राष्ट्रीय अध्यक्ष - AIMTC, श्री भीम वाधवा, पूर्व अध्यक्ष, तथा अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने CAQM के मेंबर टेक्निकल श्री वीरेंद्र शर्मा एवं वरिष्ठ अधिकारियों से मुलाकात कर, 1 नवंबर से प्रस्तावित दिल्ली में BS-IV डीजल ट्रकों (जो दिल्ली से बाहर रजिस्टर्ड हैं) की आवाजाही पर प्रतिबंध के विषय में विस्तार से चर्चा की।

उन्होंने ने अधिकारियों को ट्रांसपोर्ट समुदाय की गहरी चिंता से अवगत कराया और इस निर्णय की न्यायसंगतता पर गंभीर प्रश्न उठाए, क्योंकि इससे न केवल व्यापार प्रभावित होगा, बल्कि हजारों परिवारों की आजीविका भी संकट में पड़ जाएगी। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने दृढ़ता और तर्क के साथ ट्रांसपोर्ट समुदाय का पक्ष पुरजोर तरीके से रखा और सर्वप्रथम CAQM को यह सूचित किया कि MoRTH द्वारा हमारे ट्रकों को 15वर्ष की लाइफ व परमिट प्रदान किया गया था,को की राज्य सरकार,NGT एवं कोर्ट के दिशा निर्देश से ट्रक की लाइफ 10साल कर दी गई, परंतु इस वर्तमान तुगलकी फरमान से तो 2020 -21मॉडल ट्रक भी बी 1.11.25 से यदि बैन कर दिए जाते हैं तो लाइफ केवल 5साल जी मिलती हैं,जिसमेग तो लोन उतारना भी मुश्किल से संभव हो पाएगा। तथा ये caqm का नोटिस अपने आप में govt की दी हुई लाइफ के भी खिलाफ है। अत इसे तुरंत प्रभाव से वापस लिया जाए।

दूसरा विकल्प ये है कि सरकार / वाहन निर्माता कंपनियां या तो प्रभावित वाहन मालिकों को वाहनों के नाचे हुए 5 वर्षों का मुआवज़ा प्रदान करें अथवा रियायती दरों पर रेट्रोफिटिंग किट उपलब्ध करवा कर इन वाहनों की सेवा अवधि बढ़ाई जाए।

CAQM ने आश्वस्त किया कि प्रस्तुत किए गए सभी बिंदुओं पर गंभीरता से विचार किया जाएगा। टीम AIMTC उपरोक्त मुद्दे को काफी गंभीरता से ले रही है और जो भी बन सकेगा इस पर कार्यवाही सुनिश्चित करेगी।

आज की बैठक में भाग लेने के लिए हमारे कार्यकारिणी सदस्य श्री रमेश मैनी, श्री तरलोचन सिंह, एवं श्री अमित अरोड़ा भी उपस्थित रहे।

सादर,
टीम AIMTC

गर्मी में पानी की कमी? अपनाएं ये 5 आसान घरेलू उपाय!

गर्मियों में ज्यादा पसीना निकलने से शरीर में पानी की कमी हो जाती है, जिससे थकान, सिरदर्द और चक्कर जैसी दिक्कतें होने लगती हैं। लेकिन घबराइए नहीं, ये 5 आसान और घरेलू उपाय अपनाकर आप खुद को हाइड्रेट रख सकते हैंः

1. नींबू-पानी पिएंः

रोज़ सुबह 1 गिलास गुनगुने पानी में आधा नींबू और थोड़ा सा काला नमक मिलाकर पिएं। इससे शरीर को ताज़गी और जरूरी इलेक्ट्रोलाइट्स मिलते हैं।

2. छाछ या लस्सी लेंः

दोपहर के खाने के बाद 1 गिलास छाछ या मीठी लस्सी पिएं। यह शरीर को ठंडक देती है और पाचन भी अच्छा रहता है।

3. नारियल पानी सबसे बेस्टः

हफ्ते में 3–4 बार नारियल पानी ज़रूर पिएं। यह नेचुरल इलेक्ट्रोलाइट्स से भरपूर होता है और शरीर को हाइड्रेट रखता है।

4. तरबूज और खीरा खाएंः

ये दोनों फल पानी से भरपूर होते हैं। दिन में 1 बार सलाद के रूप में जरूर लें।

5. बेल का शरबत पिएंः

बेल का शरबत शरीर की गर्मी शांत करता है और लू से बचाव करता है।

याद रखेंः

गर्मी में दिनभर में कम से कम 8–10 गिलास पानी ज़रूर पिएं। सादा पानी, नींबू पानी, फल, और प्राकृतिक शरबत आपकी बॉडी को ठंडा और हाइड्रेट रखते हैं।

संकष्ट चतुर्थी व्रत आज

चतुर्थी व्रत भगवान गणेश को समर्पित है। इस दिन जातक गणेश जी की विशेष पूजा अर्चना करते हैं। पंचांग के अनुसार हर मास में दो चतुर्थी आती हैं। एक शुक्ल पक्ष में और एक कृष्ण पक्ष में। हर महीने पड़ने वाली चतुर्थी तिथियों के अलग अलग नाम हैं, जिनमें से ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को एकदन्त संकष्टी चतुर्थी कहा जाता है।

एकदन्त संकष्टी चतुर्थी एकदन्त संकष्टी चतुर्थी ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को मनाई जाएगी।

एकदन्त संकष्टी चतुर्थी 16 मई 2025, शुक्रवार को पड़ रही है।

चतुर्थी तिथि का प्रारम्भ 16 मई 2025, शुक्रवार को प्रातः 04 बजकर 02 मिनट पर होगा ।

वहीं चतुर्थी तिथि का समापन 17 मई 2025, शनिवार को प्रातः 05 बजकर 13 मिनट पर होगा।

इस दिन चंद्रोदय रात 10 बजकर 34 मिनट पर होगा।

क्या है संकष्टी चतुर्थी? महत्त्व जानें संकष्टी चतुर्थी का व्रत प्रत्येक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को किया जाता है। बुद्धि एवं विवेक के देवता गणेश जी को समर्पित यह व्रत समस्त कष्टों को हरने वाला और धर्म, अर्थ, मोक्ष, विद्या, धन व आरोग्य प्रदान करने वाला है।

शास्त्रों में भी कहा गया है कि जब मन संकटों से घिरा महसूस करें, तो संकष्टी चतुर्थी का अद्भुत फल देने वाला व्रत करें, और भगवान गणपति को प्रसन्न कर मनचाहे फल की कामना करें।

क्यों मनाई जाती है संकष्टी चतुर्थी ? इस दिन गणेश भगवान की पूजा का विधान है। संकष्ट का अर्थ है कष्ट या विपत्ति। शास्त्रों के अनुसार संकष्टी चतुर्थी के दिन व्रत करने से सभी कष्टों से मुक्ति प्राप्त होती है। इस दिन माताएं गणेश चौथ का व्रत करके अपनी संतान की दीर्घायु और कष्टों के निवारण के लिए भगवान से प्रार्थना करती हैं।

संकष्टी चतुर्थी पूजा सामग्री रिद्धि सिद्धि और बुद्धि के देवता भगवान गणेश जी को प्रसन्न करने के लिए हर माह लम्बोदर संकष्टी चतुर्थी का व्रत और पूजन किया जाता है। ज्यादातर महिलाएं इस पूजा को अपनी संतान की सलामती और परिवार में सुख समृद्धि की कामना के साथ करती है।

संकष्टी चतुर्थी की पूजा में सम्पूर्ण और सटीक पूजा सामग्री का होना बहुत जरूरी है, क्योंकि इसी से आपकी पूजा सफल होगी। इसीलिए इस लेख में हम आपके लिए लेकर आए हैं संकष्टी चतुर्थी पूजा की सामग्री, जो कुछ इस प्रकार है -

चौकी
गणपति जी की प्रतिमा या तस्वीर
लाल वस्त्र
ताम्बे का कलश
गंगाजल मिश्रित जल
घी का दीपक
हल्दी- कुमकुम
अक्षत
चन्दन
मौली या जनेऊ
तिल
तिल-गुड़ के लड्डू
लाल फूल
दूर्वा
पुष्प माला
धुप
कर्पूर
दक्षिणा
-फल या नारियल

संकष्टी चतुर्थी व्रत न करने वाले लोग कैसे पाएं आशीर्वाद भगवान गणेश को प्रसन्न करने का सबसे पावन अवसर संकष्टी चतुर्थी आने वाली है और बप्पा के सभी भक्तों के लिए यह दिन किसी उत्सव के समान ही होता है। कई बार भाग दौड़ भरे इस जीवन में व्यस्तता, स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं और कई अन्य कारणों से इस मंगलकारी व्रत को विधि-विधान से कर पाना संभव नहीं हो पाता। लेकिन आप बिल्कुल भी चिंता न करें, हम आज आपको बताएंगे कि संकष्टी चतुर्थी पर व्रत न कर पाने वाले भक्त और किस प्रकार बप्पा का आशीष प्राप्त कर सकते हैं।

मंदिर में करें प्रार्थना अगर आप घर पर भी किसी भी प्रकार से पूजा करने में असमर्थ हैं तो आप निकटम गणेश जी के मंदिर में भी जाकर उनके सामने हाथ जोड़कर प्रार्थना कर सकते हैं। संभव हो पाए तो आप मंदिर में भी भोग और दक्षिणा चढ़ा सकते हैं। आप सच्चे मन से अगर प्रार्थना करेंगे तो गणपति जी अवश्य आप पर अपनी कृपादृष्टि बनाए रखेंगे।

ऊँ गं गणपतये नमः का करें जाप 'ऊँ गं गणपतये नमः' यह पवित्र मंत्र भी आपको भगवान गणेश जी की कृपा का भागीदार बना सकता है। आप चाहें तो इसके जाप अपने घर में पूजन स्थल पर कर सकते हैं या फिर किसी भी साफ जगह पर शांत मन से भगवान को सच्चे मन से याद करते हुए इस मंत्र का जाप 101 या 1001 बार सकते हैं।

नींबू की चाय जानिए बेशकीमती लाभ

सरल तरीका

नींबू की चाय बनाने के लिए आप गर्म पानी में बहुत कम चाय पत्ती डालें। उबालें, मिठास के लिए बहुत थोड़ी सी शक्कर भी डालें, पुदीना पत्ती, 2 काली मिर्च के दाने, 2 लौंग, अदरक कद्दूकस की हुई भी मिलाएं, इनसे स्वाद और सेहत दोनों मिलेंगे, अब एक कप में छान लीजिए, नींबू काटकर निचोड़े आप देखेंगे कि आपकी चाय का रंग बदल रहा है,इस रंगत को दोगुना करना है तो चुट्की भर पिंक सॉल्ट भी मिलाएं

नींबू की चाय का सेवन से आपके वजन को कंट्रोल करने में मदद करता है। यदि आप नींबू की चाय नियमित पीते हैं, तो आपको वजन नियंत्रित करने में भी मदद मिलेगी।

नींबू में विटामिन सी पाया जाता है, जो आपकी त्वचा के लिए फायदेमंद है। इसके नियमित सेवन से चेहरे पर चमक और मुंहासे की समस्या में राहत मिलती है।

नींबू की चाय में एंटीबैक्टीरियल और एंटीवायरल गुण पाए जाते हैं। इसके नियमित सेवन से बीमारियों के उपचार में मदद मिलती है।

नींबू की चाय पीने पर आपको सर्दी-जुकाम से राहत मिलती है, साथ ही यह प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ाती है।

ब्लड प्रेशर और डायबीटिज के लिए यह रामबाण दवा है अगर शकर न मिलाई जाए

यह चाय इम्यूनिटी बूस्टर है, मूड ठीक करती है और डिप्रेशन दूर करने में असरकारक है.

भगवान शंकर के विवाह प्रसंग का वर्णन गोस्वामी तुलसीदास ने बहुत सुंदर ढंग से किया है

हिमाचल वासियों ने अत्यंत सुंदर श्रृंगार कर स्वयं को भोले बाबा की बरात के लिए सज किया था। भोले बाबा की बरात अब मानो हिमवान के द्वार पर ही थी। किंतु इस बरात में एक और विचित्र बात यह थी कि इसमें दूल्हा बरात के आगे नहीं था।

हम कितने प्रेम व श्रद्धा से भगवान शंकर के विवाह प्रसंग को श्रवण कर रहे हैं। इतना उत्साह, उमंग व ऊर्जा का संचार था, कि उसे शब्दों में बांधा नहीं जा सकता था। गोस्वामी तुलसीदास जी भी कहते हैं-

''सिव समाज जब देखन लागे। बिडिर चले बाहन सब भागे''

हिमाचल वासियों ने अत्यंत सुंदर श्रृंगार कर स्वयं को भोले बाबा की बरात के लिए सज किया था। भोले बाबा की बरात अब मानो हिमवान के द्वार पर ही थी। किंतु इस बरात में एक और विचित्र बात यह थी कि इसमें दूल्हा बरात के आगे नहीं था। जैसा कि सब बरातों में दूल्हा ही बरात की अगुवाई करता है। क्योंकि बरात मंडली में, वही अग्रणी व सर्वश्रेष्ठ होता है। किंतु भोलेनाथ ऐसे अग्रणी हैं, कि वे आज स्वयं को पीछे रखकर चल रहे हैं। उन्हें है ही नहीं, कि वे किसी को पीछे करके स्वयं आगे चलें। हमारे मायावी जगत में लोगों की वृति देखें तो भगवान-शंकर से सर्वदा भिन्न है। हम दूल्हा हैं तो कन्या पक्ष वाले हमारी ऐसी आव-भक्त करते हैं, कि मानो हम दूल्हा न होकर स्वयं साक्षात भगवान हों। दूल्हे की सेवा में कहीं कोई त्रुटि रह जाए, तो दूल्हा एवं उसके पक्ष के लोग ऐसे क्रोधित हो जाते हैं, मानो पता नहीं उसका क्या छिन गया हो।

उधर हिमाचल वासी जब बरात का स्वागत करने के लिए आगे आए, तो सभी प्रसन्नता से गदगद हो गए। क्योंकि बरात के आरंभ में भगवान विष्णु सबके अग्रणी बनकर प्रस्तुत हुए। भगवान-विष्णु का सौन्दर्य व तेज ऐसा था कि पूरी हिमाचल नगरी की प्रसन्नता की कोई सीमा न रही-'अरे दूल्हा कितना सुंदर है। इतनी आभा व शोभा जिसका कोई आदि, अंत प्रतीत ही नहीं हो रहा। भला हो देवर्षि नारद जी का, जिन्होंने हमारी पार्वती के लिए, ऐसे सुंदर वर का चयन किया।

भगवान-विष्णु जी ने जब हिमाचल की इन सुंदर स्त्रियों के यह शब्द सुने तो वे मन ही मन मुस्कुराने लगे। और कहने लगे कि दूल्हे की सुंदरता तो इतनी है कि आप बस देखते के देखते ही रह जाओगे। हम वास्तव में दूल्हे नहीं हैं केवल बराती हैं। दूल्हे महाराज तो अभी पीछे आ रहे हैं।

हिमाचली कन्याओं को यह देखकर और भी चाव चढ़ गया कि जब बराती इतने सुंदर हैं, तो दूल्हा कितना सुंदर होगा। इसी उमंग में सबने भगवान विष्णु जी का बहुत अच्छे से सत्कार किया। और श्रेष्ठ जन उन्हें महल के भीतर लिवा ले गए। उसके पश्चात जो दल अगवानी के लिए पहुँचा उसके प्रमुख ब्रह्मा जी थे। वे भले ही वृद्ध थे, किन्तु उनकी दिव्यता भी कहीं पर कम न थी। वे मानो तेरहवें रत्न की भांति मूल्यवान व दुर्लभ प्रतीत हो रहे थे। सबने उनकी आयु देखकर एक दूसरे से कहा, कि यह श्रीमान दूल्हे तो प्रतीत नहीं हो रहे। किन्तु दूल्हा कितना सुंदर होगा इसकी पुष्टि अवश्य हो गई थी। हिम कन्याओं ने उनके सम्मान में भी कोई कमी नहीं छोड़ी और उन्हें पुष्प वर्षा करते हुए भीतरी कक्ष में ले गए।

जाते-जाते ब्रह्मा जी भी सोच रहे थे कि अब जिनके दर्शन इन्हें होने जा रहे हैं। क्या ये उनके दर्शन का करने का साहस कर पाएंगे? क्योंकि दूल्हे की जैसी कल्पना ये लोग कर रहे हैं,दूल्हा तो उससे पूर्णता विपरीत है। चलो अब क्या करें जो होगा हिमाचल वासी स्वयं ही देख लेंगे।

अब बारी थी भगवान शंकर जी के समूह की। और जैसे ही भगवान शंकर को उनके भयानक दल सहित हिमाचल वासियों ने देखा, तो सबका कलेजा मुँह को आ गया। बच्चो की तो छोड़िए बड़ों-बड़ों की चीखें निकल गईं। क्योंकि भगवान शंकर का भयक्रांत रुप देखकर मानो सबकी रूह कांप गई। किसी ने इस दृष्य की तो स्वपन में भी कल्पना नहीं की थी। भगवान भोलेनाथ के साथ-साथ उनके गणों ने भी सारी सीमाएं तोड़ दीं। वे तो इस शुभ घड़ी पर भी खोपड़ियों में रक्त भर-भर कर पी रहे थे। उन्हें कोई वास्ता था कि कन्याएं उनके समक्ष कोई मंगल गीत इत्यादि भी गा रही हैं। उन्हें तो समस्त स्तुतियां व मंगल गान व्यर्थ की ध्वनियां ही प्रतीत हो रहे थे। उल्टा वे तो निरंतर भांति-भांति की भयंकर डरावनी आवाजें निकाल रहे थे। ऐसा लग रहा था कि इस डरावने दल को देखकर, तो सूर्य ने भी अपना चेहरा ढंक लिया है। भगवान-शंकर भी मन ही मन सोचने लगे कि कमाल है, हमें पाने के लिए जिसने इतनी प्रगाढ़ तपस्या की, अनेकों परीक्षाएं से गुजरी, वह तो भीतर से कुछ नहीं बोली होंगी। और इन स्वागत कर्ताओं ने व्यर्थ का ही ऊधम मचा लिया हो।

कमाल की बात है, जीव एक तरफ तो प्रार्थनाएं करता है रहता है कि हे, प्रभु आप हमारे पास कब आएंगे, कब हमें अपने दर्शन देंगे? और आज हम इन सभी को दर्शन देकर, कृपा करने आए हैं तो सब भाग खड़े हुए। जब इनके जीवन की दौड़ रुकने वाली थी। इन्होंने उसी समय अपनी दौड़ शुरू कर दी। अब बताओ इनका कल्याण कैसे होगा? मैं यहाँ अकेला नहीं अपितु इतने ताम-झाम के साथ पहुँचा हूँ, लेकिन तब भी मुझे स्वीकार नहीं कर पाए? बताइए, जो जीव भगवान-से ही डर जाए उसे भला कहाँ चैन मिलेगा?

एकदंत संकष्टी चतुर्थी व्रत से जीवन होता है सुखमय

ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को एकदंत संकष्टी चतुर्थी मनाई जाती है, जो भगवान गणेश के अनेक रूपों में से एक 'एकदंत' को समर्पित होते हैं। इस दिन व्रत रखने वालों को जीवन की परेशानियों और विघ्नों से छुटकारा प्राप्त होता है।

एकदंत संकष्टी चतुर्थी का हिन्दू धर्म में खास महत्व है। संकष्टी चतुर्थी भगवान गणेश की पूजा के लिए शुभ दिन है। इस दिन गणेश जी की विशेष पूजा करने से जीवन में लाभ मिलता है तो आइए हम आपको एकदंत संकष्टी चतुर्थी व्रत का महत्व एवं पूजा विधि के बारे में बताते हैं।

जानें एकदंत संकष्टी चतुर्थी व्रत के बारे में

ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को एकदंत संकष्टी चतुर्थी मनाई जाती है, जो भगवान गणेश के अनेक रूपों में से एक 'एकदंत' को समर्पित होते हैं। इस दिन व्रत रखने वालों को जीवन की परेशानियों और विघ्नों से छुटकारा प्राप्त होता है। भगवान गणेश को विघ्नहर्ता माना जाता है और उनके एकदंत स्वरूप की पूजा विशेष रूप से इस दिन की जाती है। कई महिलाएं यह व्रत अपनी संतान की दीर्घायु और सुरक्षा के लिए रखती हैं, जबकि कुछ दंपत्ति इसे संतान प्राप्ति की इच्छा से भी करते हैं। इस साल एकदंत संकष्टी चतुर्थी 16 मई को मनाई जाएगी।

हिंदू धर्म में किसी भी शुभ या मांगलिक कार्य की शुरुआत करने से पहले देवों के देव महादेव और माता पार्वती के पुत्र भगवान गणेश की पूजा की जाती है। हर महीने के कृष्ण और शुक्ल पक्ष में चतुर्थी तिथि आती है। इसी तरह पंचांग के अनुसार, ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि पर एकदंत संकष्टी चतुर्थी मनाई जाती है। पंडितों के अनुसार इस दिन पूरे विधि-विधान के साथ बप्पा की पूजा करने और व्रत रखने से सभी बाधाओं से छुटकारा मिलता है और सुख-समृद्धि में वृद्धि होती है।

संकष्टी चतुर्थी एक मासिक उत्सव है, जिसे हर माह में आने वाली कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि पर मनाया जाता है। एकदंत संकष्टी चतुर्थी के दिन चंद्रमा का अर्घ्य देने के बाद व्रत का पारण किया जाता है। ऐसे में पंचांग के अनुसार, इस दिन पर चन्द्रोदय रात 10 बजकर 39 मिनट पर होगा।

एकदंत संकष्टी चतुर्थी व्रत के दौरान पूजा में चढ़ाएं ये चीजें

पंडितों के अनुसार एकदंत संकष्टी चतुर्थी की पूजा के दौरान आप गणेश जी को जनेऊ, चंदन, दूर्वा, अक्षत, धूप, दीप, फूल और फल अर्पित कर सकते हैं। इन सभी चीजों को अर्पित करने से गणेश जी प्रसन्न होते हैं और साधक की सभी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। इसी के साथ गणेश जी को हरे रंग का वस्त्र अर्पित करना भी काफी शुभ माना जाता है, क्योंकि गणपति जी को हरा रंग बेहद प्रिय है। आप एकदंत संकष्टी चतुर्थी के दिन गणेश जी को मोकद के साथ-साथ, लड्डूओं का भी भोग लगा सकते हैं, जो गणेश जी को प्रिय माने गए हैं। इसी के साथ आप संकष्टी चतुर्थी के दिन मालपुए का भोग भी लगा सकते हैं। मान्यता है कि मालपुए का भोग लगाने से बप्पा जल्दी प्रसन्न होते हैं और साधक को सुख-समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं।

एकदंत संकष्टी चतुर्थी व्रत में दूर्वा अर्पित करने का है खास महत्व

पंडितों के अनुसार एकदंत संकष्टी चतुर्थी की पूजा में गणेश जी को दूर्वा जरूर अर्पित करें। इसके लिए दूर्वा को सबसे पहले साफ पानी से धो लें, इसके बाद दूर्वा का जोड़ा बनाकर गणेश जी को 21 दूर्वा अर्पित करें। ध्यान रखें कि दूर्वा किसी मंदिर, बगीचे या साफ स्थान पर उगी हुई होनी चाहिए। कभी भी गंदे स्थान या गंदे पानी में उगी हुई दुर्वा बप्पा को न चढ़ाएं। आप दूर्वा अर्पित करते समय इस दौरान इस मंत्र का भी जप कर सकते हैं।

एकदंत संकष्टी चतुर्थी के दिन ऐसे करें पूजा

पंडितों के अनुसार एकदंत संकष्टी चतुर्थी का हिन्दू धर्म में खास महत्व है, इसलिए इस दिन भगवान गणेश जी का जलाभिषेक करें। गणेश भगवान को पुष्प, फल चढ़ाएं और पीला चंदन लगाएं। तिल या बूंदी के लड्डू का भोग लगाएं। एकदन्त संकष्टी चतुर्थी कथा का पाठ करें। ॐ गं गणपतये नमः मंत्र का जाप करें। पूरी श्रद्धा के साथ गणेश जी की आरती करें।

एकदंत संकष्टी चतुर्थी से जुड़ी पौराणिक कथा

पौराणिक कथा के अनुसार, विष्णु भगवान का विवाह लक्ष्मीजी के साथ निश्चित हो गया। विवाह की तैयारी होने लगी, सभी देवताओं को निमंत्रण भेजे गए, परंतु गणेशजी को निमंत्रण नहीं दिया, कारण जो भी रहा हो। अब भगवान विष्णु की बारात जाने का समय आ गया। सभी देवता अपनी पत्नियों के साथ विवाह समारोह में आए। उन सबने देखा कि गणेशजी कहीं दिखाई नहीं दे रहे हैं। तब वे आपस में चर्चा करने लगे कि क्या गणेशजी को न्योता नहीं है? या स्वयं गणेशजी ही नहीं आए हैं? सभी को इस बात पर आश्चर्य होने लगा। तभी सबने विचार किया कि विष्णु भगवान से ही इसका कारण पूछा जाए।

विष्णु भगवान से पूछने पर उन्होंने कहा कि हमने गणेशजी के पिता भोलेनाथ महादेव को न्योता भेजा है। यदि गणेशजी अपने पिता के साथ आना चाहते तो आ जाते, अलग से न्योता देने की कोई आवश्यकता भी नहीं थीं। दूसरी बात यह है कि उनको सवा मन मूंग, सवा मन चावल, सवा मन घी और सवा मन लड्डू का भोजन दिनभर में चाहिए। यदि गणेशजी नहीं आएंगे तो कोई बात नहीं। दूसरे के घर जाकर इतना सारा खाना-पीना अच्छा भी नहीं

लगता है।

इतनी वार्ता कर ही रहे थे कि किसी एक ने सुझाव दिया- यदि गणेशजी आ भी जाएं तो उनको द्वारपाल बनाकर बैठा देंगे कि आप घर का ध्यान रखना। आप तो चूहे पर बैठकर धीरे-धीरे चलोगे तो बारात से बहुत पीछे रह जाओगे। यह सुझाव भी सबको पसंद आ गया, तो विष्णु भगवान ने भी अपनी सहमति दे दी। इतने में गणेशजी वहां आ पहुंचे और उन्हें समझा-बुझाकर घर की रखवाली करने बैठा दिया। बारात चल दी, तब नारदजी ने देखा कि गणेशजी तो दरवाजे पर ही बैठे हुए हैं, तो वे गणेशजी के पास गए और रुकने का कारण पूछा। गणेशजी कहने लगे कि विष्णु भगवान ने मेरा बहुत अपमान किया है. नारदजी ने कहा कि आप अपनी मूषक सेना को आगे भेज दें, तो वह रास्ता खोद देगी जिससे उनके वाहन धरती में धंस जाएंगे, तब आपको सम्मानपूर्वक बुलाना पड़ेगा।

अब तो गणेशजी ने अपनी मूषक सेना जल्दी से आगे भेज दी और सेना ने जमीन पोली कर दी। जब बारात वहां से निकली तो रथों के पहिए धरती में धंस गए। लाख कोशिश करें, परंतु पहिए नहीं निकले. सभी ने अपने-अपने उपाय किए, परंतु पहिए तो नहीं निकले, बल्कि जगह-जगह से टूट गए. किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या किया जाए। तब तो नारदजी ने कहा कि आप लोगों ने गणेशजी का अपमान करके अच्छा नहीं किया। यदि उन्हें मनाकर लाया जाए तो आपका कार्य सिद्ध हो सकता है और यह संकट टल सकता है। शंकर भगवान ने अपने दूत नंदी को भेजा और वे गणेशजी को लेकर आए। गणेशजी का आदर-सम्मान के साथ पूजन किया, तब कहीं रथ के पहिए निकले। अब रथ के पहिए निकल तो गए, परंतु वे टूट-फूट गए, तो उन्हें सुधारे कौन?

पास के खेत में खाती काम कर रहा था, उसे बुलाया गया. खाती अपना कार्य करने के पहले श्री गणेशाय नमः कहकर गणेशजी की वंदना मन ही मन करने लगा। देखते ही देखते खाती ने सभी पहियों को ठीक कर दिया। तब खाती कहने लगा कि हे देवताओं! आपने सर्वप्रथम गणेशजी को नहीं मनाया होगा और न ही उनकी पूजन की होगी इसीलिए तो आपके साथ यह संकट आया है. हम तो मूरख अज्ञानी हैं, फिर भी पहले गणेशजी को पूजते हैं, उनका ध्यान करते हैं। आप लोग तो देवतागण हैं, फिर भी आप गणेशजी को कैसे भूल गए? अब आप लोग भगवान श्री गणेशजी की जय बोलकर जाएं, तो आपके सब काम बन जाएंगे और कोई संकट भी नहीं आएगा। ऐसा कहते हुए बारात वहां से चल दी और विष्णु भगवान का लक्ष्मीजी के साथ विवाह संपन्न कराके सभी सकुशल घर लौट आए।

एकदंत संकष्टी चतुर्थी का शुभ मुहूर्त

पंचांग के अनुसार, ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि की शुरुआत 16 मई को सुबह 04 बजकर 02 मिनट पर होगा और इसका समापन 17 मई को सुबह 05 बजकर 13 मिनट होगा। इस प्रकार से एकदंत संकष्टी चतुर्थी का पर्व 16 मई को मनाया जाएगा।

एकदंत संकष्टी चतुर्थी व्रत का महत्व

पौराणिक कथा के अनुसार, भगवान परशुराम ने अपने परशु से गणेश पर प्रहार किया था, जिससे उनका एक दांत टूट गया था इसलिए गणपति एकदंत कहा जाता है। एकदंत का अर्थ होता है एक दांत वाला। एकदंत संकष्टी चतुर्थी व्रत पर पूजा और व्रत करने से सारे संकट दूर होते हैं। माताएं इस दिन व्रत रखकर संतान की लंबी आयु और घर की सुख-समृद्धि की कामना करती हैं और इस संकष्टी व्रत से सभी मनोकामनाएं भी पूरी होती हैं।

दिल्ली एयरपोर्ट पर विमानों का संचालन अस्त-व्यस्त, कई उड़ानें रद; यात्री परेशान

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उड़ानों का संचालन गुरुवार को भी प्रभावित रहा। 53 उड़ानों में विलंब हुआ और 24 उड़ानें रद्द कर दी गईं। रद्द उड़ानों में जोधपुर चंडीगढ़ और श्रीनगर जैसे शहर शामिल हैं। यात्रियों को सलाह दी गई है कि वे एयरलाइन या एयरपोर्ट की वेबसाइट से अपनी उड़ान की स्थिति जांच लें।

इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय (आईजीआई) एयरपोर्ट पर बृहस्पतिवार को भी उड़ानों का संचालन प्रभावित रहा। नतीजन अंतरराष्ट्रीय और घरेलू दोनों स्तर पर कई उड़ानें रद हुईं व उड़ानों में देरी भी दर्ज की गई। हालांकि काफी दिनों के बाद लेह, श्रीनगर आदि शहरों के लिए उड़ानों का आवागमन दोबारा शुरू हुआ, लेकिन कुछ उड़ानें अभी भी रद रहीं।

बृहस्पतिवार को 17 उड़ानें देरी से रवाना हुईं, जबकि बैंकाक जाने वाली एक उड़ान को रद कर दिया गया। आगमन की बात करें तो पांच उड़ानें देरी से पहुंचीं और दुबई से आने वाली एक उड़ान रद रही। घरेलू उड़ानों की स्थिति पर बात की जाए तो यहां से प्रस्थान करने वाली 31 उड़ानें देरी से उड़ीं, जबकि 21 उड़ानें बीते दिनों की तरह रद कर दी गईं।

इन शहरों के लिए रद की गई उड़ानें

रद उड़ानों में जोधपुर, चंडीगढ़, अमृतसर, भुज, देहरादून, मुंबई, नागपुर, श्रीनगर, भोपाल और कोलकाता जैसे प्रमुख शहरों की उड़ानें शामिल रहीं। वहीं, घरेलू आगमन में राहत की बात रही कि किसी उड़ान में देरी नहीं हुई, लेकिन लेह से आने वाली एक उड़ान रद रही। बाकी उड़ानें सामान्य रूप से पहुंचीं।

एयरपोर्ट प्रबंधन की ओर से यात्रियों से अपील की जा रही है कि वे अपनी उड़ान की स्थिति की जानकारी एयरलाइंस या एयरपोर्ट की वेबसाइट से पहले ही ले लें और समय से पहले एयरपोर्ट पहुंचें।

दिल्ली विश्वविद्यालय में छात्रों की सुरक्षा के लिए लगेंगे सीसीटीवी कैमरे, छात्र और शिक्षकों की लंबे समय से थी मांग

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्राओं की सुरक्षा को देखते हुए परिसरों और कॉलेजों में सीसीटीवी कैमरे लगाने जा रहा है। लंबे समय से लंबित यह प्रक्रिया शुरू हो गई है टेंडर भी पूरा हो चुका है। शिक्षक संगठन और छात्र संघ लगातार कैमरे लगाने की मांग कर रहे थे। सांध्यकालीन कक्षाओं और प्रयोगशालाओं के समय को लेकर भी चिंता जताई गई है।

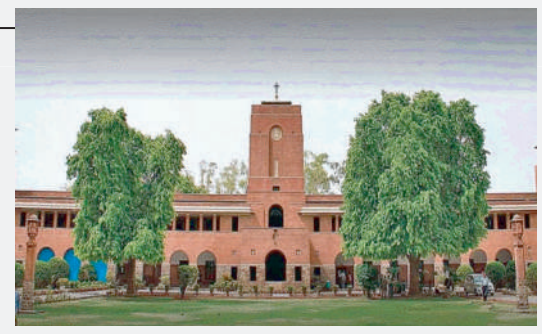

नई दिल्ली। छात्राओं की सुरक्षा को देखते हुए छात्र संगठन व शिक्षक लगातार दिल्ली विश्वविद्यालय के परिसरों व कॉलेजों में सीसीटीवी कैमरे लगाने की मांग करते रहे हैं। छात्र संघ की ओर से विश्वविद्यालय प्रशासन को आपत्ति दर्ज कराई जाती रही है।

दूसरी ओर, शिक्षक भी कैमरे लगाने के लिए पत्र लिखते रहे हैं। डीयू की ओर से लंबे वक्त से लंबित चल रहा सीसीटीवी कैमरे लगाने का काम शुरू हो गया है। टेंडर प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। जल्द परिसरों में कैमरे लग जाएंगे। हालांकि, इनकी संख्या को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं हो सकी है।

पिछले दिनों फोरम ऑफ एकेडेमिक्स फॉर सोशल जस्टिस (शिक्षक संगठन) ने कुलपति प्रो. योगेश सिंह को पत्र लिखकर महिला शिक्षिकाओं व छात्राओं की सुरक्षा को देखते हुए उत्तरी परिसर के कॉलेजों- विभागों व शिक्षण संस्थानों के आसपास सीसीटीवी कैमरे लगाए जाने की मांग की। उन्होंने पत्र में लिखा है कि सांध्यकालीन कॉलेजों में लगने वाली कक्षाएं देर रात तक चलती हैं।

इनका समय शाम सात बजे तक ही रखा जाए। प्रयोगशाला में प्रयोग करने वाली छात्राएं और शोधार्थी छात्राओं की सुरक्षा के मद्देनजर इनका भी समय सात बजे तक रखा जाए। फोरम के चेयरमैन डा. हंसराज सुमन ने राजधानी दिल्ली में महिलाओं के साथ घट रही अप्रिय घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए सीसीटीवी कैमरे और सुरक्षा व्यवस्था बढ़ाने की मांग की थी।

उन्होंने कहा, फेस्ट और छात्र संघ चुनावों के दौरान बाहरी लोग कॉलेजों में प्रवेश करते हैं। उनकी पहचान के लिए कैमरे लगना जरूरी हैं। उन्होंने बताया कि आठ मई 2023 को महिला सुरक्षा पर एक समिति का गठन किया गया था। डीयू ने हाल ही में अंक सुधार नीति के कार्यान्वयन पर जारी दिशा-निर्देशों में यह स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि छात्रों की कक्षाएं शाम छह बजे से आठ बजे तक या शनिवार और रविवार को निर्धारित की जाएंगी।

इसलिए फोरम महिलाओं की सुरक्षा को लेकर विशेष चिंतित है। डूसू सचिव मित्रविंदा ने कहा, हमने भी लगातार सीसीटीवी कैमरे लगाने की मांग की है। लगातार विश्वविद्यालय प्रशासन को ज्ञापन सौंपते रहे हैं। डीयू के मुख्य अभियंता अशोक सैनी ने कहा, कैमरे लगाने की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। कितने कैमरे लगेंगे संख्या की जानकारी उन्हें नहीं है।

आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रशिक्षण आपातकालीन तैयारियों की बढ़ती आवश्यकता के बीच

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली के सेंट जॉन एम्बुलेंस ब्रिगेड ने इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के पुलिस उपायुक्त के अनुरोध पर 14 मई, 2025 को एक विशेष प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया। यह पहल आपातकालीन तैयारियों की बढ़ती आवश्यकता के प्रति एक सक्रिय प्रतिक्रिया थी, जिसमें जीवन रक्षक परिदृश्यों में तत्काल कार्रवाई की महत्वपूर्ण भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया गया। कार्यशाला ने उन्नत तत्काल प्रतिक्रिया तकनीकों पर 50 पुलिस कर्मियों को प्रभावी ढंग से प्रशिक्षित किया। इसमें आवश्यक प्राथमिक चिकित्सा प्रथाओं पर एक व्यापक पाठ्यक्रम शामिल था, जिसका उद्देश्य प्रतिभागियों को आपात स्थिति का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करने के कौशल से लैस करना था। प्रशिक्षण में घाव की देखभाल, स्थिरीकरण तकनीकों के माध्यम से फ्रैक्चर के प्रबंधन और उन्नत रक्तस्राव नियंत्रण पर गहन निर्देश शामिल थे। प्रतिभागियों ने कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन (सीपीआर) और ऑटोमेटेड एक्सटर्नल डिफिब्रिलेटर (एईडी) के उपयोग सहित महत्वपूर्ण जीवन रक्षक पद्धतियों के व्यावहारिक अनुप्रयोगों में सक्रिय रूप से भाग लिया। सत्र में बाद में चिकित्सा देखभाल के लिए विभिन्न प्रकार के हताहतों को उचित रूप से प्राथमिकता देने के महत्व पर भी जोर दिया गया, जिससे उच्च दबाव की स्थितियों में समन्वित प्रतिक्रियाओं के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण को बढ़ावा मिला। इस सत्र का नेतृत्व दिल्ली ब्रिगेड के वरिष्ठ प्रशिक्षक डॉ. बिजेंद्र सिंह ने कुशलतापूर्वक किया।

2. 11 मई, 2025 को, दिल्ली में सेंट जॉन एम्बुलेंस ब्रिगेड ने आरोग्य भारती संगठन के सदस्यों के साथ मिलकर दिल्ली विश्वविद्यालय के जाकिर हुसैन कॉलेज ऑडिटोरियम में मेडिकल और पैरामेडिकल पेशेवरों के कौशल को बढ़ाने के उद्देश्य से एक रचनात्मक कार्यक्रम आयोजित किया। 177 प्रतिभागियों को आकर्षित करते हुए, सत्र में आपात स्थिति में प्राथमिक चिकित्सा की आवश्यक भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसमें इमारत के ढहने पर प्रभावी प्रतिक्रिया और अच्छी तरह से तैयार उत्तरजीविता किट का महत्व शामिल था। प्रतिभागियों ने प्राथमिक चिकित्सा किट की महत्वपूर्ण सामग्री और आपात स्थिति या आपदाओं के दौरान उठाए जाने वाले व्यावहारिक कदमों के बारे में भी सीखा, जिसमें जीवन बचाने में उचित प्रशिक्षण के गहन प्रभाव पर प्रकाश डाला गया। दिल्ली में सेंट जॉन एम्बुलेंस ब्रिगेड के अतिरिक्त आयुक्त डॉ. पी. के. राणा ने सत्र का नेतृत्व किया, जिसमें उन्होंने बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान की और सभी उपस्थित लोगों के लिए एक आकर्षक और सहयोगी सीखने के माहौल को बढ़ावा दिया।

क्रॉम्पटन ने एम.ई.डी.ए से सौर जल पंप ऑर्डर के साथ हरित ऊर्जा के प्रति प्रतिबद्धता को मजबूत किया

महज 2% हिस्से से फैलता है 80% जहर, अब 32 मॉनीटरिंग स्टेशनों से रखी जाएगी यमुना के प्रदूषण पर नजर

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली सरकार यमुना और नालों के किनारे 32 रियलटाइम जल निगरानी स्टेशन स्थापित करेगी। इसका उद्देश्य नदी में प्रदूषण के स्तर पर नज़र रखना है। इन ऑनलाइन स्टेशनों से जल गुणवत्ता डेटा लगातार डीपीसीसी सर्वर पर भेजा जाएगा।

नई दिल्ली, दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (DPCC) यमुना और उसके प्रमुख नालों के किनारे 32 Realtime Water Quality Monitoring Station स्थापित करेगी। इससे नदी में प्रदूषकों के स्तर पर नजर रखी जा सकेगी।

अधिकारियों ने बताया कि ऑनलाइन निगरानी स्टेशन (OLMS) को डीपीसीसी सर्वर पर चौबीसों घंटे जल गुणवत्ता डेटा की निरंतर निगरानी और संचारण के लिए डिजाइन किया गया है।

डेटा साल के अंत तक उपलब्ध होने की उम्मीद है। एक अधिकारी ने कहा कि वायु गुणवत्ता निगरानी प्रणाली के समान इस पहल पर लगभग 22 करोड़ रुपये खर्च होंगे।

इन बिदुओं की निगरानी रखेगा मॉनीटरिंग स्टेशन

पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने कहा कि ओएलएमएस जैविक ऑक्सीजन मांग (बीओडी), रासायनिक ऑक्सीजन मांग (सीओडी), कुल निलंबित ठोस (टीएसएस), कुल नाइट्रोजन (नाइट्रेट और नाइट्रेट के रूप में), कुल फास्फोरस और अमोनिया जैसे मापदंडों की निगरानी करेगा।

याद रहे कि सरकार ने पिछले साल यमुना के किनारे 14 और विभिन्न नालों पर 18 स्टेशन स्थापित करने की प्रक्रिया शुरू की थी। सिरसा ने कहा कि इनके साल के अंत तक यह शुरू हो जाने की उम्मीद है। परियोजना के लिए निविदाएं पहले ही जारी की जा चुकी हैं।

पड़ोसी राज्यों के नालों पर बनाए जाएंगे मॉनीटरिंग स्टेशन

एक अधिकारी ने कहा, इससे विभिन्न नदी और नालों के स्थानों पर पानी की गुणवत्ता पर वास्तविक समय के आंकड़े प्राप्त करने में मदद मिलेगी। इससे प्रदूषण के स्तर में वृद्धि के सटीक समय और स्थान की पहचान करना आसान हो जाएगा।

ओएलएमएस के लिए प्रस्तावित स्थानों में पल्ला, आईएसबीटी ब्रिज, आईटीओ ब्रिज, निजामुद्दीन ब्रिज, ओखला बैराज, नजफगढ़ ड्रेन, मेटकाफ हाउस ड्रेन, खैबर पास ड्रेन और स्वीपर कॉलोनी ड्रेन आदि शामिल हैं।

पड़ोसी राज्यों से प्रदूषक लाने वाले नालों पर भी स्टेशन स्थापित किए जाएंगे, जैसे कि सिंघू बार्डर (सोनीपत) पर डीडी6, बहादुरगढ़ ड्रेन और शाहदरा, साहिबाबाद और बंठिया ड्रेन में मिलने वाले उत्तर प्रदेश के ड्रेन।

अधिकारियों ने बताया कि चयनित एजेंसी इलेक्ट्रो-मैग्नेटिक मॉनीटरिंग उपकरण की स्थापना और उसे चालू करने के लिए जिम्मेदार होगी।

यमुना का महज दो प्रतिशत हिस्सा ही करता है 80 प्रतिशत प्रदूषण

सरकारी आंकड़ों के अनुसार, वजीराबाद और ओखला के बीच यमुना का 22 किलोमीटर लंबा हिस्सा, जो नदी की कुल लंबाई का केवल दो प्रतिशत है, इसके प्रदूषण भार में लगभग 80 प्रतिशत का योगदान देता है।

इस प्रदूषण का प्राथमिक स्रोत अनाधिकृत कालोनियों और मलिन बस्तियों से निकलने वाला अनुपचारित अपशिष्ट जल है, साथ ही सीवेज उपचार संयंत्रों (STP) और सामान्य अपशिष्ट उपचार संयंत्रों (CETP) से निकलने वाला खराब तरीके से उपचारित अपशिष्ट भी है।

गृह मंत्री अमित शाह ने दिल्ली एम्स के ट्रामा सेंटर में छत्तीसगढ़ के बीजापुर में माओवादियों से मुठभेड़ में घायल हुए सीआरपीएफ जवानों से मुलाकात की। उन्होंने जवानों का हाल-चाल जाना और डॉक्टरों को बेहतर इलाज के निर्देश दिए। सुरक्षा बलों ने करेंगुट्टा हिल के पास 31 माओवादियों को मार गिराया है जिसमें कई जवान घायल हुए। दिल्ली एम्स के ट्रामा सेंटर में सीआरपीएफ के पांच जवान भर्ती है

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बृहस्पतिवार को एम्स ट्रामा सेंटर पहुंचकर छत्तीसगढ़ के बीजापुर और तेलंगाना की सीमा के नजदीक करेंगुट्टा हिल के नजदीक माओवादियों के साथ मुठभेड़ में घायल हुए सीआरपीएफ के जवानों से मिले और उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली।

उन्होंने एम्स ट्रामा सेंटर प्रशासन को उनके बेहतर इलाज और देखभाल का निर्देश दिया। बाद में उन्होंने एक्स पर पोस्ट कर कहा कि सुरक्षा बल अपनी वीरता से माओवाद का नामोनिशान मिटा रहे हैं। देश को अपने जवानों पर भरोसा है और पूरा देश उन पर गर्व करता है।

सर्च ऑपरेशन में 31 माओवादियों को मार गिराया

सुरक्षा बलों ने करेंगुट्टा हिल के पास 21 दिन तक चले इस सर्च ऑपरेशन में 31 माओवादियों को मार गिराया है। इस ऑपरेशन में सीआरपीएफ के कोबरा (कमांडो बटालियन फार रेजोल्यूट एक्शन), स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) और डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड (डीआरएफ) के जवान शामिल रहे। इस अभियान के दौरान 18 जवान आईईडी विस्फोट में घायल हुए। उन सभी का विभिन्न अस्पतालों में इलाज चल रहा है। वे सभी खतरे से बाहर बताए जा रहे हैं।

ट्रामा सेंटर में सीआरपीएफ के पांच जवान भर्ती

एम्स के एक डॉक्टर ने बताया कि ट्रामा सेंटर में सीआरपीएफ के पांच जवान भर्ती किए गए हैं, जो एयर लिफ्ट करके लाए गए हैं। उन सभी की हालत स्थिर है। विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम उनका इलाज कर रही है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने उन सभी मुलाकात की। इस दौरान उनके परिजनों से भी मिले।

करेंगुट्टा हिल के पास मुठभेड़ के दौरान घायल हुए सीआरपीएफ के 204 कोबरा बटालियन के सहायक कमांडेंट सागर बोराडे को चार मई को रायपुर से एयर लिफ्ट करके दिल्ली लाया गया था और उन्हें एम्स ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया गया था।

संक्रमण से बचाव के लिए उन्हें बायें पैर का हिस्सा गंवाना पड़ा

उन्होंने सर्च ऑपरेशन के दौरा अदम्य साहस का परिचय देते हुए आईईडी विस्फोट में घायल सीआरपीएफ के एक जवान को अपनी सुरक्षा का परवाह किए बगैर सुरक्षित निकालने का प्रयास किया। इस दौरान एक आईईडी ब्लास्ट होने से वह घायल हो गए। इस वजह से उनका बायां पैर क्षतिग्रस्त हो गया था और बायें हाथ में भी गंभीर चोट लगी थी। संक्रमण से बचाव के लिए उन्हें बायें पैर का हिस्सा गंवाना पड़ा है।

व्यापारियों की समस्याओं के समाधान के लिए दिल्ली सरकार बनाएगी ट्रेड वेलफेयर बोर्ड, 2026 में होगा ग्लोबल इन्वेस्टर समिट: रेखा गुप्ता

परिवहन विशेष न्यूज

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने उद्योग विभाग के साथ बैठक में व्यापारियों के कल्याण के लिए ट्रेड वेलफेयर बोर्ड बनाने का निर्देश दिया। यह बोर्ड व्यापारियों की समस्याओं का तुरंत समाधान करेगा और उनके लिए योजनाएं भी लागू करेगा। दिल्ली सरकार जनवरी-फरवरी 2026 में ग्लोबल इन्वेस्टर समिट का आयोजन भी करेगी।

नईदिल्ली, मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने बृहस्पतिवार को उद्योग विभाग के अधिकारियों साथ एक समीक्षा बैठक की। इस बैठक में दिल्ली को वैश्विक निवेश और अत्याधुनिक तकनीकों का केंद्र बनाने के लिए निर्णय लिए गए।

मुख्यमंत्री ने बताया कि बैठक में व्यापारियों व उद्योगपतियों की जरूरतों, भविष्य की संभावनाओं और सरकार की योजनाओं को लेकर विचार-विमर्श किया गया। उद्योग मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा भी मौजूद थे।

मुख्यमंत्री ने बताया कि दिल्ली में व्यापारियों के कल्याण के लिए एक ट्रेड वेलफेयर बोर्ड का जल्द गठन किया जाएगा। जो व्यापारियों की समस्याओं का त्वरित समाधान करेगा और कल्याणकारी योजनाएं लागू करेगा।

बोर्ड व्यापारियों की समस्याएं एवं सुझाव सरकार तक पहुंचाएगा

इसके अतिरिक्त यह बोर्ड व्यापारिक समुदाय के सुझावों और समस्याओं को सीधे सरकार तक पहुंचाने और उनके समाधान सुनिश्चित करने का काम करेगा।साथ ही स्टार्ट अप के लिए नई नीति बनाई जाएगी।

बैठक में मुख्यमंत्री ने नई औद्योगिक नीति और न्यू वेयरहाउस पॉलिसी को जल्द लाने के निर्देश दिए। कहा कि इन नीतियों का उद्देश्य दिल्ली में औद्योगिक गतिविधियों को बढ़ावा देना, लॉजिस्टिक्स को सुधारना और निवेश के लिए अनुकूल माहौल बनाना है।

रानीखेड़ा औद्योगिक क्षेत्र हाईटेक हब के रूप में होगा विकसित

मुख्यमंत्री ने बताया कि रानीखेड़ा औद्योगिक क्षेत्र को एक हाईटेक हब के रूप में विकसित किया जाएगा। इस हब में विभिन्न प्रकार के उद्योगों के लिए आधुनिक बुनियादी ढांचा और व्यापार के लिए अनुकूल माहौल उपलब्ध होंगे।

यह परियोजना दिल्ली में औद्योगिक विकास को नई दिशा देगी और रोजगार सृजन को बढ़ावा देगी। इसके साथ ही पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास को ध्यान में रखते हुए, दिल्ली सरकार होलम्भी कला के 21 एकड़ में ई-वेस्ट इको पार्क स्थापित करेगी।

यह पार्क इलेक्ट्रॉनिक कचरे की Recycling के लिए एक मॉडल के रूप में काम करेगा और साथ ही इसमें टेस्टिंग और ट्रेनिंग सेंटर भी होगा।

वर्ष 2026 में सरकार आयोजित करेगा ग्लोबल इन्वेस्टर समिट

दिल्ली को वैश्विक निवेश का केंद्र बनाने के लिए, दिल्ली सरकार जनवरी- फरवरी 2026 में एक ग्लोबल इन्वेस्टर समिट का आयोजन करेगी। जिसमें देश-विदेश के निवेशक, उद्योगपति और नीति निर्माता भाग लेंगे।

समिट का उद्देश्य दिल्ली में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सूचना प्रौद्योगिकी, आईटी सक्षम सेवाओं और बैंकिंग, वित्तीय सेवाओं जैसे अग्रणी क्षेत्रों में निवेश की अपार संभावनाओं को दिखाना करना है।

"तुर्किए और चीन के मीडिया चैनलों पर प्रतिबंध: भारत का तकनीकी और कूटनीतिक निर्णय !"

सुनील कुमार महला

22 अप्रैल 2025 को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पाकिस्तान के आतंकियों द्वारा हमले के बाद भारत की ओर से पाकिस्तान और पीओके(पाक अधिकृत कश्मीर) में आतंकी ठिकानों पर 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद हाल ही में पाकिस्तान के मित्र देशों चीन और तुर्किए को भी भारत ने कड़ा जवाब दिया। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि हाल ही में भारत के खिलाफ चीन की झूठ मशीन 'ग्लोबल टाइम्स' का एक्स अकाउंट बंद करने के बाद उसकी शिन्हुआ न्यूज एजेंसी को भी ब्लॉक किया गया। इतना ही नहीं, पाकिस्तान के हाथ में ड्रोन थमाने वाले तुर्किए के ब्रॉडकास्टर 'टीआरटी वर्ल्ड 'के हैंडल पर भी भारत में ताला लगा दिया गया। वास्तव में, भारत द्वारा पाकिस्तान के मित्र देशों तुर्किए और चीन के मीडिया चैनलों पर कुछ समय के लिए प्रतिबंध लगाया जाना, भारत की ओर से एक बड़ा तकनीकी और कूटनीतिक निर्णय है। कहना ग़लत नहीं होगा कि चीन और तुर्किए दोनों ही देश भारत के खिलाफ दुष्प्रचार, भ्रामक रिपोर्टिंग करने में, ग़लत सूचनाओं को फ़ैलाने में शामिल रहे हैं। सच तो यह है कि चीन और तुर्की ने भारत-पाक संघर्ष में प्रतिद्वंद्वी(पाकिस्तान) का समर्थन किया। गौरतलब है कि हाल ही में चैंबर ऑफ ट्रेड एंड इंडस्ट्री (सीटीआई) ने दिल्ली में 700 से अधिक व्यापारिक संगठनों से चीन और तुर्की के साथ सभी प्रकार के व्यापार को रोकने की अपील की, जो काबिले-तारीफ कदम कहा जा सकता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि चीन भारत के आंतरिक मामलों में भी दखलंदाजी करता रहा है और वह कभी हमारे देश के अरूणाचल प्रदेश में कुछ जगहों के नाम बदलने के व्यर्थ और निरर्थक प्रयास करता है, तो कभी उसकी मीडिया एजेंसियां भारत के खिलाफ उलटी सीधी व गलत रिपोर्टिंग करतीं नजर आतीं हैं। गौरतलब है कि एक्स अकाउंट पर प्रतिबंध ऐसे दिन लगाया गया, जब सरकार ने अरुणाचल प्रदेश में स्थानों का नाम लेकर चीन द्वारा उस पर क्षेत्रीय दावा करने के प्रयासों की निंदा की थी। विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि 'रचनात्मक नामकरण से इस निर्विवाद वास्तविकता में कोई बदलाव नहीं आएगा कि अरुणाचल प्रदेश भारत का अभिन्न और अविभाज्य अंग था, है और हमेशा रहेगा।' बहरहाल,कहना चाहूंगा कि आज सोशल मीडिया पर भ्रामक सूचनाओं का जाल बिछा हुआ है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के इस युग में इन भ्रामक सूचनाओं पर अंकुश बहुत जरूरी हो गया है, क्यों कि आज सूचना का युग है और ग़लत व भ्रामक सूचनाओं को हथियार बनाकर भारत के दुश्मन देश भारत को कमजोर करने में लगे हुए हैं, लेकिन भारत की आतंकवाद के प्रति नीति 'जीरो टोलरेंस'(शून्य सहनशीलता) की है और भारत किसी भी हाल और परिस्थितियों में आतंकवाद और आतंकियों को सहन नहीं करेगा। हाल फिलहाल, पाठकों को यह भी बताता चलूं कि हालांकि कुछ घंटों के बाद ग्लोबल टाइम्स और टीआरपी वर्ल्ड के सोशल मीडिया अकाउंट्स की भारत में फिर से पहुंच बहाल कर दी गई, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि भारत इन पर पुनः प्रतिबंध नहीं लगा सकता है। गौरतलब है कि तुर्किए और चीन के इन खातों पर बैन इसलिए लगाया गया था, क्योंकि भारत को यह आशंका थी कि ये प्लेटफॉर्म्स लगातार झूठी, ग़लत और भ्रामक खबरें फैला रहे हैं, खासतौर पर भारतीय सेना के अभियानों को लेकर। पाठक जानते हैं कि हाल ही में भारत ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) में आतंकी शिविरों पर सटीक हमले किए थे, और पाकिस्तान इन हमलों से बिलबिला उठा था और बाद में अमेरिका की मध्यस्थता से दोनों देशों के बीच सीजफायर हुआ। भारत द्वारा पाकिस्तान और पीओके में आपरेशन 'सिंदूर' के बाद इन विदेशी मीडिया प्लेटफॉर्म्स(चीन और तुर्किश) पर भारत के खिलाफ गलत सूचनाएं फैलाईं। वास्तव में, आपरेशन 'सिंदूर' के बाद चीन और तुर्किए अपने मित्र देश पाकिस्तान का पक्ष लेते नजर आए।गौरतलब है कि तुर्की के राष्ट्रपति रजब तैयब एर्दोआन ने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ को एक विस्तृत संदेश में पाकिस्तान के प्रति समर्थन व्यक्त करते हुए तुर्की-पाकिस्तान संबंधों को 'भाईचारा' तथा 'सच्ची मित्रता' के सर्वोत्तम उदाहरणों में से एक बताया था। दरअसल,श्री एर्दोगान ने पाकिस्तान को लेकर यह बात कही थी कि, 'हम अच्छे और बुरे समय में आपके साथ खड़े रहेंगे, जैसा कि हमने अतीत में किया है, और भविष्य में भी ऐसा ही करेंगे। आपके माध्यम से, मैं अपने मित्रवत और भाईचारे वाले पाकिस्तान को अपने हार्दिक स्नेह के साथ बधाई देता हूं। पाकिस्तान-तुर्की दोस्ती जिंदाबाद।' गौरतलब है कि इसके बाद श्री शरीफ ने तुर्की और अंग्रेजी में अपने 'दीर्घकालिक, समय-परीक्षणित और स्थायी भाईचारे के संबंधों' पर जवाब दिया था। कहना ग़लत नहीं होगा कि राष्ट्रपति एर्दोआन की आतंकवाद पर पूरी तरह चुप्पी दर्शाती है कि तुर्की आतंकवाद को लेकर संवेदनशील नहीं है और वह बात-बात पर अपने मित्र पाकिस्तान का पक्ष लेता है। बहरहाल, यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि 7 मई को ग्लोबल टाइम्स ने यह झूठी रिपोर्ट चलाई थी कि 'पाकिस्तान ने एक भारतीय लड़ाकू विमान को मार गिराया है।' हालांकि , इस पर बीजिंग स्थित भारतीय दूतावास ने सख्त ऐतराज जताते हुए यह बात कही थी कि, 'प्रिय @ ग्लोबल टाइम्स न्यूज़ कृपया तथ्यों की पुष्टि और स्रोतों की जांच करने के बाद ही ऐसी झूठी सूचनाएं फैलाएं।' उपलब्ध जानकारी के अनुसार बैन लगाए जाने से पहले भारत सरकार ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स को 8000 से ज्यादा खातों को ब्लॉक करने का आदेश दिया था और इस आदेश का उल्लंघन करने पर भारी जुर्माना और स्थानीय कर्मचारियों पर जेल की सजा तक का प्रावधान किया गया था। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इससे पहले, सरकार ने 16 पाकिस्तानी यूट्यूब चैनलों पर प्रतिबंध लगा दिया था, जिनमें कुछ न्यूज़ आउटलेट के चैनल भी शामिल थे।

सूचना का सेतु, संचार का संकल्प: विश्व दूरसंचार दिवस

जैसे ही 17 मई की पहली किरण धरती को चूमती है, यह दिन समय के पन्नों पर एक नई कहानी लिखता है—एक ऐसी कहानी, जिसमें तारों से शुरू हुआ संवाद आज आकाश को छूता है। विश्व दूरसंचार और सूचना समाज दिवस केवल एक तारीख नहीं, बल्कि उस चिंगारी का उत्सव है, जिसने दूरी को धूल में मिलाया और सूचना को हर दिल तक पहुंचाया। यह दिन उस क्रांति की गूंज है, जिसने न सिर्फ़ तकनीक को जन्म दिया, बल्कि मानवता को जोड़ने का एक अनमोल सेतु रचा। आज, जब एक उंगली का इशारा दुनिया को हथेली में ले आता है, यह दिवस हमें उस ताकत का अहसास कराता है, जो सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) में थिरकती है—वह ताकत, जो न केवल जीवन को सरल बनाती है, बल्कि हर सपने को साकार करने का वादा करती है।

यह दिवस 17 मई, 1865 को अंतरराष्ट्रीय दूरसंचार संघ की स्थापना की स्मृति में मनाया जाता है। यह वह संस्था है, जिसने संचार के वैश्विक नियम बनाए और दुनिया को एक डिजिटल जाल में पिरोया। 2006 में संयुक्त राष्ट्र ने इसे विश्व सूचना समाज दिवस के साथ जोड़कर इसके मायने और गहरे कर दिए। यह दिन न केवल तकनीक की विजय का गान है, बल्कि सूचना के लोकतांत्रिक उपयोग और उसकी ज़िम्मेदारियों का आह्वान भी है। आज के डिजिटल युग में, जब आईसीटी ने हर क्षेत्र को नया रंग दिया है, यह दिन हमें ठहरकर सोचने को मजबूर करता है—क्या हम इस तकनीक को सिर्फ़ सुविधा मान रहे हैं, या इसे समाज को अधिक समावेशी और न्यायपूर्ण बनाने का हथियार बना रहे हैं?

आईसीटी आज जीवन का हर रंग छू रही है। शिक्षा में ऑनलाइन कक्षाएं, स्वास्थ्य में दूरचिकित्सा, व्यापार में डिजिटल बाज़ार, और शासन में ई-गवर्नेंस—ये सभी इसके चमत्कार हैं। भारत जैसे देश में, जहां डिजिटल भारत, भारतनेट, 5जी और पीएम वाणी जैसी योजनाएं तेज़ी से बदलाव ला रही हैं, आईसीटी ने शहरों और गांवों के बीच की दूरी को मिटाने का बीड़ा उठाया है। एक स्मार्टफोन अब किसी किसान को मौसम का हाल बताता है, किसी छात्र को विश्वस्तरीय शिक्षा से जोड़ता है, और किसी महिला को आत्मनिर्भरता का रास्ता दिखाता है। यह तकनीक सिर्फ़ एक साधन नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक क्रांति की धुरी है।

विश्व दूरसंचार एवं सूचना समाज दिवस 2025 की थीम ₹डिजिटल परिवर्तन में लैंगिक समानता क्यों मायने रखती है?₹ डिजिटल युग में समावेशी प्रगति की अनिवार्यता को रेखांकित करती है। यह थीम वैश्विक ज़रूरतों को उजागर करती है, जो तकनीक के लाभ को केवल विशेषाधिकार प्राप्त क्षेत्रों तक सीमित नहीं रखना चाहती, बल्कि इसे समाज के हर वर्ग, विशेष रूप से महिलाओं और हाशिए पर मौजूद समुदायों तक पहुंचाना चाहती है। भारत में डिजिटल इंडिया पहल के तहत ग्रामीण इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम इस दिशा में सशक्त कदम उठा रहे हैं, जिससे गाँवों की महिलाएं भी डिजिटल दुनिया का हिस्सा बन रही हैं। फिर भी, डिजिटल खाई, साइबर सुरक्षा जोखिम, डेटा गोपनीयता और असमान इंटरनेट पहुंच जैसी चुनौतियां बरकरार हैं। भारत में शहरी-ग्रामीण विभाजन और आर्थिक असमानताएं इन बाधाओं को और जटिल बनाती हैं।

इन रुकावटों के बावजूद, आईसीटी की ताकत बेमिसाल है। यह एक गाँव की महिला को डिजिटल बाज़ार से जोड़ सकती है, एक युवा को नए कौशल सिखा सकती है, और एक मरीज़ को सुदूर क्षेत्र में चिकित्सा सुविधा दे सकती है। यह नेटवर्क का विस्तार नहीं, बल्कि संभावनाओं का सागर है। भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और क्वांटम कम्प्यूटिंग जैसी तकनीकें इस क्रांति को और तेज़ करेंगी। लेकिन इसके साथ यह सवाल भी ज़रूरी है—क्या हम तकनीक को मानवीय मूल्यों और नैतिकता के साथ संतुलित कर पाएंगे? क्या हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि यह शक्ति सिर्फ़ सुविधा न बने, बल्कि सेवा और समानता का प्रतीक बने?

विश्व दूरसंचार दिवस हमें सिखाता है कि तकनीक का असली मोल उन लोगों के लिए है, जिन्हें यह सशक्त करती है। एक स्मार्टफोन किसी के लिए मनोरंजन हो सकता है, तो किसी के लिए रोज़गार का द्वार। यही तकनीक का लोकतांत्रिक चेहरा है, और यही इसकी सबसे बड़ी जीत। यह दिन हमें प्रेरित करता है कि हम तकनीक को सिर्फ़ यंत्र न समझें, बल्कि इसे सामाजिक न्याय, समानता और प्रगति का ज़रिया बनाएं। 17 मई सिर्फ़ एक दिन नहीं, बल्कि एक नई दुनिया का न्योता है—जहां तकनीक दूरी को मिटाए, संवाद को आज़ाद करे, और हर इंसान के लिए अवसरों का आलम रचे। जब हम अपने फोन पर एक संदेश भेजते हैं, या किसी वीडियो कॉल पर अपनों से मिलते हैं, तो यह सिर्फ़ तकनीक नहीं, बल्कि उस दूरदर्शिता का उपहार है, जिसने दुनिया को एक करने का सपना देखा। आइए, इस दिन को सिर्फ़ उत्सव न बनाएं, बल्कि एक वचन लें—एक ऐसी दुनिया की रचना का, जहां तकनीक हर दिल को छूए, हर सपने को उड़ान दे, और हर इंसान को सशक्त बनाए। यही इस दिन की आत्मा है, और यही हमारा साझा संकल्प।

सूचना का सेतु, संचार का संकल्प: विश्व दूरसंचार दिवस

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

जैसे ही 17 मई की पहली किरण धरती को चूमती है, यह दिन समय के पन्नों पर एक नई कहानी लिखता है—एक ऐसी कहानी, जिसमें तारों से शुरू हुआ संवाद आज आकाश को छूता है। विश्व दूरसंचार और सूचना समाज दिवस केवल एक तारीख नहीं, बल्कि उस चिंगारी का उत्सव है, जिसने दूरी को धूल में मिलाया और सूचना को हर दिल तक पहुंचाया। यह दिन उस क्रांति की गूंज है, जिसने न सिर्फ़ तकनीक को जन्म दिया, बल्कि मानवता को जोड़ने का एक अनमोल सेतु रचा। आज, जब एक उंगली का इशारा दुनिया को हथेली में ले आता है, यह दिवस हमें उस ताकत का अहसास कराता है, जो सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) में थिरकती है—वह ताकत, जो न केवल जीवन को सरल बनाती है, बल्कि हर सपने को साकार करने का वादा करती है।

यह दिवस 17 मई, 1865 को अंतरराष्ट्रीय दूरसंचार संघ की स्थापना की स्मृति में मनाया जाता है। यह वह संस्था है, जिसने संचार के वैश्विक नियम बनाए और दुनिया को एक डिजिटल जाल में पिरोया। 2006 में संयुक्त राष्ट्र ने इसे विश्व सूचना समाज दिवस के साथ जोड़कर इसके मायने और गहरे कर दिए। यह दिन न केवल तकनीक की विजय का गान है, बल्कि सूचना के लोकतांत्रिक उपयोग और उसकी ज़िम्मेदारियों का आह्वान भी है। आज के डिजिटल युग में, जब आईसीटी ने हर क्षेत्र को नया रंग दिया है, यह दिन हमें ठहरकर सोचने को मजबूर करता है—क्या हम इस तकनीक को सिर्फ़ सुविधा मान रहे हैं, या इसे समाज को अधिक समावेशी और न्यायपूर्ण बनाने का हथियार बना रहे हैं?

आईसीटी आज जीवन का हर रंग छू रही है। शिक्षा में ऑनलाइन कक्षाएं, स्वास्थ्य में दूरचिकित्सा, व्यापार में डिजिटल बाज़ार, और शासन में ई-गवर्नेंस—ये सभी इसके चमत्कार हैं। भारत जैसे देश में, जहां डिजिटल भारत, भारतनेट, 5जी और पीएम वाणी जैसी योजनाएं तेज़ी से बदलाव ला रही हैं, आईसीटी ने शहरों और गांवों के बीच की दूरी को मिटाने का बीड़ा उठाया है। एक स्मार्टफोन अब किसी किसान को मौसम का हाल बताता है, किसी छात्र को विश्वस्तरीय शिक्षा से जोड़ता है, और किसी महिला को आत्मनिर्भरता का रास्ता दिखाता है। यह तकनीक सिर्फ़ एक साधन नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक क्रांति की धुरी है।

विश्व दूरसंचार एवं सूचना समाज दिवस 2025 की थीम ₹डिजिटल परिवर्तन में लैंगिक समानता क्यों मायने रखती है?₹ डिजिटल युग में समावेशी प्रगति की अनिवार्यता को रेखांकित करती है। यह थीम वैश्विक ज़रूरतों को उजागर करती है, जो तकनीक के लाभ को केवल विशेषाधिकार प्राप्त क्षेत्रों तक सीमित नहीं रखना चाहती, बल्कि इसे समाज के हर वर्ग, विशेष रूप से महिलाओं और हाशिए पर मौजूद समुदायों तक पहुंचाना चाहती है। भारत में डिजिटल इंडिया पहल के तहत ग्रामीण इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम इस दिशा में सशक्त कदम उठा रहे हैं, जिससे गाँवों की महिलाएं भी डिजिटल दुनिया का हिस्सा बन रही हैं। फिर भी, डिजिटल खाई, साइबर सुरक्षा जोखिम, डेटा गोपनीयता और असमान इंटरनेट पहुंच जैसी चुनौतियां बरकरार हैं। भारत में शहरी-ग्रामीण विभाजन और आर्थिक असमानताएं इन बाधाओं को और जटिल बनाती हैं।

इन रुकावटों के बावजूद, आईसीटी की ताकत बेमिसाल है। यह एक गाँव की महिला को डिजिटल बाज़ार से जोड़ सकती है, एक युवा को नए कौशल सिखा सकती है, और एक मरीज़ को सुदूर क्षेत्र में चिकित्सा सुविधा दे सकती है। यह नेटवर्क का विस्तार नहीं, बल्कि संभावनाओं का सागर है। भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और क्वांटम कम्प्यूटिंग जैसी तकनीकें इस क्रांति को और तेज़ करेंगी। लेकिन इसके साथ यह सवाल भी ज़रूरी है—क्या हम तकनीक को मानवीय मूल्यों और नैतिकता के साथ संतुलित कर पाएंगे? क्या हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि यह शक्ति सिर्फ़ सुविधा न बने, बल्कि सेवा और समानता का प्रतीक बने?

विश्व दूरसंचार दिवस हमें सिखाता है कि तकनीक का असली मोल उन लोगों के लिए है, जिन्हें यह सशक्त करती है। एक स्मार्टफोन किसी के लिए मनोरंजन हो सकता है, तो किसी के लिए रोज़गार का द्वार। यही तकनीक का लोकतांत्रिक चेहरा है, और यही इसकी सबसे बड़ी जीत। यह दिन हमें प्रेरित करता है कि हम तकनीक को सिर्फ़ यंत्र न समझें, बल्कि इसे सामाजिक न्याय, समानता और प्रगति का ज़रिया बनाएं। 17 मई सिर्फ़ एक दिन नहीं, बल्कि एक नई दुनिया का न्योता है—जहां तकनीक दूरी को मिटाए, संवाद को आज़ाद करे, और हर इंसान के लिए अवसरों का आलम रचे। जब हम अपने फोन पर एक संदेश भेजते हैं, या किसी वीडियो कॉल पर अपनों से मिलते हैं, तो यह सिर्फ़ तकनीक नहीं, बल्कि उस दूरदर्शिता का उपहार है, जिसने दुनिया को एक करने का सपना देखा। आइए, इस दिन को सिर्फ़ उत्सव न बनाएं, बल्कि एक वचन लें—एक ऐसी दुनिया की रचना का, जहां तकनीक हर दिल को छूए, हर सपने को उड़ान दे, और हर इंसान को सशक्त बनाए। यही इस दिन की आत्मा है, और यही हमारा साझा संकल्प।

मौत को गले लगाने में आगे कानपुर के युवा, छात्र की सूचना मिलते ही छात्रा भी झूली

सुनील बाजपेई

कानपुर। प्रेम प्रसंग समेत और भी कई कारणों से मौत को गले लगाने के मामले में कानपुर के युवा आगे चल रहे हैं। इस कथन की पुष्टि की एक छात्र और एक छात्रा ने। दोनों ने ही फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। पहले छात्र ने फांसी लगाई और जब उसकी सूचना पड़ोस में रहने वाली छात्रा को मिली तो उसने भी यही किया। पुलिस सूत्र घटना की वजह प्रेम प्रसंग से जुड़ी बता रहे हैं। वहीं पुलिस ने दोनों के परिवारों में कोहराम के बीच जांच की बात करते हुए दोनों के शव पोस्टमार्टम के लिए भिजवाए हैं।

आत्महत्या की इन दोनों घटनाओं का संबंध नरवल थाना क्षेत्र के दीपापुर गांव से है। जहां पड़ोस में रहने वाले छात्र और छात्रा ने आत्महत्या कर ली।

मिली जानकारी के मुताबिक रात को बीए प्रथम वर्ष का छात्र विपिन (20) ने फांसी लगा ली तो आज वीरवार सुबह इंटर की छात्रा रिया उर्फ पूर्णिमा (18) ने भी यही किया। उसने भी फंदा लगाकर जान दे दी। फिलहाल दोनों के फांसी लगाने का कारण अभी तक स्पष्ट नहीं हो सका है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

पुलिस के अनुसार अमर सिंह का बेटा विपिन प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी कर रहा था। वही विपिन के पड़ोस में रहने वाली रिया विनय यादव की बेटी थी। यह जब रिया को पता चली तो उसने भी अपने घर में फांसी लगाकर जान दे दी। जिससे दोनों के परिवारों में कोहराम मचा हुआ है। इनमें से विपिन के चचेरे भाई वीरू यादव ने भी बीते 2 दिसंबर को संदिग्ध परिस्थितियों में अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी।

पुलिस ने बताया कि आत्महत्या किए जाने का कारण अभी पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं हो पाया है। दोनों की लाशों को पोस्टमार्टम के लिए भेजने के साथ ही घटना की वजह जानने के लिए मामले की जांच की जा रही है।

मारवाड़ी युवा मंच पर्ल शाखा सिकंदराबाद द्वारा छाछ का वितरण किया गया

परिवहन विशेष न्यूज

तेलंगाना सिकंदराबाद शाखा मंत्री सुमन घोड़ेला द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार शाखा की अध्यक्षा शीतल जैन के नेतृत्व में छाछ का वितरण किया गया ।।राहे चलते 1200 लोगों ने इसका आनंद लिया।। इस प्रोग्राम के लाभार्थी शाखा के सदस्या प्रियंका फागणिया,अर्चना चौरडिया, लक्स जैन और निर्मला सोहनलाल कामदार की शादी की सालगिराह के उपलक्ष में रखा गया।।इस प्रोग्राम को सफल बनाने में मीना जैन, आशा डाफरिया ,अर्चना बोहरा,माया राठौर, मधु शर्मा, संतोष देवी, भाग्यश्री दाबी, मुकुल दाबी, चंदा मोदी, योगिता, अर्चना चौरडिया ,अनीता राठौर ,सुरेखा गांधी, संजू सांखला, सीमा जैन, आरव जैन और शानवी जैन का विशेष सहयोग रहा। शाखा की सहमंत्री सुनीता डुंगरवाल ने सभी का आभार व्यक्त किया।। और इस प्रोग्राम को सफल बनाने में सिकंदराबाद शाखा के वरिष्ठ सदस्य नारायण जी चावडा का सराहनीय योगदान रहा।

पाकिस्तान की किनारा हिल्स एवं दो बार आये रहस्यमी भूकंप और 'सीज़फ़ायर' का पूरा सच 'पश्चिमी सैन्य विशेषज्ञों' एवं दुनियां में जाने माने डिफेन्स एक्सपर्टस से पूछिए और पाकिस्तानी सोशल मीडिया और 'नीबू मिर्ची गैंग' को बताइएँ: अरविन्द पुष्कर एडवोकेट

भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान के सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया, तो सोशल मीडिया और ओपन सोर्स इंटेलिजेंस समुदाय में किराना हिल्स पर हमले से रहस्यमी भूकंप की अटकलें तेज हो गईं। प्राप्त जानकारी के अनुसार, सोशल मीडिया और कुछ रिपोर्ट्स में दावा किया गया कि कुछ मिसाइलों ने इस क्षेत्र को निशाना बनाया, जिससे आतंकी पाकिस्तान की सरकार और आर्मी में पैनिक फैल गया और आनन फानन में पाकिस्तान ने अमेरिका और अपने सहयोगी देशों से निवेदन करके यह युद्ध विराम कराया। इस विषय पर लोगो ने अपने विचार बताएं जो इस प्रकार हैं।

समाजसेवी अरविन्द पुष्कर, एडवोकेट एवं सामरिक मामलों के जानकार ने बताया कि पाकिस्तान की किनारा हिल्स एवं दो बार आये रहस्यमी भूकंप और 'सीज़फ़ायर' का पूरा सच ₹पश्चिमी सैन्य विशेषज्ञों₹ एवं दुनियां में जाने माने डिफेन्स एक्सपर्टस से पूछिए और पाकिस्तानी सोशल मीडिया और ₹नीबू मिर्ची गैंग₹ को बताइएँ कि ₹पश्चिमी 'सैन्य विशेषज्ञों' और जाने माने डिफेन्स एक्सपर्टस टॉम कूपर ने स्पष्ट रूप से बताया हैं कि जब एक पक्ष दूसरे की परमाणु हथियार भंडारण सुविधाओं पर बमबारी कर रहा हो, और दूसरा पक्ष पलटकर हमला करने की स्थिति में न हो तो हमारी नज़र में यह पूरी तरह से स्पष्ट जीत है। इस्लामाबाद की ओर से 'सीज़फ़ायर' की बात आना कोई हैरानी की बात नहीं है। वही, न्यूयॉर्क टाइम्स ने पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम से परिचित एक पूर्व अमेरिकी अधिकारी का हवाला देते हुए बताया कि पाकिस्तान का सबसे गहरा डर यह है कि कही उसके परमाणु कमान प्राधिकरण को नष्ट ना कर दिया जाए। नूर खान पर हुआ मिसाइल हमला इस बात का संकेत माना जा सकता है कि भारत ऐसा कर सकता है। सैटेलाइट इमेजरी से भी सरगोधा में मुशाफ एयरबेस की रनवे पर हमले के संकेत मिले हैं। माना जाता है कि यह एयरबेस किरणा हिल्स के नीचे स्थित भूमिगत परमाणु भंडारण स्थलों से जुड़ा हुआ है, और इसे कई 'लोइटरिंग पेनिट्रेटिंग म्यूनिशन' (घुसपैठ कर सकने वाले हथियारों) से निशाना बनाया गया। लेकिन इन सभी दावों को और हवा तब मिली जब एक अमेरिकी परमाणु आपातकालीन सहायता विमान (B350 AMS) को पाकिस्तान में देखा गया, जिससे रेडियोधर्मी लीक की आशंका जताई गई। हालांकि, भारतीय वायु सेना ने इन दावों को खारिज करते हुए कहा कि उन्होंने किराना हिल्स पर कोई हमला नहीं किया। भारत के एयर मार्शल ए.के. भारती ने किरणा हिल्स और ₹जो कुछ भी वहाँ हैं₹ उस पर हमला करने से साफ़ साफ़ इनकार किया हैं।

श्री पुष्कर ने आगे बताया कि पाकिस्तान में दो बार आये रहस्यमी भूकंप और किराना हिल्स पर हमले की अटकलें इसलिए भी जोर पकड़ रही हैं, क्योंकि इस क्षेत्र को पाकिस्तान की सैन्य और परमाणु क्षमताओं का केंद्र माना जाता है। कुछ रिपोर्ट्स में दावा किया गया कि कुछ मिसाइलों ने इस क्षेत्र के पास स्थित मुशाफ एयरबेस को निशाना बनाया, जो किराना हिल्स के करीब है और परमाणु भंडारण से जुड़ा माना जाता है, और अटकले यह भी हैं कि वहां दो वार भूकंप आया हैं, लेकिन क्या सच हैं क्या झूठ हमें नहीं पता क्युकी झूठे पाकिस्तान पर हमें 0% प्रतिशत भी भरोसा नहीं हैं। वही, पाकिस्तान में इस खबर ने हड़कंप मचा दिया। वैसे तो पाकिस्तान के रक्षा अधिकारियों ने भी इन दावों को नकारते हुए कहा कि कोई भी परमाणु सुविधा को नुकसान नहीं पहुंचा है लेकिन परमाणु सुरक्षा से जुड़े अमेरिकी विमान की मौजूदगी ने इन अटकलों को और हवा दी हैं कि B350 AMS विमान की पाकिस्तान में मौजूदगी और परमाणु रिसाव की चिंता हैं। अमेरिका का B350 AMS विमान जो कि परमाणु आपात स्थितियों में तैनात किया जाता है। पाकिस्तान में इसकी मौजूदगी ने आशंकाओं की पुष्टि को एक और आधार दे दिया। विशेषज्ञों का मानना है कि जब कहीं रेडियोधर्मी रिसाव की आशंका हो, यह विमान तभी सक्रिय होता है।

आखिर में उन्होंने बताया कि रहस्यमी भूकंप के बाद किराना हिल्स भी अचानक से चर्चा में आ गया। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि आखिर इस किनारा हिल्स में पाकिस्तान की ऐसी कौन सी जान बसी, जिसे लेकर इतनी चर्चा हो रही हैं। किराना हिल्स पाकिस्तानी पंजाब में सरगोधा जिले में स्थित है। यह इलाका लंबे समय से पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम से जुड़ा रहा है। माना जाता है कि इसी साइट पर पाकिस्तान की परमाणु क्षमताओं का विकास और स्टोर किया जाता है। 1980 के दशक में यहां अंडरग्राउंड टलन्स और बंकरों का निर्माण किया गया था, जहां पाकिस्तान ने अपने परमाणु हथियारों और मिसाइलों को छुपाकर रखा है। आतंकी पाकिस्तान इस जगह को लेकर अब तक साफ-साफ कुछ भी बताने से बचता रहा है। इस रहस्य और पर्देदारी की वजह इसे 'पाकिस्तान का एरिया 51' कहा जाता है। यह नाम उसे अमेरिका के एरिया 51 पर दिया गया, जिसके लिए दावा किया जाता है कि वहां अमेरिकी सेना ने UFO और एलियंस छुपा रखे हैं। हालांकि अब तक इस का कहीं कोई सबूत नहीं लेकिन अमेरिकी विमान की मौजदगी ने इन अटकलों को और हवा दी हैं।

यामाहा के बाइक-स्कूटर पर मिलेगी 10 साल की वारंटी, दोपहिया कंपनियों की बढ़ेगी टेंशन

परिवहन विशेष न्यूज

यामाहा के एशियाई उपमहाद्वीप में 40 साल पूरे होने पर बंपर ऑफर लेकर आई है। कंपनी अपनी भारतीय बाजार में बिकने वाली मोटरसाइकिल और स्कूटर को खरीदने पर 10 साल की वारंटी दे रही है। इसमें 2 साल की वारंटी के अलावा 8 साल की विस्तारित वारंटी शामिल है। यह वारंटी बाइक के दूसरे मालिक को भी पूरी तरह से ट्रांसफर हो जाएही।

नई दिल्ली। यामाहा ने एशियाई उपमहाद्वीप में 40 साल की बिक्री की उपलब्धि हासिल की है। इसको लेकर Yamaha India मोटर्स पिछले कुछ समय से जश्न मना रही है। अब कंपनी ने भारत में बनी गाड़ियों पर 10 साल की नई कुल वारंटी प्लान को लॉन्च किया है। इसमें कंपनी की प्रीमियम स्कूटर और मोटरसाइकिल लाइनअप को शामिल किया गया है। आइए जानते हैं कि यामाहा के 10 साल वारंटी में ग्राहकों को क्या-क्या मिलेगा? और इसमें किन मोटराइसिल और स्कूटर पर लाभ मिलेगा?

10 साल की वारंटी में क्या-क्या मिलेगा?

यामाहा इंडिया की तरफ से दी जाने वाली 10 साल की वारंटी में मानक 2 साल की वारंटी के अलावा 8 साल की विस्तारित वारंटी मिलेगी। इसे कंपनी के स्कूटर और मोटरसाइकिलों की लंबे समय तक के लिए विश्वसनीयता को बढ़ाने के लिए लाया गया है। इसे लाने के पीछे का एक कारण कंपनी की मोटरसाइकिल और स्कूटर की बिक्री को भी बढ़ाना है।

इन गाड़ियों पर मिलेगा बेनिफिट

इस वारंटी प्लान का फायदा उन लोगों को मिलेगा, जो Fascino 125 Fi, RayZR Fi और Aerox 155 Version S स्कूटर को खरीदते हैं। इनपर 1 लाख किमी तक का कवरेज मिलेगा। इसके साथ ही मोटरसाइकिल लाइनअप में FZ सीरीज, MT-15 और R15 खरीदने पर 1.25 लाख किमी तक का कवरेज के साथ 10 साल की कुल वारंटी भी मिलेगी। यह एक्सटेंडेड वारंटी इंजन और इसके इलेक्ट्रॉनिक ईंधन इंजेक्शन सिस्टम सहित विद्युत घटकों के संबंध में कवरेज पर लागू होगी। इस प्लान में MT-03 और R3 को शामिल नहीं किया गया है। इसे रेनव एक सीमित अवधि के लिए पेश किया गया है।

यह भी मिलेगा फायदा

इस एक्सटेंडेड वारंटी का फायदा उन लोगों को भी मिलेगा, जो लोग इस वारंटी में खरीदे गए वाहनों के दूसरे मालिक को भी मिलेगा। इसे आप इस तरह से समझ सकते हैं, अगर कोई इस वारंटी के तहत किसी बाइक को खरीद लेता है और उसे दूसरे को बेचता है, तो वारंटी अगले मालिक को पूरा ट्रांसफर हो जाएगी। इस ऑफर अवधि के खत्म होने के बाद, नए खरीदार मानक वारंटी अवधि खत्म होने के बाद भी मामूली कीमत पर एक्सटेंडेड वारंटी का ऑप्शन को चुन सकते हैं।

सिट्रोन सी3 सीएनजी वर्जन भारत में लॉन्च, जानिए एक किलो सीएनजी में कितना देगी माइलेज

परिवहन विशेष न्यूज

सिट्रोन सी3 सीएनजी लॉन्च

सिट्रोन सी3 सीएनजी वेरिएंट को भारत में लॉन्च किया गया है। इसे भारत में 7.16 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लेकर आया गया है। इसके लिए लोग बेस वेरिएंट में केवल 93 हजार रुपये एक्स्ट्रा देकर खरीद सकते हैं। यह रेट्रोफिट प्रोग्राम के जरिए सभी डीलरशिप पर सीएनजी किट के साथ उपलब्ध है। इसके रियर सस्पेंशन को अपग्रेड किया गया है।

नई दिल्ली। सिट्रोन सी3 सीएनजी को भारत में लॉन्च कर दिया गया है। यह अब डीलर-लेवल CNG किट फिटमेंट के साथ भारत में उपलब्ध है। Citroen C3 के CNG वर्जन को लोग केवल 93,000 रुपये की ज्यादा कीमत में खरीद सकते हैं। इससे कार की एक्स-शोरूम कीमत 7.16 लाख रुपये तक पहुंच जाती है। इसे रेट्रोफिट प्रोग्राम के जरिए सभी डीलरशिप पर सीएनजी किट के साथ उपलब्ध है। आइए जानते हैं कि सिएट्रॉन सी3 सीएनजी वर्जन को कितने वेरिएंट में पेश किया गया है और यह एक किलो सीएनजी में कितने किलोमीटर तक का माइलेज देगी।

कीमत और वैरिएंट

Citroen C3 CNG को 7.16 लाख रुपये से लेकर 9.24 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है। इसे चार वेरिएंट लाइव, फील, फील (O) और शाइन में लेकर आया गया है। इसपर भी C3 की तरह ही 3 साल/1 लाख किलोमीटर की वारंटी मिल रही है।

Citroen C3 CNG के फीचर्स

माइलेजः इसको लेकर कंपनी का दावा है कि फैक्ट्री-टेस्टेड सीएनजी किट 28.1 किमी/किग्रा तक का माइलेज देती है। इसमें आसानी से पेट्रोल और सीएनजी के बीट स्विच करने की सुविधा मिलती है, जिससे आपको ज्यादा दूरी तक ज्यादा फ्यूल की खपत की चिंता नहीं होगी। यह फैक्ट्री-इंजीनियर कैलिब्रेशन 2.66 रुपये प्रति किमी की रनिंग लागत के साथ ऑप्शनल फ्यूल के इस्तेमाल के साथ ही बेहतर ड्राइविंग एक्सपीरियंस मिलता है। इसको लेकर कंपनी का कहना है कि सिंगल सिलेंडर CNG किट में 55 लीटर पानी के बराबर की कैपेसिटी है और एक फुल टैंक पर 170-200 किमी तक का सफर तय किया जा सकता है।

इंजन स्पेसिफिकेशन

Citroen C3 CNG को केवल एक इंजन ऑप्शन के साथ लॉन्च किया गया है। सीएनजी मॉडल में 1.2-लीटर नैचुरली एस्पिरेटेड इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो पेट्रोल पर चलने पर 82 hp की पावर और 115 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 5-स्पीड मैनुअल गियरबॉक्स स्टैण्डर्ड के साथ जोड़ा गया है। कंपनी ने अभी तक इसके बारे में खुलासा नहीं किया है कि इसे CNG पावरट्रेन पर चलाने पर पावर और टॉर्क क्या मिलेगा। हालांकि, कंपनी ने दावा किया है कि इसके रियर सस्पेंशन को अपग्रेड करके पहले से बेहतर बनाया गया है, ताकि यह राइड क्वालिटी स्टैण्डर्ड पेट्रोल मॉडल से अलग लगे।

हीरो लाएगी सस्ते दो नए इलेक्ट्रिक स्कूटर्स, जुलाई 2025 में होगी लॉन्च

हीरो मोटोकॉर्प किफायती दो नए इलेक्ट्रिक स्कूटर लाने की प्लानिंग कर रही है। यह दोनों ही स्कूटर अपने सेगमेंट में काफी किफायती होने वाली है जिससे प्रतिस्पर्धा पहले से ज्यादा बढ़ जाएगी। इन दो नए इलेक्ट्रिक स्कूटर के आने के बाद हीरो ईवी लाइनअप रेंज में भी बढ़ोतरी हो जाएगी। इन दो में से एक इलेक्ट्रिक स्कूटर Vida Z शामिल हो सकता है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। हीरो मोटोकॉर्प पिछले 24 वर्षों से दुनिया की सबसे बड़ी दोपहिया वाहन निर्माता कंपनी बनी हुई है। इसने भारतीय बाजार नें वित्तीय वर्ष (FY) 2024-25 में 56 लाख से ज्यादा गाड़ियों की बिक्री की है। कंपनी मोटरसाइकिल, स्कूटर समेत इलेक्ट्रिक दोपहिया की भी बिक्री करती है। कंपनी जुलाई 2025 में अपनी दो नई इलेक्ट्रिक स्कूटर लाने जा रही है। इसके बारे में कंपनी ने हाल ही में एक कॉन्फ्रेंश कॉल के दौरान खुलासा किया है। आइए जानते हैं कि हीरो की दो नई इलेक्ट्रिक स्कूटर कौन-सी होने वाली है और उन्हें जुलाई 2025 में कब लॉन्च किया जाएगा?

नई इलेक्ट्रिक स्कूटर किफायती होंगे

पिछले कुछ वर्षों में इलेक्ट्रिक दोपहिया सेगमेंट की पॉपलिरीटी काफी तेजी से बढ़ी है। इसके साथ ही इनकी बिक्री में भी उछाल देखने के लिए मिला है। हाल में हीरो के पोर्टफोलियो में इलेक्ट्रिक स्कूटरों की Vida V2 रेंज है। हालांकि, यह TVS iQube, बजाज चेतक और ओला S1 से रेंज के मामले में पीछे है।

हीरो ने पिछले वित्तीय वर्ष (अप्रैल 2024 से मार्च 2025) में भारत में इलेक्ट्रिक स्कूटरों की Vida रेंज की 58,503 यूनिट की बिक्री की है। यह पिछले वित्तीय वर्ष (अप्रैल 2023 से मार्च 2024) की तुलना में 195% की बढ़ोतरी को बताता है। अपनी इलेक्ट्रिक स्कूटर की बिक्री को देखते हुए कंपनी जुलाई में भारतीय बाजार में दो नए और ज्यादा किफायती इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहन को लॉन्च करने की प्लानिंग कर रही है।

नए इलेक्ट्रिक दोपहियो के लेकर प्लान

हीरो जो इस साल अपने ईवी लाइनअप को लेकर आने वाली है, उस लाइनअप के लिए वह ग्रामीण क्षेत्रों को लक्षित करने की प्लानिंग बना रहा है। दरअसल, ग्रामीण क्षेत्रों में हीरो का बड़ा नाम है। अगर कंपनी ऐसा करती है, तो यह फैसला काफी समक्षदारी भरा हो सकता है और ग्रामीण क्षेत्रों में ईवी के बारे में अधिक जागरूकता लाना भी हो जाता है। वहीं, आने वाले किफायती ईवी भी इसका और भी अधिक लाभ उठा पाएंगे।

कितनी होगी कीमत?

मौजूदा विडा रेंज 74,000 रुपये से लेकर 1,15,000 रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में आती है। विडा की यह कीमत पहले से ही काफी प्रतिस्पर्धी है, इसलिए यह देखाना काफी दिलचस्प होगा कि हीरो नए स्कूटर के साथ इस कीमत को कितना और कैसे कर पाता है। आने वाले इलेक्ट्रिक स्कूटरों में Vida Z हो सकता है, जिसे हाल में भारत की सड़कों पर टेस्टिंग के दौरान स्पॉट किया गया है।

सिट्रोएन सी3 अब सीएनजी किट के साथ लॉन्च, जानें कीमत और माइलेज

परिवहन विशेष न्यूज

फ्रेंच कार निर्माता Citroen (सिट्रोएन) ने अब भारतीय सीएनजी कार बाजार में भी एंट्री ले ली है। कंपनी ने अपनी पॉपुलर हैचबैक कार C3 का सीएनजी वर्जन लॉन्च कर दिया है।

नई दिल्ली। फ्रेंच कार निर्माता Citroen (सिट्रोएन) ने अब भारतीय सीएनजी कार बाजार में भी एंट्री ले ली है। कंपनी ने अपनी पॉपुलर हैचबैक कार C3 का सीएनजी वर्जन लॉन्च कर दिया है। हालांकि यह एक फैक्ट्री-फिटेड सीएनजी मॉडल नहीं है। बल्कि इसे डीलरशिप लेवल पर फिट किया जाने वाला रेट्रोफिटेड किट माना जा रहा है। इस किट की कीमत 93,000 रुपये है, जो कार की एक्स-शोरूम कीमत में जुड़ती है।

किट फिटिंग से नहीं घटेगा बूट स्पेस

सिट्रोएन का दावा है कि सीएनजी किट को इस तरह से फिट किया गया है कि कार का बूट स्पेस प्रभावित नहीं होता और स्पेयर व्हील भी आसानी से उपलब्ध रहता है। पेट्रोल भरने वाले पोर्ट में ही सीएनजी नोजल को भी बड़ी खूबी से फिट किया गया है, जिससे रिफ्यूलिंग आसान और तेज हो जाती है।

कंपनी ने सीएनजी किट की वजह से गाड़ी की परफॉर्मेंस में कोई गिरावट न आए, इसके लिए रियर सस्पेंशन को खास तौर पर ट्यून किया है। सस्पेंशन स्प्रिंग्स को मजबूत बनाया गया है और एंटी-रोल बार भी लगाया गया है। इससे सीएनजी वेरिएंट में भी सिट्रोएन का 'फ्लाइंग कारपेट' जैसा राइड एक्सपीरियंस बना रहता है।

रेंज, माइलेज और परफॉर्मेंस

इस सिंगल सिलेंडर वाली सीएनजी किट में 55 लीटर वाटर-इक्विवलेंट कैपेसिटी है और कंपनी के अनुसार, फुल टैंक में यह 170 से 200 किलोमीटर तक की रेंज दे सकती है। ARAI द्वारा सर्टिफाइड फ्यूल एफिशिएंसी 28.1 किलोमीटर प्रति किलो बताई गई है। जिससे कार की रनिंग कॉस्ट 2.66 रुपये प्रति किलोमीटर तक आ जाती है।

यह सीएनजी किट फिलहाल सिर्फ 1.2 लीटर नैचुरली एस्पिरेटेड पेट्रोल इंजन के साथ दी जा रही है, जो 5-स्पीड मैनुअल गियरबॉक्स से लैस है। हालांकि, सीएनजी वर्जन में पावर और टॉर्क आउटपुट के आंकड़े अभी कंपनी ने जारी नहीं किए हैं। रेगुलर पेट्रोल वर्जन में यही इंजन 81 bhp की पावर और 115 Nm का टॉर्क जनरेट करता है।

वेरिएंट्स और कीमत

Citroen C3 CNG की कुल कीमत करीब 7 लाख रुपये से लेकर करीब साढ़े 9 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) तक जाती है। कंपनी ने यह किट लोवाटो के साथ पार्टनरशिप में तैयार की है। और इसे C3 के चारों वेरिएंट्स - Live, Feel, Feel(O), और Shine में उपलब्ध कराया गया है।

कंपनी की उम्मीदें

स्टेलेंटिस इंडिया के ऑटोमोटिव ब्रांड्स बिजनेस हेड कुमार प्रियेश का कहना है, 'हम Citroen C3 के लिए CNG रेट्रोफिटमेंट विकल्प लाकर बेहद उत्साहित हैं। यह पहल हमारे ग्राहकों को सिट्रोएन की कम्फर्ट और डिजाइन का अनुभव देते हुए, सस्ती और पर्यावरण के अनुकूल मोबिलिटी का विकल्प भी देगी।'

2025 होंडा सीबी125एफ पहले से ज्यादा मिलेगा माइलेज, नए फीचर्स समेत मिला नया कंसोल

परिवहन विशेष न्यूज

2025 होंडा सीबी125एफ को यूरोपीयन बाजार में लॉन्च किया गया है। इसे पहले से ज्यादा प्रीमियम बना दिया गया है। इसमें कई बेहतरीन नए फीचर्स दिए गए हैं जिसमें नया कंसोल स्मार्टफोन कनेक्टिविटी टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन जैसे फीचर्स शामिल है। इसके अलावाइसमें आइडलिंग स्टॉप सिस्टम भी दिया गया है जो बाइक की माइलेज को बेहतर बनाने में राइडर की मदद करेगा।

नई दिल्ली। होंडा टूव्हीलर ने अपडेटेड 2025 Honda CB125F को लॉन्च कर दिया है, जिसे भारत में Honda SP 125 के नाम से जाना जाता है। पिछले जनरेशन की तुलना में नई Honda CB125F में कई बदलाव किए गए हैं, जिसमें फीचर्स से लेकर इंजन तक शामिल है। वैसे तो तकनीकी रूप से यह 2025 होंडा CB125F है, लेकिन ब्रांड इसे 2026 साल का मॉडल बता रहा है। आइए जानते है कि 2025 Honda CB125F में क्या बड़े अपडेट मिले हैं।

क्या मिले अपडेट?

Honda CB125F में सबसे पहला अपडेट नया TFT कंसोल देना है। जिसका इस्तेमाल कंपनी की बड़ी बाइक में किया जाता है। इसमें स्पीड, समय, टैकोमीटर रीडिंग, गियर पोजिशन और ओडोमीटर और ट्रिप मीटर रीडआउट जैसे ज़रूरी रीडआउट चीजों के बारे में पता चलता है। इस कंसोल में स्मार्टफोन कनेक्टिविटी और संबंधित फीचर्स जैसे कॉल/एसएमएस अलर्ट, टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन और होंडा रोडसिंक मोबाइल ऐप के जरिए म्यूजिक कंट्रोल जैसी सुविधाएं दी गई है। इन फीचर्स के जुड़ने के बाद यह पहले से ज्यादा प्रीमियम मोटरसाइकिल हो गई है।

Honda CB125F में आइडलिंग स्टॉप सिस्टम को शामिल किया गया है, जो बाइक की माइलेज को बढ़ाने में मदद करेगा। यह सिस्टम ट्रैफिक में कुछ समय के लिए आइडलिंग के दौरान इंजन की पावर को बंद कर देता है। इसकी मदद से राइडर क्लच को दबाकर और रिलीज करते बाइको फिर से दोबारा स्टार्ट कर सकेगा। इसके साथ ही बाइक से अच्छा माइलेज मिले, इसके लिए इसमें ECU को भी अपडेट किया है। इस बाइक को लेकर कंपनी का दावा है कि CB125F 66.7kmpl का माइलेज देती है।

क्या नहीं बदला?

Honda CB125F में SP 125 जैसा ही 124cc, एयर-कूल्ड, सिंगल-सिलिंडर इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 10.8PS की पावर और 10.9Nm का टॉर्क जनरेट करता है। बाइक में पहले की तरही ही टेलिस्कोपिक फोर्क और ट्विन-शॉक के साथ समान अंडरपिनिंग दी गई है। बाइक में दिए गए दोनों पहिए 18-इंच के है। पहले की तरह ही ब्रेकिंग सेटअप दिया गया है, जिसमें आगे की तरफ 240mm डिस्क और पीछे की तरफ 130mm ड्रम ब्रेक दिया गया है।

बाइक पहले की तरह ही इंपीरियल रेड मेटैलिक, मैट मार्वल ब्लू मेटालिक और नया मैट एक्सिस ग्रे मेटालिक कलर ऑप्शन में लेकर आई गई है। बाइक में हैंडलबार के पास USB C-टाइप चार्जिंग पोर्ट भी मिलता है, जिससे आप अपने स्मार्टफोन को चलते-फिरते चार्ज कर सकते हैं।

कीमत

Honda SP 125 को भारतीय बाजार में 2 वेरिएंट में पेश किया जाता है। इसके ड्रम ब्रेक वाले वेरिएंट की कीमत 92,678 रुपये और डिस्क वेरिएंट की कीमत 1,00,948 रुपये है। इन अपडेट के साथ 2025 Honda CB125F को भारत में भी जल्द लॉन्च किया जा सकता है। कई अपडेट के बाद भी इस बाइक की कीमत में कोई बढ़ोतरी नहीं की गई है, इसे 3,199 (भारतीय करेंसी में 3.05 लाख रुपये) की शुरुआती कीमत में लाया गया है।

अंकों को अंतिम लक्ष्य ना बनाएं

विजय गर्ग

सभी माता-पिता चाहते हैं कि उनका बच्चा टॉप करे, उनका नाम रोशन करे। एक अभिभावक यह चाहेगा ही, इसमें गलत कुछ नहीं है। गलत तब है, जब अंकों की यह भूख बच्चे की क्षमता से आगे निकल जाए। अगर पता है कि बच्चा ज्यादा अंक नहीं ला पाएगा, फिर भी दबाव बनाते हैं तो यह बहुत ही खतरनाक है। बच्चा क्या बनना चाहता है, उसे क्या पसंद है, वह क्या करना चाहता है, माता-पिता सिर्फ इसी पर अपना फोकस करें। देखिए, नतीजे आपकी उम्मीदों से भी कहीं बेहतर आएंगे। आइए जानते है एक्सपर्ट्स से बच्चों में तनाव के कारण और इसके समाधान।

अंकों के तनाव को दिमाग से हटा दें, बेहतर आएंगे नतीजे परीक्षाओं का मौसम आ चुका है। इस समय विद्यार्थियों में तनाव का होना लाजिमी है, लेकिन जब यह मान लिया जाता है कि अंक न हों तो कुछ नहीं तब यह तनाव खतरनाक मोड़ पर पहुंच जाता है। अंक महत्वपूर्ण जरूर हैं, पर जिंदगी नहीं।

अंक जिंदगी का आधार नहीं हो सकते हर बच्चा चाहता है कि वह टॉप करे जो अच्छी बात है, लेकिन यह भी उतना ही बड़ा सच है कि हर बच्चा तो टॉप नहीं कर सकता। तो फिर कहीं ऐसा तो नहीं है कि अंकों की इस अंधी दौड़ में आप कुछ खो रहे हैं? क्या खो रहे हैं, इसका आपको शायद अंदाजा भी नहीं है। विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों, दोनों को यह समझना जरूरी है कि अंक ही जीवन का आधार नहीं हो सकते। जीवन बहुत बड़ा है और बहुत कुछ देता है। इस दौड़ को अपने दिमाग पर हावी नहीं होने देना है। बस मन और शांत दिमाग से पढ़ाई करनी है और हमेशा सकारात्मक रहना है। आपका खुद पर विश्वास होना बहुत जरूरी है और यह विश्वास तभी बनेगा जब आप अच्छी तरह से पढ़ाई कर पाओगे, अंकों को दिमाग़ में रखे बगैर।

'गोलपोस्ट' तो कहीं और है अंकों का संबंध शैक्षणिक प्रदर्शन से जरूर है। हो सकता है अच्छे अंकों से आपको किसी अच्छे संस्थान में दाखिला मिल जाए, लेकिन यह समझना भी जरूरी है कि इसका संबंध आपकी प्रतिभा से बिल्कुल भी नहीं है। इसके मायने यह हैं कि कम अंक आपकी उस प्रतिभा को नहीं रोक सकते, जिसके लिए आप बने हैं। दुनिया के सभी सफल और महान लोगों को देखिए। कोई भी ऐसा नहीं है, जिसने टॉप किया है बल्कि कुछ लोग तो ऐसे भी हैं जो अपनी पढ़ाई ही पूरी नहीं कर सके, फिर भी दुनिया के अमीरों की सूची में शीर्ष पर आए। ऐसा इसलिए क्योंकि उनका लक्ष्य अंकों पर नहीं था, उनके अपने गोल पर था। इसलिए अच्छे अंक लाने की कोशिश जरूर करें, लेकिन यही अंतिम लक्ष्य न हो।

अपनी क्षमता पर ध्यान दें हर बच्चा पढ़ने में अच्छा ही हो, जरूरी नहीं है। हर बच्चा अच्छे अंक ला सके, यह भी जरूरी नहीं है। हर बच्चा आईआईटी, मेडिकल एग्जाम या इसी तरह की एग्जाम क्रैक कर सके, यह भी जरूरी नहीं। तो ऐसे बच्चे क्या करें? ध्यान रहे, ईश्वर ने हर व्यक्ति को एक अद्वितीय क्षमता के साथ पैदा किया है, जो अंकों पर आधारित नहीं होती। बस, अपनी उस क्षमता को पहचानकर आगे बढ़ने की जरूरत है। शुरुआती परीक्षा का परिणाम आपके भविष्य को निर्धारित नहीं करता, इसलिए अंक कैसे भी आएं, आप क्या करना चाहते हैं, इस पर पूरा फोकस होना चाहिए।

अंकों के तनाव को पहचानें ताकि मदद कर सकें छात्र जीवन और परीक्षा का साथ तो हमेशा-हमेशा का है और इसे अलग भी नहीं किया जा सकता। लेकिन आजकल 'परीक्षा का भय' और 'अंकों का तनाव' बढ़ता ही जा रहा है। अकादमिक प्रदर्शन को लेकर बच्चे के साथ उनके अभिभावक भी बहुत चिंतित दिखाई देते हैं। दसवीं और बारहवीं की परीक्षा को तो जीवन-मरण के रूप में देखा जा रहा है। बच्चे के ऊपर अपनी पढ़ाई के दबाव और अपने भविष्य से जुड़े अनेक सवालों के साथ ही माता-पिता की अपेक्षाओं का ज्यादा दबाव रहता है। सालों से सीबीएसई की काउंसलर होने के कारण मुझे परीक्षा और अंकों के कारण बच्चों व अभिभावकों में होने वाले तनाव को काफी नजदीक से देखने का मौका मिला है।

कैसे पहचानें कि बच्चा तनाव में है? तनाव एक मानसिक अनियमितता है, जिसमें बच्चे में उदासीनता, हीन विचार, किसी भी कार्य को करने में अरुचि, नींद में गड़बड़ी, भूख की कमी, थकावट और एकाग्रता का अभाव देखने को मिलता है। यदि बच्चा किसी काम में दिलचस्पी नहीं ले रहा, उसकी ऊर्जा का स्तर लगातार घटता जा रहा है और उसकी रोजमर्रा की जिंदगी बिल्कुल अस्त-व्यस्त हो रही है तो यह सब तनाव के लक्षण हो सकते हैं। तनाव ग्रस्त बच्चे अक्सर क्रोधित रहते हैं, बात-बात पर गुस्सा करना उनकी आदत में शामिल हो जाता है। तनाव के कारण इनका मूड अक्सर खराब रहता है और ये किसी से बात करने से कतराते हैं। बच्चे में नकारात्मक सोच बढ़ने लगती है और उसका आत्मविश्वास भी कम होने लगता है।

ऐसा क्या करें कि बच्चों पर अंकों का तनाव न हो? बच्चे में अंकों का तनाव न हो, इसकी जिम्मेदारी अभिभावक की है। जब बच्चे परीक्षा के कठिन दौर से गुज़र रहे हों तब अभिभावकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। प्रत्येक अभिभावक को अपने बच्चे के व्यवहार को समझना आवश्यक है और यदि बच्चे में तनाव के लक्षण दिखाई दें तो उचित समाधान करें। यदि तनाव के शुरुआती समय में इसकी पहचान कर ली जाए और आवश्यकतानुसार मनोवैज्ञानिक अथवा विशेषज्ञ की सलाह ले ली जाए तो बच्चे के मानसिक स्वास्थ्य में सुधार लाया जा सकता है।

अभिभावक इस बात का दबाव नहीं बनाएं कि बच्चा हर समय पढ़ता ही रहे। बच्चे के मनोरंजन का भी ध्यान रखें। खासकर बच्चे को अपने दोस्तों से मिलने के लिए प्रेरित करें।

कई अध्ययनों से यह साबित हो चुका है कि फिजिकल एक्टिविटीज तनाव को कम करने में मददगार होती है। तो पढ़ाई के बीच भी बच्चे को शाम के समय कुछ देर के लिए घर से बाहर निकलकर शारीरिक व्यायाम करने के लिए प्रेरित करें।

वूमन इंपावरमेंट : जिम्मेदारियों का बोझ

औरतों के रोजमर्रा के जीवन पर आधारित फिल्म 'मिसेज' इन दिनों काफी चर्चा में है। इस फिल्म एक ऐसी महिला की कहानी को दिखाया गया जिस की चाहत और सपने सिलबट्टे पर चटनी की तरह पिस कर रह गए। इस फिल्म में यह दिखाने की कोशिश की गई है कि कैसे शादी के बाद एक महिला का जीवन घर की चारदीवारी में घुट कर रह जाता है। कैसे एक महिला का सारा जीवन घरपरिवार की देखभाल और किचन में ही बीत जाता है।

घरेलू कामों का नाता लड़कियों के जीवन से जुड़ा हुआ है। भले ही कोई लड़की किसी समाज, परिवार में पैदा हुई हो, उसे बचपन से ही घर के कामों की शिक्षा दी जाती है यह कह कर कि उसे दूसरे घर जाना है। बुजुर्गों का कहना है कि चाहे लड़कियां कितनी ही पढ़ लिख जाएं पर अपनी ससुराल जा कर उन्हें बनानी तो रोटियां हीं हैं।

सदियों से एक प्रथा चली आ रही है कि चाहे जो भी हो, घर के कामों की जिम्मेदारी तो महिलाओं की ही बनती है। उन्हें यह एहसास दिलाया जाता है कि खाना पकाना, कपड़े धोना, बरतन मांजना और घर के सभी सदस्यों का खयाल रखना महिला की ही जिम्मेदारी है। एक ही परिवार में लड़कों को पूरी आजादी दे दी जाती है और लड़कियों को रीतिरिवाजों और संस्कारों की बेड़ियों में बांध दिया जाता है।

घर की जिम्मेदारियों के साथ उन्हें धार्मिक कर्मकांडों का भी हिस्सा बनना पड़ता है। आए दिन व्रतउपवास भी करने पड़ते हैं, चाहे उन की मरजी हो या न हो या चाहे वे शारीरिक रूप से कमजोर ही क्यों न हों, उन्हें अपने बेटे, पति की लंबी आयु और अच्छे स्वास्थ्य के लिए यह सब करना ही पड़ता है। लेकिन समाज ने पुरुषों के लिए ऐसा कोई नियम नहीं बनाया है।

कोई क्यों नहीं समझता शालिनी वर्किंग वूमन है। रोज सुबह 4 बजे उठ जाती है। घर का सारा काम करती है, नाश्ता बना कर, बच्चों को उठा कर उन्हें तैयार कर स्कूल भेजती है। फिर पति और सास के लिए लंच तैयार कर 9 बजे तक अपने औफिस के लिए निकल जाती है। रोज उसे औफिस जानेआने में करीब 3 घंटे लग जाते हैं। शाम को थक कर जब घर पहुंचती है तो कोई उसे एक गिलास पानी के लिए भी नहीं पूछता, उलटे वही सब के लिए चाय बनाती है और फिर रात के खाने की तैयारी में लग जाती है। उसे बिस्तर पर जातेजाते रात के 11 बज जाते हैं। यही रोज का नियम है।

संडे को शालिनी घर के पैंडिंग काम निबटाती है। लेकिन घर के किसी सदस्य से उसे कोई मदद नहीं मिलती है। सब को यही लगता है कि शालिनी के 10 हाथ हैं और वह सबकुछ चुटकियों में कर लेगी। मगर वह भी एक इंसान है, वह 'थकती है, उस के भी शरीर में दर्द होता है, उसे भी आराम की जरूरत है, यह कोई नहीं समझता। शालिनी के पति का अपना बिजनैस है। उन की हार्डवेयर का दुकान है। वे 11 बजे आराम से अपनी दुकान पर जाते हैं। लेकिन शालिनी के साथ ऐसा नहीं है, उसे तो रोज टाइम से औफिस जाना होता है। वह कहती है कि मन करता है नौकरी छोड़ दूं। लेकिन बढ़ती महंगाई और फिर बच्चों की महंगी शिक्षा को देखते हुए नौकरी भी नहीं छोड़ सकती है। यह कहानी केवल शालिनी की नहीं है बल्कि दुनिया की लगभग सभी औरतों की है। खुद के लिए समय नहीं माधुरी टीचर है और पति, आलोक भी इसी फील्ड में हैं। दोनों एक ही समय स्कूल के लिए निकलते हैं और घर भी सेम टाइम पहुंचते हैं। लेकिन घर आ कर जहां आलोक टीवी खोल कर बैठ जाते हैं, फोन पर दोस्तों से हाहा, हीही करते हैं, रील्स देखते हैं, वहीं माधुरी किचन में खाना पकाने घुस जाती है, बच्चों का होमवर्क कराती है और फिर बिखरे हुए घर को व्यवस्थित करती है क्योंकि सुबह उस के पास इतना टाइम नहीं होता कि यह सब कर सके।

निर्भरता का बाजार

आज सोचने-समझने का स्वरूप किस कदर बदल रहा है, इसका अंदाजा इस उदाहरण से लगाया जा सकता है कि एक परिचित व्यक्ति ने कार की साफ-सफाई करते हुए अपनी कोई तस्वीर सोशल मीडिया पर साझा कर दी, तो उसे यह कहा गया कि 'क्या महोदय, आप खुद अपनी कार की साफ-सफाई करते हैं ? इसके लिए तो आजकल बड़े आराम से आदमी मिल जाते हैं, जो मात्र हजार रुपए में पूरे महीने कार की साफ-सफाई कर देते हैं।' किसी भी संवेदनशील व्यक्ति को नई पीढ़ी की इस सोच पर आश्चर्य से ज्यादा खेद होगा। नई पीढ़ी में यह कैसी सोच विकसित हो रही है ? माना कि बाजार इस युग में हर काम के लिए आदमी सुलभ है, पर घर के छोटे- मोटे काम जो हम स्वयं बड़ी आसानी से कर सकते हैं, उसके लिए हम किसी बाहरी व्यक्ति पर निर्भर क्यों हों ?

कुछ साल पहले तक ज्यादातर लोग घर के कई काम स्वयं कर लेते थे। जैसे पानी की टंकी में घुसकर उसे साफ करना । दीपावली के स्वच्छता अभियान में छत से पंखे उतार लेना, उसकी पंखुड़ियों को अलग कर उनकी सफाई कर फिर जोड़कर पंखें को वापस लगा देना। महीने दो महीने में पानी का भरा हौद खाली करके उसकी सफाई कर देना। उन दिनों बिजली के लिए घरों में एमसीबी के स्थान पर 'फ्यूज' होते थे जो बिजली के जरा से उतार-चढ़ाव के साथ ही जल जाते थे, जिसे 'फ्यूज' उड़ना कहा जाता था । 'फ्यूज' को अपनी जगह से निकाल कर उसमें तांबे का तार बांधना थोड़ा खतरनाक काम था, पर उस काम को भी बड़ी कुशलता से कर लिया जाता था । दीपावली के समय रोशनी के लिए लगाई गई झालर खराब होने पर ' टेस्टर' की सहायता से खराब बल्ब को खोजकर उसके स्थान पर नया बल्ब जोड़ना उस समय बच्चों के लिए एक खेल होता था । पानी की मोटर, कूलर और पंखों के सामान और कूलर के पम्प आसानी से बदल दिए जाते थे । पानी के पाइपों और नलों की छोटी-मोटी टूट-फूट के लिए हमें कभी अन्य व्यक्ति की आवश्यकता नहीं पड़ी। पेड़-पौधों की कटाई- छंटाई और देखभाल आमतौर पर हम खुद कर लेते थे। उस दौर में साइकिल या स्कूटर के पंचर तक भी लोग खुद ही जोड़ लेते थे। स्कूटर मोटर साइकिल के स्टार्ट न होने पर प्लग को खोलकर बड़ी आसानी से साफ कर लिया जाता था। अगर घर का निर्माण कार्य चल रहा होता था तो परिवार के सदस्य बिना किसी शर्म संकोच के ईंट-पत्थर ढो लेते । बच्चों के लिए तो यह काम कम, एक प्रकार का खेल ही होता था ।

धीरे-धीरे समय बदला । बाजार ने आदमी की सोच को गहरे तक प्रभावित किया और उसकी धारणाओं को भी बदला । अब लोग अपने ही घर के छोटे-मोटे कामों को करना अपने स्टेट्स सिंबल या हैसियत के प्रतीक के विपरीत समझने लगे। जिन लोगों ने ऐसे काम करना नहीं छोड़ा, उन्हें कंजूस समझा जाने लगा और उसके पड़ोसियों एवं परिचितों द्वारा उसे हेय दृष्टि से देखा जाने लगा। नई पीढ़ी की स्थिति तो यह हो गई है कि छोटे-मोटे औजारों को हाथ में पकड़ना ही उन्हें अपमानजनक लगने लगा है। आज बाजारवाद ने हमें बहुत अधिक पराश्रित कर दिया है। दिखावे की हैसियत के मारे हम लोग दूसरों पर इतने निर्भर होते जा रहे हैं कि बाजार हमारी इस आरामपरस्ती को भुनाने में लगा हुआ है। आज हमारा मोबाइल दुनिया भर के एप से भरे हुए हैं। छोटे से छोटे काम के लिए भी हमारी युवा पीढ़ी मोबाइल एप का प्रयोग करती है और आदमी हाजिर हो जाता है। दूसरों पर यह निर्भरता इतनी खतरनाक सिद्ध हुई है कि जो काम हम स्वयं कर सकते हैं, उसके लिए भी हमें दूसरों का मुंह देखना पड़ता है । आज की पीढ़ी के कितने ही युवाओं को घरेलू गैस सिलेंडर तक नहीं बदलना आता ।

साधन-सुविधाओं का उपभोग एक हद तक ठीक है, पर हमें दूसरों पर इतना भी निर्भर नहीं होना चाहिए कि हमारे दिमाग और शरीर दोनों को ही जंग लग जाए। अगर हम अपने घर के छोटे- मोटे काम खुद करने लग जाएं तो इससे हमारी दिमागी और शारीरिक दोनों तरह की कसरतें हो जाएंगी, साथ ही कड़ी मेहनत से कमाया गया हमारा धन भी व्यर्थ खर्च होने से बच जगा। सभी माता-पिता को इस बारे में सोचना चाहिए कि वे अपने बच्चों को अपना काम स्वयं करने की शिक्षा दें। खुद बच्चे का काम न करें, बल्कि उन्हें इस ढंग से प्रेरित करें कि बच्चा स्वयं ही उस काम को करने लगे। बच्चों का पालन- पोषण इस प्रकार से हो कि वे कभी भी दूसरों पर निर्भर न रहें। बच्चों के सामने कभी भी अपने पैसे, पद और रुतबे का प्रदर्शन न करें। 'स्टेट्स सिंबल' जैसे शब्दों से या तो अपने बच्चे को दूर रखने का प्रयास करें या उन्हें समझाएं कि अपने घर का काम करना किसी भी प्रकार से रुतबे या हैसियत के विरुद्ध नहीं है । आज जब देश भयंकर बेरोजगारी की मार से जूझ रहा है, युवाओं को आत्मनिर्भर बनने का मंत्र दिया जा रहा है, देश के विभिन्न राज्य व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने लगे हैं, तरह- तरह के उद्यम कार्यक्रमों के तहत युवा पीढ़ी में विभिन्न प्रकार के कौशल विकसित करने के प्रयास किए जा रहे हैं, ऐसे में ये छोटे-मोटे घरेलू कार्य हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण और प्रभावकारी सिद्ध हो सकते हैं। आज की युवा पीढ़ी को यह बताना बेहद आवश्यक है कि छोटे-मोटे कामों के लिए दूसरों का मुंह ताकना अच्छी बात नहीं। जो काम हम स्वयं कर सकते हैं, उसके लिए बाजार के भरोसे रह कर अपनी क्षमता को यों ही व्यर्थ या कुंद नहीं करना चाहिए ।

-विजय गर्ग

पुस्तकों से परे, कक्षाओं से परे

शिक्षा पाठ्यपुस्तकों और कक्षाओं की सीमाओं को पार करती है। समग्र सीखने के लिए हमारी प्रतिबद्धता हमें अपने पाठ्यक्रम में वास्तविक जीवन के अनुभवों को एकीकृत करने के अभिनव तरीकों का पता लगाने के लिए प्रेरित करती है। इस लेख में, हम शिक्षा के लिए स्कूल के अनूठे दृष्टिकोण के माध्यम से एक यात्रा शुरू करते हैं, जहां शिक्षक रोजमर्रा के अनुभवों के माध्यम से अवधारणाओं को सिखाने के लिए कक्षाओं से बाहर निकलते हैं, अध्ययन को जीवन का एक सहज हिस्सा बनाते हैं और सीखने के कार्यान्वयन पर जोर देते हैं। ज्ञान का कार्यान्वयन व्यावहारिक सीखने की आधारशिला है। स्कूल में, हम मानते हैं कि वास्तविक समझ वास्तविक जीवन की स्थितियों में अवधारणाओं को लागू करने से आती है। सिद्धांत और अभ्यास के बीच की खाई को पाटने से, हम छात्रों को सक्रिय शिक्षार्थी बनने के लिए सशक्त बनाते हैं जो आत्मविश्वास और प्रवीणता के साथ दुनिया की जटिलताओं को नेविगेट कर सकते हैं।

शिक्षक के इस अनुभवों के माध्यम से अवधारणाओं को पढ़ाने के लिए पारंपरिक कक्षा सेटिंग्स से परे जाते हैं। चाहे वह गणित के लिए खेल न्यायालयों को माप रहा हो या विज्ञान के लिए प्रकृति में प्रयोग कर रहा हो, सीखना एक कमरे की चार दीवारों से परे है, छात्रों की समझ और विषय वस्तु की सराहना को समृद्ध करता है। खेल के माध्यम से गणितः गणित की कक्षाओं में, छात्र खेल से वास्तविक जीवन के अनुभवों को एकीकृत करके माप और रूपांतरण के बारे में सीखते हैं। वे खेल अदालतों के आयामों को मापते हैं और लंबी छलांग जैसी गतिविधियों के लिए दूरियों की गणना करते हैं, जिससे अमूर्त अवधारणाएं मूर्त और प्रासंगिक होती हैं। प्रकृति में विज्ञानः विज्ञान के पाठ जीवन में आते हैं क्योंकि छात्र अपने आसपास की प्राकृतिक दुनिया का पता लगाते हैं। स्कूल के बगीचे में प्रयोग करने से लेकर क्षेत्र यात्राओं पर स्थानीय पारिस्थितिक तंत्र का अवलोकन करने तक, छात्र पहले अनुभव प्राप्त करते हैं और वैज्ञानिक सिद्धांतों की गहरी समझ विकसित करते हैं। अंत में, अनुभवात्मक अधिगम समग्र विकास को पोषण देने और स्कूल में हर बच्चे के साथ गूंजने वाली शैक्षिक शिक्षाओं को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अनुभवात्मक सीखने के सिद्धांतों को गले लगाकर और छात्रों को प्रामाणिक, इमर्सिव अनुभव प्रदान करके, शिक्षक छात्रों को आजीवन सीखने वाले, महत्वपूर्ण विचारक और जिम्मेदार वैश्विक नागरिक बनने के लिए सशक्त बना सकते हैं जो कभी बदलती दुनिया में पनपने के लिए तैयार हैं। आइए हम परिवर्तनकारी शिक्षा के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में अनुभवात्मक शिक्षा को गले लगाते हैं जो हर शिक्षार्थी की पूरी क्षमता को अनलॉक करता है। विरासत के माध्यम से इतिहासः इतिहास के पाठ छात्रों को समय के माध्यम से इमर्सिव यात्रा पर ले जाते हैं। ऐतिहासिक स्थलों, संग्रहालयों और सांस्कृतिक स्थलों का दौरा जीवन के लिए पाठ्यपुस्तक आख्यानों लाने के लिए, अतीत के लिए कनेक्शन की भावना को बढ़ावा देने और मानव इतिहास की जटिलताओं के लिए एक गहरी प्रशंसा ।

साहित्य में भाषा कलाः भाषा कला कक्षाएं कहानी कहने की शक्ति का पता लगाने के लिए पढ़ने और लिखने से परे जाती हैं। नाटक कार्यशालाओं, पुस्तक क्लबों और लेखक यात्राओं के माध्यम से, छात्र गतिशील तरीकों से साहित्य के साथ संलग्न होते हैं, अपने संचार कौशल का सम्मान करते हैं और पढ़ने के लिए एक प्यार को बढ़ावा देते हैं।

अनुभवात्मक सीखने को गले लगाकर, स्कूल आजीवन शिक्षार्थियों की खेती करता है जो जिज्ञासु, रचनात्मक और अनुकूलनीय हैं। हमारा दृष्टिकोण छात्रों को कक्षा से परे और उनके जीवन के हर पहलू में सीखने के लिए एक जुनून का पता लगाने, सवाल करने और खोजने, उनमें उकसाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

स्कूल में, हम मानते हैं कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने के बारे में नहीं है; यह एक बेहतर दुनिया बनाने के लिए इसे सार्थक तरीकों से लागू करने के बारे में है। अनुभवात्मक सीखने के माध्यम से, हम छात्रों को महत्वपूर्ण विचारक, समस्या सॉल्वर और चेंजमेकर्स बनने के लिए सशक्त बनाते हैं जो एक विकसित समाज में पनप सकते हैं। खोज और परिवर्तन की इस यात्रा में शामिल हों, जहां सीखना कोई सीमा नहीं जानता है और हर अनुभव विकास का अवसर है।

आशंका के बादल

ज्ब कभी व्यक्ति के जीवन में परिस्थितियां नियंत्रण से बाहर हो जाती हैं, दिल और दिमाग में आशंकाओं के बादल गहरा जाते हैं। ऐसे में कमजोर मनोबल के चलते आदमी मानसिक दृष्टि से टूट जाता है और इसका प्रभाव शारीरिक तौर पर भी स्पष्ट दिखाई देने लगता है । अनिष्ट की आशंका आमतौर पर सकारण होती है, लेकिन अत्यधिक विचारशील होने के चलते कई बार अकारण भी हो जाती है। कभी-कभी तो अपने ही विचारों में खोकर इंसान अनजानी आशंका से भी घिर जाता है, जिसे वह स्पष्ट तौर पर परिभाषित नहीं कर सकता। बस, ऐसे ही और यों ही उसे ऐसा प्रतीत होने लगता है कि उसके साथ कुछ गलत घटने वाला है।

अनेक अवसरों पर इंसान की एकतरफा सोच उसे तमाम तरह की आशंकाओं के घेरे में ले लेती है। कभी-कभी तो विचार - चक्र का सिलसिला ऐसा चलता है कि बिना किसी ठोस कारण के भी आदमी भारी अनिष्ट की आशंका से घिर जाता है । ऐसे मामले आसपास देखे जा सकते हैं जिनमें किसी गंभीर बीमारी के साधारण लक्षण जैसा कुछ पाए जाने पर भी खयालों ही खयालों में अपने जीवन की पारी समाप्त होने की आशंका से त्रस्त हो जाता है। चाहे यह उसकी भ्रांति हो कि उसे गंभीर रोग है । वैसे अनेक अवसरों पर देखा गया है कि गंभीर बीमारी के प्रारंभिक लक्षण पाए जाने पर भी आदमी परिजनों से यह बात छिपा कर चलता है और भीतर ही भीतर घुलने लगता है ।

ऐसे में जब कभी आदमी आशंकाओं के बादल से घिर जाता है, सीधे तौर पर उसकी कार्यक्षमता प्रभावित हुए बिना नहीं रहती। कई बार ऐसा भी होता है कि जरूरत से ज्यादा जानकारी किसी के लिए अपने जीवन में भारी पड़ सकती है। इसलिए यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि नकारात्मक तथ्यों के प्रति काफी हद तक तटस्थ दृष्टिकोण रखना चाहिए। दरअसल, हर एक समस्या के निवारण के लिए सामाजिक परिवेश में अलग-अलग प्रकार के प्रकल्प हुआ करते हैं। सबका अपना-अपना कार्य क्षेत्र होता है और अपनी अपेक्षित भूमिका के निर्वहन के लिए ये पूरी तरह से पारंगत हुआ करते हैं। सीधी-सी बात है कि हमें अपने मर्ज का डाक्टर बनने का प्रयास नहीं करना चाहिए ।

समस्या चाहे जो हो, लगभग हर समस्या का समाधान है। इसलिए जो समस्या का निराकरण करने में पूर्ण रूप से सक्षम है, उसका आसरा लेना ही वह एकमात्र रास्ता है, जिसके माध्यम से हम अपनी समस्या का निवारण कर सकते हैं। अनावश्यक रूप से केवल चिंता के भंवरजाल में उलझे रहने का कोई अर्थ नहीं है। वैसे भी हर एक आदमी के कार्य क्षेत्र की अपनी अलग- अलग सीमाएं होती है। हर एक आदमी हर एक काम कर सके, यह कतई संभव नहीं । हम सामाजिक परिवेश में अपनी योग्यता के अनुरूप काम करते हुए अन्य की योग्यता के अनुरूप किए गए काम से लाभान्वित होते हैं। ठीक इसी तर्ज पर हमें यह मानकर चलना चाहिए कि केवल हम ही सर्वशक्तिमान नहीं है।

अगर यह मान भी लिया जाए कि होनी होकर रहती है, तो अनहोनी को टालने का प्रयास अवश्य होना चाहिए। यह सोचकर चुप नहीं रहा जा सकता कि जब-जब जो-जो होना है, तब-तब वह तो होना है। दरअसल, आदमी ने हर किसी क्षेत्र में अपने विजेता भाव को दर्शाया है। चांद सितारों की दुनिया भी अब उसकी पहुंच में दिखाई देने लगी है । कल तक जो कुछ असंभव था, आज लगभग संभव होता जा रहा है। यह सब परिवर्तन लीक से हटकर किए गए प्रयासों का ही सुखद परिणाम है। ऐसी स्थिति में विपरीत परिस्थितियों में भी हमें अपना मनोबल कायम रखने की जरूरत है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी सशक्त मनोबल असंभव को संभव सिद्ध कर सकता है। इसलिए परिस्थितियों से जूझने का माद्दा हर चुनौती से पार जा सकता है। हर तरह की गलती और अपराध को लेकर प्रायश्चित की प्रक्रिया अंतरात्मा के बोझ को उतार फेंकती है। गलती और अपराध की स्वीकृति हर हाल में सकारात्मक परिणाम की कारक सिद्ध होती है। हालांकि कुछ गलती और अपराधों को लेकर कानून और व्यवस्था में प्रावधान है, लेकिन हमारी अंतरात्मा पर बोझ बनी कोई गलती या अपराध ऐसा है जो कानून और व्यवस्था की जद में नहीं है, उसके साक्षी तो केवल हम ही हैं । इसलिए भी मन बोझिल हो जाता है। इसलिए अंतरात्मा के इस बोझ को स्वीकृति के माध्यम से उतारा जा सकता है । यकीनन ऐसा करने पर चित्त को इतना सुकून मिलता है, जिसे शब्दों के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा सकता ।

एक प्रकार से गलती या अपराध की स्वीकृति के चलते हृदय में निर्मल परिणाम बनने लगते हैं और इंसान देखते ही देखते अजातशत्रु के रूप में अपनी छवि निर्मित कर लेता है। मनोविकार सर्वथा लुप्त हो जाते हैं और दिल और दिमाग में एक विशेष प्रकार की रचनात्मकता का बोध होने लगता है। इस स्थिति में आने पर ऐसे भाव जागृत होते हैं, जैसे मैं संसार का और संसार मेरा । कोई पराया नहीं, सब अपने ही अपने हैं । ऐसा भी लगने लगता है कि सचमुच यह जमाना जीने के लायक है। निश्चित रूप से जब आशंका के बादल छंट जाते हैं, अंतर्मन की कली कली खिल जाती है, तब फिर हम जमाने को दोष नहीं देते और अपने मूल स्वभाव के अनुरूप उत्तम विचारों से लबरेज हो जाते हैं। यों कहें कि जिंदगी का आनंद लेने लगते हैं ।

पाकिस्तान की शर्मनाक हार और भारत की गौरवपूर्ण जीत

संदीप सृजन

पहलगाम हमले के बाद भारत की ओर से की गई सैन्य कार्रवाही ने एक बार फिर भारत-पाकिस्तान की तरफ पूरे विश्व का ध्यान आकर्षित किया है। पहलगाम आतंकी हमले ने भारत को आक्रामक जवाबी कार्रवाई के लिए प्रेरित किया। इस हमले में पाकिस्तान समर्थित आतंकवादी संगठनों का हाथ पाया गया, जिसके बाद भारत ने 'ऑपरेशन सिंदूर' शुरू किया गया। इस टकराव में भारत की निर्णायक जीत और पाकिस्तान की शर्मनाक हार ने न केवल क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को प्रभावित किया, बल्कि एक नाजुक युद्धविराम के माध्यम से दोनों देशों को शांति की ओर ले जाने का प्रयास भी किया।

इस ऑपरेशन के तहत भारत ने पाकिस्तान के सैन्य ठिकानों, विशेष रूप से स्कर्दू, जकोबाबाद, सरगोधा और भुलारी जैसे हवाई अड्डों पर लक्षित हमले किए। भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के हवाई रक्षा तंत्र और रडार सिस्टम को नष्ट कर दिया, जिससे पाकिस्तान की सैन्य क्षमता को गंभीर नुकसान पहुंचा। इसके साथ ही, भारत ने अपनी S-400 वायु रक्षा प्रणाली का उपयोग करके पाकिस्तान के ड्रोन और मिसाइल हमलों को नाकाम कर दिया। इस कार्रवाई ने न केवल भारत की सैन्य ताकत को प्रदर्शित किया, बल्कि पाकिस्तान की रणनीतिक कमजोरियों को भी उजागर किया।

'ऑपरेशन सिंदूर' भारत की सैन्य रणनीति का एक उत्कृष्ट उदाहरण था। इस ऑपरेशन में भारतीय सेना ने न केवल पाकिस्तान के सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया, बल्कि उनकी वायु रक्षा प्रणाली को भी ध्वस्त कर दिया। भारत ने लाहौर, सियालकोट, फैसलाबाद और मुल्तान जैसे शहरों में पाकिस्तान के रक्षा तंत्र को नष्ट किया, जिससे उनकी जवाबी कार्रवाई की क्षमता लगभग समाप्त हो गई। रहीम यार खान में हवाई अड्डे का रनवे भी भारतीय मिसाइल हमलों से क्षतिग्रस्त हो गया, जिसने पाकिस्तान की वायुसेना को और कमजोर कर दिया।

भारत ने अपनी ब्रह्मोस मिसाइलों और अन्य उन्नत हथियारों का उपयोग करके सटीक हमले किए। इन हमलों ने पाकिस्तान के सैन्य ढांचे को गंभीर नुकसान पहुंचाया, जबकि नागरिक क्षेत्रों को न्यूनतम क्षति हुई। पाकिस्तान के ड्रोन और मिसाइल हमलों को नाकाम करने में भारत की S-400 प्रणाली ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने भारत की रक्षा क्षमता को मजबूत किया और पाकिस्तान के हमलों को विफल कर दिया। भारतीय खुफिया एजेंसियों ने पाकिस्तान के सैन्य ठिकानों और आतंकी लॉन्च पैड्स की सटीक जानकारी प्रदान की, जिसके आधार पर भारत ने अपने हमलों को अंजाम दिया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने न केवल सैन्य कार्रवाई की, बल्कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय को अपने पक्ष में करने के लिए प्रभावी कूटनीति का सहारा लिया। अमेरिकी राष्ट्रपति और विदेश मंत्री की मध्यस्थता में युद्धविराम की प्रक्रिया शुरू हुई, जिसमें भारत की स्थिति मजबूत रही। भारतीय सेना की बहादुरी और रणनीतिक कौशल ने न केवल पाकिस्तान को घुटने टेकने पर मजबूर किया, बल्कि भारत की क्षेत्रीय शक्ति के रूप में स्थिति को और मजबूत किया।

पाकिस्तान की इस हार ने उसकी सैन्य और रणनीतिक कमजोरियों को पूरी दुनिया के सामने ला दिया। पाकिस्तान के हवाई रक्षा तंत्र और रडार सिस्टम भारतीय हमलों के सामने पूरी तरह विफल रहे। कई सैन्य विश्लेषकों का मानना है कि पाकिस्तान ने अपनी सैन्य क्षमता को बढ़ाने के बजाय आतंकवादी संगठनों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया, जिसका खामियाजा उसे इस युद्ध में भुगतना पड़ा। पाकिस्तान पहले से ही गंभीर आर्थिक संकट से जूझ रहा था। इस युद्ध ने उसकी अर्थव्यवस्था को और कमजोर कर दिया। कुछ रिपोर्ट्स के अनुसार, पाकिस्तान ने भोजन और पानी जैसी बुनियादी जरूरतों के लिए भी अंतरराष्ट्रीय समुदाय से सहायता मांगी।

पाकिस्तान ने इस संघर्ष के दौरान कई भ्रामक वीडियो और सूचनाएं फैलाईं, जिनका उद्देश्य भारतीय जनता को गुमराह करना था। हालांकि, ये प्रयास असफल रहे और उल्टे पाकिस्तान की विश्वसनीयता को नुकसान पहुंचा। पाकिस्तान के सांसदों और पत्रकारों के बीच इस हार को लेकर गहरा असंतोष देखा गया। कुछ X पोस्ट्स में दावा किया गया कि पाकिस्तानी नेता और पत्रकार लाइव

टीवी पर रो रहे थे, जो उनकी हताशा को दर्शाता है।पाकिस्तान की सेना ने बाद में स्वीकार किया कि उनके एक विमान को मामूली नुकसान हुआ था, और उन्होंने भारतीय पायलट को हिरासत में लेने की खबरों का खंडन किया। यह उनकी हार को स्वीकार करने का एक अप्रत्यक्ष तरीका था। इन कारकों ने मिलकर भारत को इस संघर्ष में एक स्पष्ट विजेता बनाया।

10 मई 2025 को शाम 5 बजे से लागू हुए युद्धविराम ने इस तनावपूर्ण स्थिति को कुछ हद तक शांत किया। हालांकि, पाकिस्तान ने रात में गोलीबारी करके इस युद्धविराम का उल्लंघन किया, जिसके जवाब में भारत ने सख्त चेतावनी दी कि ऐसी हरकतों को युद्ध की कार्रवाई माना जाएगा। इसके बाद, अमेरिकी मध्यस्थता के तहत दोनों देशों के डीजीएमओ (डायरेक्टर जनरल ऑफ मिलिट्री ऑपरेशंस) के बीच बातचीत हुई, जिसके परिणामस्वरूप 11 मई की सुबह सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थिति सामान्य होने लगी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस युद्धविराम की सराहना करते हुए कहा कि दोनों देशों के नेताओं ने बुद्धिमानी दिखाई। हालांकि, भारत ने स्पष्ट किया कि भविष्य में किसी भी आतंकी हमले को युद्ध की कार्रवाई माना जाएगा, जिससे पाकिस्तान पर दबाव बना रहा। जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा, सांबा, पुंछ, जम्मू, अखनूर और राजौरी जैसे क्षेत्रों में युद्धविराम के बाद जनजीवन धीरे-धीरे सामान्य होने लगा है।

इस संघर्ष का प्रभाव केवल सैन्य और राजनीतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा। भारत में इस जीत ने राष्ट्रीय गौरव की भावना को बढ़ाया। बॉलीवुड और साउथ के सितारों जैसे जेनेलिया डी सूजा, अक्किनेनी नागार्जुन और समय रैना ने सोशल मीडिया पर भारतीय सेना की बहादुरी की सराहना की। X पर कई यूजर्स ने इस जीत को भारत की ताकत और पाकिस्तान की शर्मनाक हार के रूप में प्रचारित किया। दूसरी ओर, पाकिस्तान में इस हार ने आंतरिक असंतोष को बढ़ाया। सोशल मीडिया पर कुछ यूजर्स ने पाकिस्तानी नेतृत्व और सेना की आलोचना की, जबकि कुछ ने भारत की सैन्य शक्ति को स्वीकार किया। इस हार ने पाकिस्तान की जनता में निराशा और हताशा की भावना को जन्म दिया, जो उनकी आर्थिक और सामाजिक समस्याओं को और गहरा सकती है।

इस संघर्ष और युद्धविराम के दीर्घकालिक प्रभाव कई स्तरों पर देखे जा सकते हैं जैसे भारत की इस जीत ने दक्षिण एशिया में उसकी स्थिति को और मजबूत किया है। पाकिस्तान की सैन्य कमजोरी उजागर होने से उसकी क्षेत्रीय प्रभावशीलता कम हुई है। भारत ने स्पष्ट किया है कि वह आतंकवाद के खिलाफ शून्य सहिष्णुता की नीति अपनाएगा। यह नीति भविष्य में पाकिस्तान को और दबाव में डाल सकती है। इस हार ने पाकिस्तान के आंतरिक संकट को और गहरा दिया है। यदि पाकिस्तान अपनी सैन्य और आर्थिक नीतियों में सुधार नहीं करता, तो उसकी स्थिरता और खतरे में पड़ सकती है।.इस युद्धविराम में अमेरिका की मध्यस्थता ने वैश्विक शक्तियों की भूमिका को रेखांकित किया। भविष्य में, भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव को कम करने में अंतरराष्ट्रीय समुदाय की भूमिका और महत्वपूर्ण हो सकती है।

पहलगाम हमले के बाद हुआ भारत-पाकिस्तान सैन्य टकराव एक ऐतिहासिक घटना है, जिसने भारत की सैन्य और रणनीतिक श्रेष्ठता को प्रदर्शित किया। 'ऑपरेशन सिंदूर' के माध्यम से भारत ने न केवल पाकिस्तान के सैन्य ठिकानों को नष्ट किया, बल्कि उसकी रणनीतिक कमजोरियों को भी उजागर किया। पाकिस्तान की शर्मनाक हार ने उसके आंतरिक और बाहरी संकटों को और गहरा दिया, जबकि भारत की जीत ने राष्ट्रीय गौरव और आत्मविश्वास को बढ़ाया।

वो अनकही दुनिया: जो आँखों से नहीं, दिल से दिखती है

[भीतर का सूरज: जो रात में भी चमकता है]

हर मनुष्य के भीतर एक ऐसी दुनिया बसती है जिसे न तो पूरी तरह देखा जा सकता है, न ही पूरी तरह समझा जा सकता है। यह दुनिया भावनाओं, अनुभवों, सपनों और स्मृतियों से बनी होती है। जब आँखें बंद होती हैं, तब यह संसार खुलता है। यह भीतर का सागर है, जहाँ लहरें कभी शांत होती हैं, तो कभी तूफ़ानी। इस गहरे सागर में हर व्यक्ति अपने ढंग से तैरता है, कभी खुद को खोता है, तो कभी खुद को खोज लेता है।

जीवन की दौड़ में हम अक्सर बाहर की दुनिया पर ध्यान देते हैं — पद, प्रतिष्ठा, उपलब्धियाँ। परंतु भीतर की यात्रा कहीं अधिक रहस्यमयी और रोमांचक होती है। यहाँ न तो नकली मुस्कानें होती हैं, न बनावटी रिश्ते। यहाँ केवल सच्चाई का वास होता है — निखरी हुई, बेपर्दा, और तेजस्वी। जब कोई व्यक्ति अपनी अंतरात्मा से जुड़ता है, तो उसे स्वयं में एक ऐसी शक्ति मिलती है जो संसार की किसी भी उपलब्धि से बड़ी होती है।

भीतर के इस ब्रह्मांड में समय का कोई अर्थ नहीं रहता। बचपन की मीठी स्मृतियाँ, जवानी के सपने, अधूरी इच्छाएँ, अनकहे शब्द — सब एक साथ जी उठते हैं। कभी एक अधूरी कविता बनकर, कभी किसी भूले हुए गीत की धुन बनकर, और कभी किसी गहरी साँस की तरह। यह वह जगह है जहाँ व्यक्ति अपने सबसे असली रूप में होता है — बिना मुखौटे, बिना डर के।

जब हम अपने भीतर झाँकते हैं, तो हमें अपने ही प्रश्नों के उत्तर मिलने लगते हैं। क्यों मैं परेशान हूँ? क्यों मैं खुश नहीं हूँ? क्या मुझे सच में यही चाहिए जो मैं खोज रहा हूँ? ये प्रश्न बाहरी दुनिया में खो जाते हैं, लेकिन भीतर की गहराइयों में ये उत्तरों की तरह उभरते हैं। सच्ची खुशी बाहरी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि स्वयं के साथ सच्चे होने में छुपी है।

जीवन में ऐसे भी क्षण आते हैं जब सब कुछ थम जाता है। शोर अचानक मौन में बदल जाता है, भागती दुनिया अचानक सुस्त पड़ जाती है, और तभी भीतर की आवाज़ सुनाई देती है। यह आवाज़ हल्की होती है, पर इसकी गूँज बहुत गहरी होती है। यह बताती है कि जीवन कोई दौड़ नहीं है, न ही कोई प्रतियोगिता; यह एक अनुभूति है, एक सुंदर यात्रा है, जिसमें हर क्षण को पूरी तरह जीना ही सबसे बड़ी सफलता है।

बाहर की दुनिया हमें आकृष्ट करती है — रंगीनियों से, चमक से, मान-सम्मान से। लेकिन यह सब क्षणिक है। जब अकेले होते हैं, जब रात की गहराइयाँ हमें घेर लेती हैं, तब बाहरी उपलब्धियाँ कोई सुकून नहीं देतीं। तब भीतर की दुनिया ही हमें थामती है। एक पुरानी याद, किसी प्रिय का स्पर्श, कोई अधूरी दुआ — ये सब जीवन को अर्थ देते हैं।

सच्चा बल वही है जो भीतर से आता है। यह वह शक्ति है जो गिरने पर उठाती है, हारने पर मुस्कराना सिखाती है, टूटने पर फिर से जुड़ने का साहस देती है। यह शक्ति न तो किताबों में मिलती है, न भाषणों में। यह केवल आत्मानुभव से आती है — उस गहरे सन्नाटे से जहाँ हम खुद से साक्षात्कार करते हैं।

भीतर की दुनिया नर्म भी है और कठोर भी। यह हमें हमारे सबसे खूबसूरत सपनों से भी मिलाती है और हमारे सबसे गहरे डर से भी। लेकिन जब हम अपनी कमजोरियों को स्वीकार कर लेते हैं, अपने डर को गले लगा लेते हैं, तभी हम पूरे हो जाते हैं। पूर्णता बाहरी सिद्धियों में नहीं, बल्कि अपने अधूरेपन को स्वीकार करने में है।

यह यात्रा अकेली होती है, लेकिन यह अकेलापन भी अनमोल होता है। यहाँ कोई दिखावा नहीं होता, कोई नकली संवाद नहीं। यहाँ केवल स्वयं से मिलन होता है — एक पवित्र, मौन मिलन। जैसे नदी समुंदर से मिलने के लिए अपना आकार त्याग देती है, वैसे ही मनुष्य भी स्वयं से मिलने के लिए अपना झूठा अहं छोड़ देता है। और जब यह मिलन होता है, तो एक नई रोशनी भीतर फूटती है — एक ऐसी रोशनी जो बाहर के किसी सूर्य से कम नहीं।

इस भीतर की यात्रा का कोई अंत नहीं होता। यह सतत प्रवाह है — सीखने, महसूस करने, गिरने, उठने, बदलने और फिर खुद को नए रूप में पहचानने का। यही जीवन का सबसे बड़ा सौंदर्य है: कि हम हमेशा निर्माणशील हैं, हमेशा विकासशील हैं। हमारी आत्मा एक कलाकार है, जो हर दिन अपने भीतर एक नई दुनिया रचती है — कभी रंगों से, कभी आंसुओं से, कभी मुस्कानों से।

जब हम भीतर की इस यात्रा को अपनाते हैं, तब हमें समझ आता है कि सच्चा सुख बाहरी सफलताओं में नहीं, बल्कि खुद से प्रेम करने में है। जब मनुष्य स्वयं को अपना सबसे प्रिय मित्र बना लेता है, तब उसे किसी बाहरी सहारे की आवश्यकता नहीं रह जाती। तब उसका मौन भी संगीत बन जाता है, उसकी तन्हाई भी उत्सव बन जाती है, और उसका जीवन भी एक अनुपम कविता बन जाता है।

छात्रों में जागरूकता के माध्यम से मलेरिया और डेंगू का उन्मूलन

अवनीश लोंगोवाल

इस वर्ष विश्व मलेरिया दिवस का विषय है ₹मलेरिया हमारे साथ समाप्त होता है: पुनर्निवेश, पुनर्कल्पना, पुनर्ऊर्जा₹। मलेरिया और डेंगू दोनों ही मानव जीवन के लिए घातक हैं। डेंगू एक वायरल रोग है जो एडीज़ एजिप्टी नामक मच्छर के काटने से फैलता है। मादा एनोफिलीज मच्छर मलेरिया फैलाती है और मादा एडीज एजिप्टी मच्छर डेंगू और चिकनगुनिया फैलाती है, जिसे डेंगू बुखार कहा जाता है। इस मच्छर का असर काटने के 5 से 6 दिन के अंदर दिखना शुरू हो जाता है। यह दो रूपों में होता है। सामान्य लक्षणों में बुखार, सिरदर्द, आंखों में दर्द आदि शामिल हैं। जोड़ों में तेज दर्द के कारण जिसे क्लासिकल डेंगू बुखार कहा जाता है, उसे ब्रेकबोन बुखार भी कहा जाता है। डेंगू का दूसरा चरण रक्तस्रावी बुखार है, जिसके लक्षण बहुत गंभीर होते हैं तथा प्लेटलेट काउंट बहुत कम हो जाता है। यदि प्लेटलेट काउंट 20,000 से नीचे चला जाए तो रक्त आधान की आवश्यकता होती है। उच्च रक्तचाप के अलावा आमतौर पर नाक, गले या मूत्र से रक्तस्राव होता है। मतली, पेट दर्द और चक्कर आना भी इसके लक्षण हैं।

डेंगू आमतौर पर बरसात के दिनों में फैलता है, इसे केवल उचित निवारक उपाय और जागरूकता से ही रोका जा सकता है। डेंगू से बचाव के लिए मच्छरों के प्रजनन को रोकना होगा, पानी के जमाव को रोकना होगा। डेंगू मच्छर स्थिर पानी के कारण पनपते हैं। प्लास्टिक के कंटेनर, कार के टायर, फूलों के गमले आदि स्थानों पर जहां पानी जमा होता है, वहां पानी जमा न होने दें और उस स्थान को साफ रखें। इसलिए शुक्रवार को ड्राई डे के रूप में मनाया जाना चाहिए। सप्ताह में कम से कम दो बार अच्छी तरह सफाई करें और मच्छरों के लार्वा को पनपने से रोकें। सामान्यतः साफ व पूरी आस्तीन के कपड़े पहनने चाहिए, कीटनाशक, मच्छरदानी आदि का प्रयोग करना चाहिए। विद्यार्थियों को भोजन करते समय ऐसी जगह नहीं बैठना चाहिए जहां पानी जमा हो, बल्कि साफ जगह पर बैठकर भोजन करना चाहिए। अपने आस-पास का वातावरण साफ रखना चाहिए, इससे डेंगू को रोका जा सकता है।

डेंगू को नज़रअंदाज़ न करें, यह मच्छरों के काटने से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में तेज़ी से फैलता है। डेंगू से बचने के लिए निर्देशों का पालन करें और पानी जमा न होने दें। स्वास्थ्य विभाग के निर्देशों का पालन किया जाना चाहिए। यदि फिर भी तेज बुखार हो तो नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र पर जाकर डेंगू की जांच करानी चाहिए और चिकित्सकीय सलाह लेनी चाहिए। यह उपचार पंजाब सरकार के स्वास्थ्य विभाग के जिला अस्पतालों द्वारा निःशुल्क प्रदान किया जाता है। अच्छी खबर यह है कि डेंगू वैक्सीन ₹क्यूडेंगा₹ ने इस रोग की घटनाओं को कम करने में 50 प्रतिशत अधिक प्रभावशीलता दिखाई है। इसका प्रभाव लम्बे समय तक रहता है। यह जानकारी 19 अध्ययनों की समीक्षा से सामने आई। क्यूडेंगा वैक्सीन, जिसे TAK-003 के नाम से भी जाना जाता है, जापान की टेकेडा फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड द्वारा विकसित की गई है। समीक्षा के अनुसार, 90 प्रतिशत से अधिक वयस्कों और बच्चों में वैक्सीन की दो खुराक लेने के बाद डेंगू से सुरक्षा के लक्षण दिखाई दिए। इटली के फेरारा विश्वविद्यालय से संबद्ध जनरल वैक्सीन में प्रकाशित अध्ययन की प्रमुख लेखिका मारिया एलेना फ्लैंको ने कहा कि टीके की दो खुराकें निस्संदेह डेंगू की रोकथाम में प्रभावी हो सकती हैं। विद्यार्थियों को स्वयं भी जागरूक होना चाहिए तथा अपने आस-पास के लोगों को भी जागरूक करना चाहिए। खाना खाते समय ऐसी जगह पर न बैठें जहां पानी जमा हो। अपना भोजन साफ जगह पर बैठकर खाएं। जागरूक रहें, जागरूकता फैलाएं, स्वच्छ रहें, स्वस्थ रहें।

नक़ली ज़हरीली शराब से मृतक के परिवारों के लिए मुआवजे का ऐलान,आरोपियों की गिरफ्तारी, जमानत, निचली से ऊपरी कोर्ट तक की प्रक्रिया-पीड़ति परिवारों की जिंदगी समाप्त ?-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर दुनियाँ के हर देश के शौकीनों के लिए शराब को एक अमृत रस के रूप में टॉनिक की उपमा दी जाती है। खुशी के अनेकों मौकों पर शराब दावत को देखा जा सकता है। मैं ग्राउंड रिपोर्टिंग में देखा हूं कि, नाम मात्र की परमिशन ज़रूर होती है परंतु नियमों विनिमयमों कानूनों की धज्जियां जवाबदेही रखने वालों के नाक के नीचे उड़ती है, बंद लिफाफा होटों पर टेप और आखों पर पट्टी का काम करता है, यह तो हाई प्रोफाइल समिति का उदाहरण है,ठीक वैसे हीबॉटम स्तर पर दारू भट्ठियों, मोहल्ला चौकों,में नंबर दो की तथाकथित नकली एथोनल का उपयोग कर बनाई गई शराब का सेवन मध्यम वर्ग, गरीब वर्ग, मजदूर वर्ग करते हैं, यहां भी इन्हीं जवाबदेहों के होटों पर लिफाफे की टेप और आँखों पर पट्टी लगा दी जाती है, जिनके परिणाम स्वरुप पंजाब में बटाला तरनतारन संगरूर जैसे कांड तथा भारत के अनेकों राज्यों में अनेकों केस होते रहते हैं जिनकी चर्चा हम नीचे पैराग्राफ में करेंगे। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहेहैं,क्योंकि दिनांक 13 मई 2025 को पंजाब अमृतसर के पास मजीठा गांव में जहरीली शराब पीने से देर रात्रि 12 तक मेरी जानकारी के अनुसार 21 लोगों की मृत्यु की खबर मीडिया मेंआ चुकी थी। सीएम साहब ने मृत्को के परिवार वालों को 10 लाख रुपयों के मुआवजे की घोषणा की है,व घटना से जुड़े 10 आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है। भारतीय न्याय संहिता की धारा 103 (हत्या) व 105 (गैरइरादतन हत्या) के साथ आबकारी अधिनियम,अनुसूचित जाति जनजाति (अत्याचार निवारण)अधिनियम संबंधी धाराएं लगाई गई है। परंतु मैं एक अधिवक्ता होने के नाते देखता रहा हूं कि नकली जहरीली शराब से जुड़े परिवार वालों के लिए मुआवज़े की घोषणा, आरोपियों की गिरफ्तारी, जमानत, निचली अदालत से ऊपरी कोर्ट तक प्रक्रिया चलती है, तबतक पीड़ित परिवार वालों की जिंदगी शायद समाप्त हो जाती होगी? चूँकि भारत में जहरीली शराब रोकने ऑपरेशन सिंदूर-2 की सख़्त ज़रूरत है, तथा सभी राज्यों में एक कॉमन बात कि,नकली शराब से जुड़े परिवार वालों के लिए मुआवजे की घोषणा, आरोपियों की गिरफ्तारी,जमानत बॉटम से ऊपरी कोर्ट तक वर्षों तक कानूनी प्रक्रिया चलती है तब तक पीड़ित परिवार वालों की जिंदगी शायद समाप्त हो जाती है? इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, भारत में जहरीली शराब का नरसंहार आख़रि कब तक? मृतकों के घर क़े चूल्हे उजड़ बन रहे मातमगाह, कब जागेगी सरकार? बता दें इस आर्टिकल में दी गई जानकारी की सटीकता का प्रमाण नहीं है, क्योंकि यह इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से उठाई गई है।

साथियों बात अगर हम दिनांक 13 मई 2025 को जहरीली शराब सेवन कांड की करें तो, अमृतसर:पंजाब के अमृतसर जिले के मजीठा ब्लॉक में जहरीली शराब पीने से 21 लोगों की मौत हो गई है, जिससे इलाके में मातम छा गया है, यह घटना ब्लॉक के भंगाली कलां, थारीवाल संघा और मरारी कलां जैसे गांवों में हुई। जिला प्रशासन ने मृतकों की संख्या बढ़ने की आशंका जताई है।पंजाब सरकार के प्रवक्ता ने बताया कि इस मामले में दो एफआईआर दर्ज की गई हैं और 10 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है, उन चार आरोपियों को भी गिरफ्तार किया गया है जो सप्लायरों से शराब खरीदकर गांवों में बेच रहे थे, इस घटना को लेकर पंजाब पुलिस के महानिदेशक (डीजीपी) ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर बताया कि,दुर्भाग्यपूर्ण घटना में नकली शराब के कारण हुई दुखद मौतों के बाद पंजाब पुलिस ने तत्काल कार्रवाई की, जिनमें मुख्य सरगना और कई स्थानीय विक्रेता शामिल हैं, ऑनलाइन खरीदे गए मेथनॉल का इस्तेमाल नकली शराब बनाने में किया गया था। पूरे मामले की जांच चल रहीहै, ताकि कार्य प्रणाली का पता लगाया जाए और सभी दोषियों को न्याय के कठघरे में लाया जाए।

साथियों बात अगर हम भारत में जहरीली शराब क़े कहर: की करें तो,2014 से 2022 तक किस साल कितनी मौतें हुई, (1) 2014: अवैध शराब के सेवन से 1,699 मौतें हुईं। (2) 2015: 1,624 घटनाओं में 1,522 लोगों की जान गई. महाराष्ट्र (278), पुडुचेरी (149) और मध्य प्रदेश (246) में सबसे ज़्यादा मौतें हुईं। (3) 2016: 1,073 घटनाओं में 1,054 मौतें दर्ज की गईं. मध्य प्रदेश (184) और हरियाणा (169) में सबसे ज़्यादा लोगों ने अपनी जान गंवाई। (4) 2017: 1,497 घटनाओं में 1,510 मौतें हुईं. कर्नाटक (256), मध्य प्रदेश (216) और आंध्र प्रदेश (183) में हालात गंभीर रहे। (5) 2018: 1,346 घटनाओं में 1,365 लोगों की जान गई,मध्य प्रदेश (410) और कर्नाटक (218) में सबसे ज़्यादा मामले सामने आए। (6) 2019: 1,141 घटनाओं में 1,296 मौतें हुईं. मध्य प्रदेश (410) और कर्नाटक (268) में स्थिति चिंताजनक बनी रही। (7) 2020: 931 घटनाओं में 947 लोगों की जान गई. मध्य प्रदेश (214) और झारखंड (139) में सबसे ज़्यादा मौतें हुईं। (8) 2021: 708 घटनाओं में 782 मौतें हुईं। उत्तर प्रदेश (137) और पंजाब (127) में सबसे ज़्यादा मामले दर्ज किए गए।

(9) 2022: 507 घटनाओं में 617 मौतें हुईं। बिहार (134) और कर्नाटक (98) में अवैध शराब का कहर जारी रहा।

साथियों बात अगर हम मजीठा कांड में लगाई गई भारतीय न्याय संहिता की धाराओं को समझने की करें तो, भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) में धारा 103 हत्या के लिए सजा का प्रावधान करती है, जबकि धारा 105 गैर- इरादतन हत्या के लिए सजा का प्रावधान करती है। धारा 103 के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति हत्या करता है, तो उसे मृत्युदंड या आजीवन कारावास और जुर्माना लगाया जा सकता है। धारा 105 के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति हत्या की श्रेणी में न आने वाला गैर-इरादतन हत्या करता है, तो उसे आजीवन कारावास या 5 से 10 वर्ष का कारावास और जुर्माना लगाया जा सकता है। धारा 103: हत्या के लिए सजा (1) यदि कोई व्यक्ति हत्या करता है, तो उसे मृत्युदंड या आजीवन कारावास की सजा दी जाएगी और वह जुर्माने से भी दंडनीय होगा। (2) यदि पांच या अधिक व्यक्तियों का समूह नस्ल, जाति या समुदाय, लिंग, जन्म स्थान, भाषा, व्यक्तिगत विश्वास या किसी अन्य समान आधार पर हत्या करता है, तो ऐसे समूह के प्रत्येक सदस्यको मृत्युदंड या आजीवनकारावास की सजा दी जाएगी और जुर्माना भी देना होगा।

साथियों बात अगर हम अवैध शराब बनने को समझने की करें तो, कैसे बनती है अवैध शराब ?कच्ची शराब बनाने के लिए मुख्य रूप से गुड़, पानी और यूरिया का इस्तेमाल किया जाता है, इसमें कई खतरनाक केमिकल भी मिलाए जाते हैं, गुड़ को सड़ाने के लिए ऑक्सीटोसिन का इस्तेमाल किया जाता है, अधिक नशा लाने के लिए नौसादर और यूरिया भी मिलाया जाता है, ये सभी चीजें मानव शरीर के लिए अत्यंत हानिकारक हैं।यूरिया, ऑक्सी टोसिन, गुड़ और पानी को मिलाकर जब फर्मेंटेशन किया जाता है तो इथाइल अल्कोहल की जगह मिथाइल अल्कोहल बन जाता है,मिथाइल अल्कोहल बनने का एक कारण शराब बनाने की प्रक्रिया के दौरान तापमान का सही ध्यान न रखना भी है, इसी मिथाइल अल्कोहल के कारण शराब जहरीली हो जाती है,इसे पीने से होती है मौत-विशेषज्ञों के अनुसार, मिथाइल अल्कोहल शरीर में जाकर फार्मेल्डिहाइड (फॉर्मिक एसिड) बनाता है, यह एक ऐसा जहर है जो आंखों की रोशनी छीन सकता है या मौत का कारण बन सकता है, यह शराब पीने वाले के दिमाग के लिए भी बेहद हानिकारक है, यदि शराब में मिथाइल अल्कोहल की मात्रा 90 प्रतिशत से अधिक हो जाती है, तो वह जहरीली बन जाती है, इतनी मात्रा में मिथाइल अल्कोहल का सेवन नर्वस ब्रेकडाउन का कारण बनता है। 13 मई को बटाला में हुए शराब कांड में पुलिस की जांच में खुलासा हुआ कि नकली शराब बनाने के लिए इस्तेमाल 'मेथेनॉल' थोक में ऑनलाइन खरीदा गया था। मेथनॉल' एक हल्का, रंगहीन कार्बनिक रासायनिक यौगिक है, जिसे अकसर अवैध रूप से मादक पेय पदार्थों में 'इथेनॉल' के सस्ते विकल्प के रूप में ही मिलाया जाता है।

साथियों बात अगर हम शराब पर राष्ट्रव्यापी प्रतिबंध के बारे में समझने की करें तो,शराब पर राष्ट्रव्यापी प्रतिबंध के बारे में क्या? क्या यह सैद्धांतिक रूप से संभव है? यदि ऐसा है, तो केंद्र सरकार शराबबंदी कैसे लागू कर सकती है? खैर, यह देखते हुए कि संविधान संघ को शराब को विनियमित करने की अनुमति नहीं देता है, (केंद्र) सरकार को दो-चरणीय प्रक्रिया का पालन करने की आवश्यकता होगी। तत्काल कदम संविधान में संशोधन करना और शराब को राज्य सूची से संघ सूची में स्थानांतरित करना होगा। इस तरह के संशोधन के लिए प्रत्येक सदन में एक विधेयक पारित करने कीआवश्यकता होगी, जिसे सदन के अधिकांश सदस्यों द्वारा अनुमोदित किया जाएगा, जिसमें कम से कम 2/3 सदस्य उपस्थित और मतदान करेंगे। यह देखते हुए कि यह संशोधन राज्य की शक्तियों को प्रभावित करता है, इस विधेयक को कम से कम 15 राज्यों (कुल 29 राज्यों में से आधे से कम नहीं) की राज्य विधानसभाओं द्वारा भी अनुमोदित किया जाना चाहिए। क्या यह आज संभव है? इसका जवाब साफ है हां। भाजपा के पास लोकसभा में बहुमत है और 15 राज्यों में उसकी सरकार है। राज्यसभा में अभी उसके पास जरूरी संख्या नहीं है, लेकिन शराबबंदी जैसे मुद्दे पर समर्थकों का एक समूह तैयार हो सकता है। इसलिए अगर वह ऐसा करने का फैसला करती है, तो मेरा मानना है कि वह ऐसा कर सकती है। (यह अलग बात है कि उत्तर प्रदेश सहित भाजपा शासित किसी भी राज्य ने शराब की उपलब्धता कम करने की कोशिश नहीं की है, जिसके मुख्यमंत्री हैं)। शराब को संघ सूची में स्थानांतरित करने के बाद, सरकार रातोंरात शराब पर प्रतिबंध लगाने के लिए कार्यकारी आदेश जारी कर सकती है।हालांकि, शराब को संघ सूची में स्थानांतरित करने की प्रक्रिया आसान नहीं होगी; वास्तव में, यह असंभव है कि वे कभी भी इसे पूरा कर पाएंगे। क्योंकि राज्य निश्चित रूप से शराब पर कर लगाने के अपने अधिकार को छोड़ने के लिए अनिच्छुक होंगे, जैसे पेट्रोल डीजल पर जीएसटी लाने के,यह देखते हुए कि यह उनके स्वयं के कर राजस्व का 25-30 पेर्सेंट हिस्सा है, और चुनावों और अन्य पार्टी गतिविधियों के लिए नकद निधि का एक आसान स्रोत है। शराब के विनियमन को संघ सूची में स्थानांतरित करने के संशोधन को निश्चित रूप से राज्यों की ओर से कानूनी चुनौती मिलेगी, जो बहुत जल्दी सुप्रीम कोर्ट तक पहुँच जाएगी, क्योंकि यह एक तरह का संवैधानिक विवाद बन जाएगा। यदि यह मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुँचता है, तो बेंच मामले और इस संशोधन का मूल्यांकन कैसे कर सकती है?

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे किभारत में ज़हरीली शराब से नरसंहार कब तक?- मृतकों के घर के चूल्हे उजड़ बन रहे मातमगाह-कब जागेगी सरकारें?भारत में ज़हरीली शराब रोकने ऑपरेशन सिंदूर- 2 की सख़्त ज़रूरत ! नक़ली ज़हरीली शराब से मृतक के परिवारों के लिए मुआवजे का ऐलान,आरोपियों की गिरफ्तारी, जमानत निचली से ऊपरी कोर्ट तक की प्रक्रिया-पीड़ति परिवारों की जिंदगी समाप्त?

अंतरराष्ट्रीय स्तरपर क्यों ना हर देश में शासन, प्रशासन व दलालों के गठजोड़ से किया गया, भ्रष्टाचार व आतंकवाद में जमानत न होकर ट्रायल के बाद एक्विट्टल या सजा हो ? - एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

सरकारी आतंकवाद बनाम सरकारी सुशासनवाद
शासन,प्रशासन,दलालों का मेल- सरकारी आतंकवाद का खेल

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर दुनियाँ का हर देश आज आतंकवाद और भ्रष्टाचार के दंश से पीड़ित है परंतु अनेक देशों में तो आतंकवादी भ्रष्टाचार किसी एकल इकाई तक अब सीमित नहीं रहा वह टॉपअप से बॉटमअप तक या यूं कहें कि शासन वाया प्रशासन वाया दलालों (जासूसों) के माध्यम से भ्रष्टाचार आतंकवाद का प्रचलन अति बढ़ गया है,जो अक्सर हम 40-50 पेर्सेंट लिफाफ़ा के रूप में सुनते आ रहे हैं, यानें 1 रूपया निकलताहै तो 15 पैसा लाभार्थी के हाथ में आताहै,हालांकि आज भले ही कम स्तरपर हो परंतु है जरूर! इस तरह से आतंकवाद एक अकेला व्यक्ति नहीं कर सकता बल्कि उसके पीछे पूरी चैनल जुड़ी होती है। मेरा ऐसा मानना है कि संयुक्त राष्ट्र के सभी 200 से अधिक देशों ने मिलकर एक ऐसी ट्रिटी या व्यवस्था बनानी होगी, जिसमें ऐसे देशों को आतंकवादी देश घोषित करें जो सरकारी आतंकवाद की परिभाषा में आता हो व पारदर्शी व स्वच्छ तथा अच्छे प्रशासन वाले देश की सरकारों को सरकारी सुशासन वाला देश से नवाजा जाए जिनकी चर्चा हम नीचे पैराग्राफ में करेंगे। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि भारत-पाक तनाव में ऑपरेशन सिंदूर के तहत हमने देखा कि किस तरह मारे गए आतंकवादियों को पड़ोसी मुल्क ने अपने राष्ट्रीय ध्वज में लपेटकर सलामी देकर उनको ख़ाक ए सुपुर्द, किया इस वाक्यात को पूरे विश्व ने देखा इसे कुछ लोगों ने सरकारी आतंकवाद की संज्ञादी।वैसे ही भ्रष्टाचार भी शासन प्रशासन दलालों के गठजोड़ में भी होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि 40 50 पेर्सेंट लिफाफ़े की शुभ सुबसुबाहट इलेक्शन के दिनों में होते रहती है,इसलिए मेरा मानना है कि इन दोनों परिस्थितियों याने सरकारी आतंकवाद व भ्रष्टाचार को सभी देशों ने राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय कानूनों में एक धारा जोड़कर सरकारी आतंकवाद का संज्ञान लिया जाए।चूँकि शासन प्रशासन दलालों का मेल, सरकारी आतंकवाद का खेल। इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, सरकारी आतंकवाद बनाम सरकारीसुशासनवाद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर क्यों ना हरदेश में शासन प्रशासन और दलालों के गठजोड़ से किया गया भ्रष्टाचार व आतंकवाद में जमानत न होकर ट्रायल के बाद सीधा एक्विट्टल या सजा हो ?

साथियों बात अगर हम सरकारी आतंकवाद को समझने की करें तो, सरकारी आतंकवाद और सरकारी सुशासन वाद में काफी अंतर है। सरकारी आतंकवाद में सरकार द्वारा अपने ही नागरिकों या अन्य देशों के नागरिकों पर हिंसक और गैरकानूनी तरीके से कार्रवाई करना शामिल होता है, जबकि सरकारी सुशासनवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें सरकार पारदर्शिता, जवाबदेही और नागरिकों की भागीदारी के साथ काम करती है। सरकारी आतंकवादः-परिभाषाःसरकार द्वारा अपने ही नागरिकों या अन्य देशों के नागरिकों पर जान बूझकर हिंसा का उपयोग करना, उन्हें डराना या धमकाना, और राजनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए गैरकानूनी तरीके से कार्रवाई करना। उदाहरणः- राजनीतिक विरोधियों का दमन, मानवाधिकारों का उल्लंघन, युद्ध अपराध,और गैरकानूनी हत्याएं। लक्ष्यः--शक्ति का प्रदर्शन, विरोध को दबाना,औरअपने राजनीतिक एजेंडे को लागू करना।एक प्रकार की हिंसात्मक गतिविधि होती है। अगर कोई व्यक्ति या कोई संगठन अपने आर्थिक राजनीतिक व विचारात्मक लक्ष्यों की प्रतिपूर्ति के लिए देश या देश के नागरिकों की सुरक्षा को निशाना बनाए, तो उसेआतंकवाद कहते हैं। गैर-राज्यकारकों द्वारा किये गए राजनीतिक एवं वैचारिक हिंसा भी आतंकवाद की ही श्रेणी में आती है। अब इसके तहत गैर-कानूनी हिंसा को भी आतंकवाद में

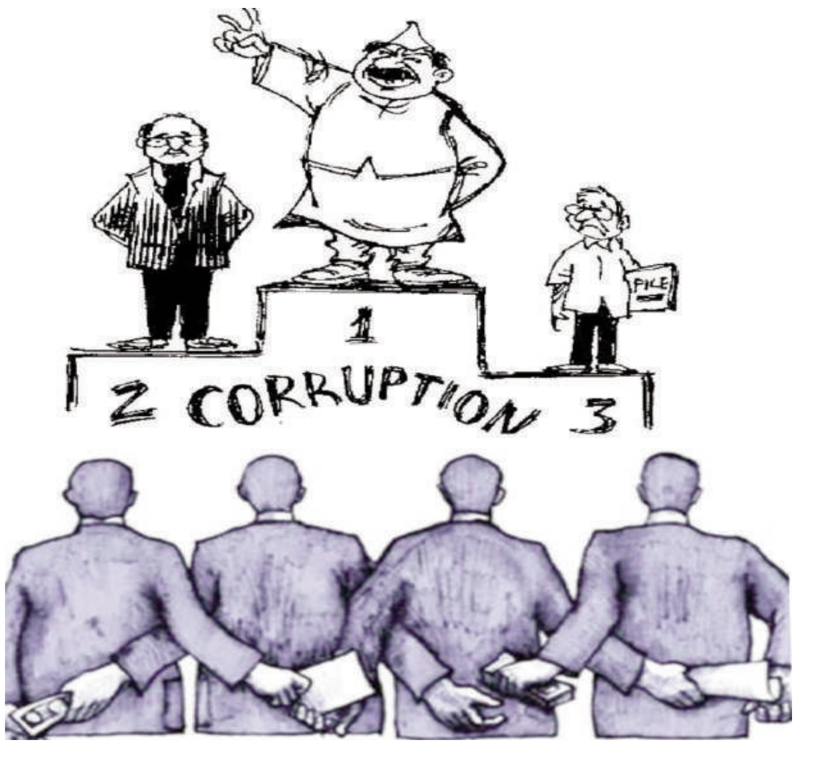

शामिल कर लिया गया है। अगर इसी प्रकार की गतिविधि आपराधिक संगठन चलाने या उसे बढ़ावा देने के लिए की जाती है तो सामान्यतः उसे भी आतंकवाद माना जाता है। यद्यपि, इन सभी कार्यों को आतंकवाद का नाम दिया जा सकता है। कुछ मतों के अनुसार आतंकवाद पन्थ से नहीं जुडा है।यह सही है दुनिया के अधिकतर से देश आतंकवाद से ग्रस्त है।

साथियों बात अगर हम सरकारी सुशासनवाद को समझने की करें तो,सुशासन क्या है ?शासन का तात्पर्य शासन की सभी प्रक्रियाओं, संस्थाओं, प्रक्रियाओं और प्रथाओं से है, जिनके माध्यम से आम चिंता के मुद्दों पर निर्णय लिया जाता है और उन्हें विनियमित किया जाता है। सुशासन शासन की प्रक्रिया में एक मानक या मूल्यांकनात्मक विशेषता जोड़ता है। मानवा धिकारों के दृष्टिकोण से यह मुख्य रूप से उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसके द्वारा सार्वजनिक संस्थाएँ सार्वजनिक मामलों का संचालन करती हैं, सार्वजनिक संसाधनों का प्रबंधन करती हैं और मानवाधिकारों की प्राप्ति की गारंटी देती हैं।यद्यपि 'सुशासन' की कोई अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत परिभाषा नहीं है, फिर भी इसमें निम्नलिखित विषय शामिल हो सकते हैंः मानव अधिकारों का पूर्ण सम्मान, कानून का शासन, प्रभावी भागीदारी, बहु-अभिनेता साझेदारी, राजनीतिक बहुलवाद, पारदर्शी और जवाबदेह प्रक्रियाएं और संस्थाएं, एक कुशल और प्रभावी सार्वजनिक क्षेत्र, वैधता, ज्ञान, सूचना और शिक्षा तक पहुंच, लोगों का राजनीतिक सशक्तीकरण, समानता, स्थिरता, तथा दृष्टिकोण और मूल्य जो जिम्मेदारी, एकजुटता और सहिष्णुता को बढ़ावा देते हैं।संक्षेप में, सुशासन का संबंध राजनीतिक और संस्थागत प्रक्रियाओं और परिणामों से है जो विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं। 'अच्छे' शासन की असली परीक्षा यह है कि यह किस हद तक मानवाधिकारों के वादे को पूरा करता हैः नागरिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक अधिकार। मुख्य प्रश्न यह हैः क्या शासन की संस्थाएँ स्वास्थ्य, पर्याप्त आवास, पर्याप्त भोजन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, निष्पक्ष न्याय और व्यक्तिगत सुरक्षा के अधिकार की प्रभावी रूप से गारंटी दे रही हैं ?सुशासन की प्रमुख विशेषताएंः-- मानवाधिकार परिषद ने सुशासन की प्रमुख विशेषताओं की पहचान की हैः (1) पारदर्शिता (2) ज़िम्मेदारी (3) जवाबदेही (4)भाग लेना (5) जवाबदेही (लोगों की जरूरतों के प्रति) सरकारी सुशासन वादः--सरकार द्वारा पारदर्शिता, जवाबदेही, नागरिकों की भागीदारी, और कानूनी प्रक्रियाओं का पालन करते हुए काम करना।उदाहरणः-भ्रष्टाचार पर नियंत्रण, कानून के शासन का पालन, सामाजिक न्याय, और नागरिकों को उनकी समस्याओं के लिए समाधान प्रदान करना।लक्ष्यः--नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार, आर्थिक विकास, औरसामाजिक न्याय की स्थापना।अंतरः--हिंसाः --सरकारी आतंकवाद में हिंसा का उपयोग होता है, जबकि सुशासन वाद में हिंसा का उपयोग नहीं होता है।लक्ष्यः-- सरकारी आतंकवाद में राजनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करना होता है, जबकि सुशासन वाद में नागरिकों के हित को ध्यान में रखना होता है कानूनः-- सरकारी आतंकवाद में कानून का उल्लंघन होता है, जबकि सुशासन वाद में कानून का पालन करना होता है। सरकारी सुशासन वाद का अर्थ है सरकार द्वारा जनता की भलाई और विकास के लिए उचित तरीके से शासन करना। यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसमें सरकार जनता के प्रति जवाबदेह, पारदर्शी और प्रभावी ढंग से कार्य करती है, जिससे देश का विकास और नागरिक जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है।निष्पक्षताः-- सरकार को सभी नागरिकों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए। समानताः--सरकार को सभी नागरिकों को समान अवसर प्रदान करने चाहिए।न्यायः--सरकार को न्यायपूर्ण तरीके से कार्य करना चाहिए।प्रभावशीलताः--सरकार को अपने कार्यों को प्रभावी ढंग से पूरा करना चाहिए।सतत विकासः--सरकार को विकास के साथ-साथ पर्यावरण की सुरक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए।सुशासन के फायदेः--जनता में विश्वासः-- सुशासन जनता के विश्वास को है।आर्थिक विकासः --सुशासन आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है।सामाजिक विकासः--सुशासन सामाजिक विकास को बढ़ावा देता है।बेहतर जीवन स्तरः- सुशासन नागरिक जीवन की गुणवत्ता में सुधार करता है।कानून का शासनः-- सुशासन कानून के शासन को बढ़ावा देता है।भ्रष्टाचार में कमीः-- सुशासन भ्रष्टाचार को कम करने में मदद करता है।सुशासन का महत्वः-- सुशासन देश के विकास और लोगों की भलाई के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। सुशासन के माध्यम से सरकारें अपने नागरिकों को बेहतर जीवन प्रदान कर सकती हैं और एक मजबूत, विकसित और न्यायपूर्ण समाज बना सकती हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विशेष विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि सरकारी आतंकवाद बनाम सरकारी सुशासनवाद शासन, प्रशासन, दलालों का मेल-सरकारी आतंकवाद का खेलअंतरराष्ट्रीय स्तरपर क्यों ना हर देश में शासन,प्रशासन व दलालों के गठजोड़ से किया गया भ्रष्टाचार व आतंकवाद में जमानत न होकर ट्रायल के बाद एक्विट्टल या सजा हो।

सूने अब परिवार।।

हो ममता की नींव पर, घर का पक्का रंग।
मगर दरारें जब पड़ें, बिखरे रिश्तों संग।।

रिश्तों की दीवार पर, लगे समय के रंग।
जोड़े दिल की ईंट तो, जुड़ता सच्चा संग।।

बचपन की अठखेलियां, दादी का घर बार।
अब बंटवारे में बंटा, यादों का उपहार।।

सपनों की गठरी बड़ी, जीवन का है तोल।
जोड़े रिश्तों की डोर, सदा प्रेम अनमोल।।

कच्ची मिट्टी प्यार की, रिश्तों की दीवार।
पड़ी दरारें हो जहां, टूटे दिल की तार।।

आंगन की वो अठखेलियां, बच्चों की किलकार।
भाग-दौड़ में खो गए, रिश्तों के आसार।।

खामोशी की मार से, बिखरे दिल का द्वार।
बिना प्रेम की बोलियाँ, सूने अब परिवार।।

मिलकर हंसते लोग थे, एक छत एक बात।
बंद आज कमरे हुए, खिड़की से उत्पात।।

बड़े-बुजुर्ग छांव थे, साया था विश्वास।
अब दीवारें बोलतीं, चुप्पी का इतिहास।।

दादी की कहानियां, मां का प्यार दुलार।
सौरभ सारे बँट गए, खोया वो संसार।।

(- डॉ. सत्यवान सौरभ)

आईएएस अधिकारी: ड्यूटी या डिजिटल स्टारडम?
"प्रशासन से पॉपुलैरिटी तक: आईएएस अधिकारियों का डिजिटल सफर"
"आईएएस अधिकारी: सोशल मीडिया स्टार या सच्चे सेवक?"

आईएएस अधिकारियों का सोशल मीडिया पर बढ़ता रुझान एक नई चुनौती बनता जा रहा है। वे इंस्टाग्राम, यूट्यूब और ट्विटर पर नीतियों से जुड़ी जानकारियाँ और प्रेरणादायक कहानियाँ साझा कर रहे हैं, जो जागरूकता बढ़ा सकती हैं। लेकिन क्या यह डिजिटल स्टारडम उनकी वास्तविक प्रशासनिक जिम्मेदारियों से समझौता है? व्यक्तिगत छवि बनाने की होड़ में पारदर्शिता और निष्पक्षता प्रभावित हो सकती है। ऐसे में एक संतुलन जरूरी है, जहां अधिकारी डिजिटल दुनिया में सक्रिय रहते हुए भी जनता की सेवा को प्राथमिकता दें।

-डॉ. सत्यवान सौरभ

भारत में सिविल सेवा हमेशा से ही सम्मान और प्रतिष्ठा का प्रतीक रही है। एक आईएएस अधिकारी का दायित्व न केवल नीतियों को लागू करना होता है, बल्कि जनता की समस्याओं को समझकर उन्हें हल करना भी है। लेकिन हाल के वर्षों में एक नया चलन देखने को मिल रहा है - आईएएस अधिकारियों का सोशल मीडिया की ओर बढ़ता आकर्षण। कुछ अधिकारी इंस्टाग्राम, यूट्यूब और ट्विटर जैसे प्लेटफॉर्म पर लगातार सक्रिय रहते हैं, अपने जीवन के पहलुओं को साझा करते हैं, व्लॉग बनाते हैं, और अपने प्रशासनिक अनुभवों के जरिए प्रेरणा देने का प्रयास करते हैं। लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या यह डिजिटल सक्रियता उनके मूल कर्तव्यों से ध्यान भटकाने का कारण बन रही है या फिर यह एक नई तरह की जनसेवा है?

सोशल मीडिया का बढ़ता प्रभाव

सोशल मीडिया का युग आते ही हर क्षेत्र ने अपनी उपस्थिति वहां दर्ज की है, तो भला नौकरशाही कैसे पीछे रह सकती थी। आईएएस अधिकारी भी इस डिजिटल दुनिया का हिस्सा बन चुके हैं। वे अपने अनुभव, सरकारी योजनाएं, और प्रेरणादायक कहानियाँ साझा करते हैं, जिससे आम जनता का प्रशासन पर विश्वास बढ़ता है। उदाहरण के लिए, बिहार की चर्चित आईएएस अधिकारी टीना डाबी हों या फिर कश्मीर के शाह फैसल, इन अधिकारियों ने अपनी ऑनलाइन उपस्थिति से लाखों युवाओं को प्रेरित किया है।

जनजागरूकता का नया माध्यम

सोशल मीडिया पर सक्रिय आईएएस अधिकारी अपने फॉलोअर्स को न केवल सरकारी योजनाओं की जानकारी देते हैं, बल्कि सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता भी फैलाते हैं। वे आपदाओं के समय महत्वपूर्ण सूचनाएं साझा करते हैं और जनता से सीधा संवाद स्थापित करते हैं। यह पारंपरिक नौकरशाही के उस पुराने ढर्रे से बिल्कुल अलग है जहां अधिकारी केवल कागजों पर या सरकारी बैठकों में ही सीमित रहते थे।

लोकप्रियता और चुनौती

लेकिन सवाल यह है कि क्या इस डिजिटल सक्रियता का मतलब है कि ये अधिकारी अपने असली कर्तव्यों से भटक रहे हैं? क्या सोशल मीडिया पर छवि निर्माण का यह खेल उनकी प्रशासनिक जिम्मेदारियों से समझौता है? कई बार यह देखा गया है कि कुछ अधिकारी सोशल मीडिया पर इतना व्यस्त हो जाते हैं कि उनकी मूल जिम्मेदारियां प्रभावित होने लगती हैं। उदाहरण के लिए, किसी जिले के डीएम का समय अधिकतर क्षेत्रीय समस्याओं और विकास कार्यों में जाना चाहिए, न कि इंस्टाग्राम रील्स बनाने में।

अधिकारियों का स्टारडम

कुछ अधिकारी अपने सोशल मीडिया फॉलोअर्स की संख्या बढ़ाने में इतने लिप्त हो जाते हैं कि वे सेलिब्रिटी जैसी पहचान बना लेते हैं। यह न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करता है, बल्कि उनके निर्णयों की पारदर्शिता पर भी सवाल खड़े करता है। क्या यह संभव है कि एक अधिकारी जनता की सेवा और लोकप्रियता की होड़ के बीच संतुलन बना सके?

प्रभाव और पारदर्शिता का सवाल

इसके अलावा, यह भी ध्यान देने वाली बात है कि जब अधिकारी सोशल मीडिया पर अपने व्यक्तिगत विचार साझा करते हैं, तो इससे उनकी निष्पक्षता पर भी सवाल उठ सकते हैं। जनता के प्रति उनकी जवाबदेही और निष्पक्षता का संतुलन बनाए रखना कठिन हो सकता है। एक ओर वे जनता के सामने सीधे संवाद कर रहे हैं, तो दूसरी ओर वे एक छवि बनाने में भी लगे हैं, जो अक्सर वास्तविकता से भिन्न हो सकती है।

निजता और सुरक्षा का मुद्दा

सोशल मीडिया पर अधिक सक्रियता से अधिकारियों की निजता और सुरक्षा भी खतरे में आ सकती है। वे जिस प्रकार से अपने दिनचर्या, लोकेशन और व्यक्तिगत जीवन की जानकारी साझा करते हैं, वह सुरक्षा के लिहाज से खतरनाक हो सकता है। साथ ही, साइबर अपराधों और ट्रोलिंग का खतरा भी बना रहता है।

संवेदनशील मुद्दों पर जिम्मेदारी

इसके अलावा, अधिकारियों को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वे कौन सी जानकारियां साझा कर रहे हैं। कई बार उनका एक बयान या विचार राजनीतिक विवादों को जन्म दे सकता है। इससे न केवल उनकी व्यक्तिगत छवि बल्कि पूरे प्रशासनिक ढांचे की निष्पक्षता पर सवाल खड़े हो सकते हैं।

आम आदमी की अपेक्षाएँ

जब जनता एक अधिकारी को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर देखकर उसकी तारीफ करती है, तो कहीं न कहीं उनकी अपेक्षाएँ भी बढ़ जाती हैं। वे यह मानने लगते हैं कि जो अधिकारी ऑनलाइन इतना सक्रिय है, वह ज़मीनी हकीकत में भी उतना ही समर्पित होगा। लेकिन क्या यह हमेशा सच होता है? क्या डिजिटल स्टारडम वास्तविक प्रशासनिक कार्यों में भी प्रभावी हो सकता है?

आईएएस अधिकारियों का सोशल मीडिया पर सक्रिय होना एक सकारात्मक कदम हो सकता है, बशर्ते वे इसे अपने कर्तव्यों से ऊपर न रखें। डिजिटल दुनिया में उनकी उपस्थिति समाज को प्रेरित कर सकती है, जागरूकता बढ़ा सकती है, और युवाओं के लिए मार्गदर्शक बन सकती है। लेकिन यह भी सच है कि कभी-कभी यह लोकप्रियता का पीछा करने का खेल बन जाता है, जिससे उनके प्रशासनिक कार्य प्रभावित हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, बिहार की टीना डाबी, जिन्होंने अपने सोशल मीडिया पोस्ट्स से लाखों युवाओं को सिविल सेवा में आने की प्रेरणा दी, या फिर शाह फैसल, जिन्होंने सोशल मीडिया पर सक्रिय रहकर कश्मीर के मुद्दों पर खुलकर अपने विचार रखे। लेकिन दूसरी ओर, अधिक डिजिटल सक्रियता से उनकी पारदर्शिता, निष्पक्षता, और सुरक्षा पर भी सवाल खड़े होते हैं। ऐसे में ज़रूरी है कि अधिकारी डिजिटल स्टारडम और प्रशासनिक जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाए रखें, ताकि वे न केवल एक अच्छे नेता, बल्कि एक जिम्मेदार अधिकारी भी साबित हो सकें। आखिरकार, उनकी सबसे बड़ी सेवा जनता की समस्याओं का समाधान है, न कि सिर्फ लाइक्स और फॉलोअर्स बटोरना।

आईएएस अधिकारियों का सोशल मीडिया पर सक्रिय होना एक सकारात्मक कदम हो सकता है, बशर्ते वे इसे अपने कर्तव्यों से ऊपर न रखें। डिजिटल दुनिया में उनकी उपस्थिति समाज को प्रेरित कर सकती है, जागरूकता बढ़ा सकती है, लेकिन इसके लिए एक संतुलन बनाए रखना अनिवार्य है। आखिरकार, एक अधिकारी का सबसे बड़ा धर्म उसकी जनता की सेवा है, न कि केवल डिजिटल स्टारडम।

ओड़शिा मे पहली बार एसईबीसी छात्रों के लिए 11.25% आरक्षण लेकिन कोंग्रस ने 27% आरक्षण का मांग

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वरः राज्य में उच्च शिक्षा में सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग (एसईबीसी) के छात्रों के लिए आरक्षण प्रणाली लागू की गई है। इस आरक्षण नीति के अनुसार, उच्च शिक्षण संस्थानों में एसईबीसी श्रेणी के छात्रों के नामांकन के लिए 11.25% सीटें आरक्षित होंगी। इसे चालू शैक्षणिक वर्ष 2025-26 से राज्य के सरकारी विश्वविद्यालयों, सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त उच्च शिक्षण संस्थानों में लागू किया जाएगा।राज्य मंत्रिमंडल ने उच्च शिक्षा विभाग के इस प्रस्ताव सहित छह विभागों के कुल छह प्रस्तावों को मंजूरी दी है। मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने कैबिनेट बैठक के बाद मीडिया को इस संबंध में जानकारी दी। राज्य मंत्रिमंडल की बैठक बुधवार को लोक सेवा भवन में मुख्यमंत्री श्री मांझी की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में छह प्रस्तावों पर चर्चा की गई और उन्हें मंजूरी दी गई। बैठक के निर्णय के अनुसार, उच्च शिक्षण संस्थानों में एसईबीसी वर्ग के विद्यार्थियों के नामांकन के लिए 11.25% सीटों का आरक्षण लागू किया जाएगा। यह आरक्षण प्रणाली उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत स्नातक, स्नातकोत्तर, शिक्षक शिक्षा और विधि पाठ्यक्रम, स्कूल और जन शिक्षा विभाग के अंतर्गत +2 पाठ्यक्रम, शिक्षक शिक्षा और व्यावसायिक पाठ्यक्रम, ओडिया भाषा, साहित्य और संस्कृति विभाग के अंतर्गत स्नातक (प्रदर्शन कला) पाठ्यक्रम और खेलकूद एवं युवा सेवा विभाग के अंतर्गत बी.पी.एड/एम.पी.एड पाठ्यक्रमों में लागू की जाएगी। इसके कार्यान्वयन के बाद उच्च शिक्षा संस्थानों में अनुसूचित जनजाति (एसटी) के विद्यार्थियों के लिए 22.5% सीटें, अनुसूचित जाति (एससी) के विद्यार्थियों के लिए 16.25% सीटें, एसईबीसी श्रेणी के विद्यार्थियों के लिए 11.25% सीटें, विकलांग विद्यार्थियों के लिए 5% सीटें तथा पूर्व सैनिकों के परिवारों के विद्यार्थियों के लिए 1% सीटें आरक्षित होंगी। यद्यपि राज्य में पहले केवल सरकारी नौकरियों में ही एसईबीसी वर्ग के लिए आरक्षण था, लेकिन उच्च शिक्षा प्रणाली में इसे लागू नहीं किया गया था। परिणामस्वरूप, यह एसईबीसी श्रेणी के कई प्रतिभाशाली छात्रों के लिए एक बाधा बन गई। कैबिनेट के निर्णय के बाद एसईबीसी वर्ग के लिए उच्च शिक्षा में आरक्षण लागू किया जाएगा। इस निर्णय से राज्य में शिक्षा क्षेत्र का समग्र विकास सुनिश्चित हुआ है। परिणामस्वरूप, सामाजिक और आर्थिक रूप से

पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों की शिक्षा में सामाजिक न्याय का लंबा इंतजार खत्म हुआ। सरकार ने कहा है कि इस निर्णय से उसका उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप राज्य में शिक्षण संस्थानों में सकल नामांकन अनुपात को बढ़ाना है।

एकीकृत भर्ती परीक्षा नियम 2022 में संशोधन

राज्य मंत्रिमंडल में लोक प्रशासन एवं लोक शिकायत विभाग द्वारा एक प्रस्ताव पारित किया गया है। शारीरिक माप और शारीरिक क्षमता परीक्षण के लिए एकीकृत भर्ती परीक्षा नियम, 2022 को संशोधित किया गया है। इस संशोधन के अनुसार यातायात उपनिरीक्षक एवं आबकारी उपनिरीक्षक के पदों को संयुक्त भर्ती परीक्षा नियम, 2022 के खण्ड-1 में सम्मिलित किया गया है। इसमें महानिदेशक अग्निशमन सेवाएं, होमगार्ड एवं नागरिक सुरक्षा, गृह (नागरिक सुरक्षा) विभाग के अन्तर्गत नागरिक सुरक्षा प्रशिक्षक/वरिष्ठ भण्डार निरीक्षक के पद को भी अनुच्छेद-1 में सम्मिलित किया गया है। इससे ओडिशा कर्मचारी चयन आयोग उपरोक्त पदों के लिए संयुक्त भर्ती परीक्षा आयोजित करने में सक्षम हो जाएगा।

राज्य सरकार ने उच्च शिक्षा और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा में पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों के लिए 11.25 प्रतिशत सीटें आरक्षित की हैं। यह निर्णय अस्वीकार्य है। इस वर्ग को 27% आरक्षण दिया जाना चाहिए। इसलिए राज्य सरकार को इस फैसले पर पुनर्विचार करना चाहिए, ऐसा पीसीसी अध्यक्ष भक्तचरण दास ने कहा।आज कांग्रेस भवन में एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए श्री दास ने कहा कि राज्य की 40 प्रतिशत आबादी अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग की है, लेकिन तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में मात्र 20 प्रतिशत आरक्षण दिया जा रहा है। उन्हें 40% आरक्षण दिया जाना चाहिए। राज्य सरकार एससी, एसटी और ओबीसी श्रेणियों का मजाक उड़ा रही है, जो राज्य की कुल आबादी का 94% हिस्सा हैं। इसलिए उन्होंने कहा कि अगर राज्य सरकार अपना फैसला नहीं बदलती है तो 22 और 23 तारीख को मुख्यमंत्री आवास का घेराव किया जाएगा। इस अवसर पर ओडिशा प्रभारी अजय लल्लू, पूर्व पीसीसी अध्यक्ष जयदेव जेना और वरिष्ठ नेता श्रीकांत जेना भी उपस्थित थे।

लक्ष्मी बस चालक संघ 5 सूत्रीय मांगों को लेकर करेगा हड़ताल

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : लक्ष्मी बस चालक महासंघ का स्टीयरिंग व्हील बंद हो गया। पांच सूत्री मांगों को लेकर वोगराई बसंतांड़ में चालकों का धरना जारी। वेतन वृद्धि समेत विभिन्न मांगों को लेकर बस स्टैंड के सामने विरोध प्रदर्शन जारी है। आंदोलन के कारण विभिन्न स्थानों पर यात्रियों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। भोगराई ब्लॉक के विभिन्न गांवों के लिए छह लक्ष्मी बसें चलती हैं, लेकिन आज यात्रियों को अपनी यात्रा में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि चालकों ने हड़ताल कर दी है।ड्राइवर्स एसोसिएशन ने चेतावनी दी है कि जब तक सरकार ड्राइवरों की मांगें नहीं मान लेती, तब तक विरोध प्रदर्शन जारी रहेगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023